आज़ादी का अमृत महोत्सव

मध्यप्रदेश शासन

संस्कृति विभाग

प्रशासकीय प्रतिवेदन

2022-23

tutkrh; lxgky; Hkkiky Hke.k

ek- jk"Vifr Jkherh nkinh ee] ek- jkT;iky Jkh exHkkb iVy ,o ek- e[;e=h Jkh f'kojkt flg pkgku

egkRek xk/kh jk"Vh; lEeku vydj.k lekjkg

ek- e[;e=h Jkh f'kojkt flg pkgku

xkeh.k fodkl foKkku lfefr] tk/kij dk lEekfur djr g,

मध्यप्रदेश शासन

संस्कृति विभाग

प्रशासकीय प्रतिवेदन

2022–2023

प्रशासकीय प्रतिवेदन

2022–2023

मध्यप्रदेश शासन
संस्कृति विभाग

मुख्यमंत्री	:	**माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान**
मंत्री		**माननीय सुश्री उषा ठाकुर**
प्रमुख सचिव	:	**श्री शिवशेखर शुक्ला**
अपर सचिव	:	**श्रीमती शिल्पा गुप्ता**
उप सचिव	:	**श्री सुनील दुबे**
अवर सचिव	:	**श्रीमती वंदना पाण्डेय**

विभागाध्यक्ष

1.	**आयुक्त–सह–संचालक** स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल	**श्री शिवशेखर शुक्ला**
2.	**आयुक्त** पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, भोपाल	**श्रीमती शिल्पा गुप्ता**
3.	**संचालक** संस्कृति संचालनालय, भोपाल	**श्री अदिति कुमार त्रिपाठी**

विषय सूची

संस्कृति विभाग, प्रशासित अधिनियम और नियम 01

संस्कृति विभाग की संरचना 05

विभागीय संरचना 07

संस्कृति सम्मान 08

पुरस्कार 10

विभागीय प्रकाशन 13

संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय 14

- बजट प्रावधान एवं व्यय 16
- राज्य योजनाएँ/अन्य योजनाएँ 18
- विभागीय प्रकाशन 22
- महिला नीति 22

संस्कृति संचालनालय 23

- बजट प्रावधान एवं व्यय 24
- राज्य योजनाएँ 26
- सामान्य प्रशासनिक विषय 53
- अभिनव योजनाएँ 53
- महिला नीति 54

स्वराज संस्थान संचालनालय 55

- बजट प्रावधान एवं व्यय 56
- राज्य योजनाएँ 59
- सामान्य प्रशासनिक विषय 65
- अभिनव योजनाएँ 65
- विभागीय प्रकाशन 66
- महिला नीति 66

संस्कृति विभाग

राज्य शासन द्वारा संस्कृति विभाग का गठन वर्ष 1980 में किया गया। राज्य की सांस्कृतिक धरोहर, पुरातात्विक सम्पदा एवं ऐतिहासिक महत्व का यथास्थिति संरक्षण एवं विरूपण, विनाश, अपक्षरण, व्ययन या निर्यात से संरक्षण करना विभाग के मुख्य उद्देश्य हैं। संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश की कला, संस्कृति, साहित्य, राजभाषा, स्वाधीनता संग्राम से संबंधित एवं पुरासम्पदा के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके गुरुत्तर विकास के लिये उद्देश्य अनुरूप सक्रिय है।

संस्कृति विभाग के मुख्य कार्य निम्नानुसार हैं :–

1. कला, साहित्य और संस्कृति को हर संभव उपायों द्वारा प्रोन्नत करना और इस सन्दर्भ में नीतिगत मामले एवं विभिन्न नई योजनाएँ/नीति निर्धारित करना।
2. शासकीय कार्य में एवं शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षण माध्यम के रूप में हिन्दी भाषा का उपयोग।
3. भारतीय भाषाओं का अध्ययन और परिरक्षण।
4. अशासकीय सांस्कृतिक संगठनों को प्रोत्साहित करना और उन्हें वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना।
5. संगीत और ललित कला को प्रोन्नत करना, सुदृढ़ करना और उसका विस्तार तथा इसके विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों को स्थापित करना।
6. ऐतिहासिक दस्तावेज़ों और पाण्डुलिपियों का परिरक्षण और शोध कार्य।
7. प्रदेश में फैली हुई पुरातात्विक संपदाओं और निखात निधियों का सर्वेक्षण, उनकी पहचान करना, दस्तावेजीकरण, संपादन, संग्रहण, परिरक्षण, प्रदर्शन, उत्खनन और संरक्षण।
8. ऐतिहासिक स्मारकों का संरक्षण और विविध संग्रहालयों का विकास।
9. संग्रहालयों में पुरातात्विक महत्व की वस्तुओं का कलात्मक प्रदर्शन/प्रतिकृतियों का निर्माण, प्रदर्शन, पुरातात्विक विषयों पर शोध, सेमिनार और प्रकाशन।
10. राज्य/जिला गजेटियरों का लेखन, प्रकाशन और पुनर्मुद्रण।
11. कला, साहित्य और संस्कृति से संबंधित व्याख्यान, गोष्ठियाँ और विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित करना और संचालित करना।
12. जनजातीय और लोक कला, साहित्य एवं संस्कृति का अनुरक्षण, संरक्षण, प्रोत्साहन, प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं विकास।
13. स्वाधीनता संग्राम तथा स्वाधीनता संघर्ष–स्वराज के विविध आयामों का अध्ययन तथा उसका विचार विमर्श, दस्तावेजीकरण, संग्रहण और प्रदर्शन, दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों का संग्रहण एवं प्रकाशन, बहुविध आयोजन करना, प्रोत्साहन करना, प्रचार–प्रसार करना तथा उच्च स्तरीय गतिविधियों का संचालन करना।
14. भारत एवं संपूर्ण विश्व में हुए स्वाधीनता संघर्ष पर केन्द्रित स्मृति चिन्हों, दस्तावेज़ों, समाचार–पत्रों, पुस्तकों, चित्रों और फिल्मों तथा साहित्य का संग्रहण तैयार करना तथा उनका प्रकाशन, स्वाधीनता संग्राम संबंधी व्याख्यान, परिचर्चाएँ, गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

15. चयनित कलाकारों, साहित्यकारों, विद्वानों, पुरातत्वविदों और संगठनों का सम्मान करना।
16. स्वतंत्रता संग्राम–स्वराज से संबंधित पुरस्कार/अलंकरण प्रदान करना।
17. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जननायकों तथा प्रसिद्ध व्यक्ति और उनके समर्पित योगदान की शताब्दी तथा जयंती कार्यक्रमों का आयोजन करना तथा इसके लिए स्वयंसेवी संगठनों को सहायता अनुदान।
18. नाट्य विद्यालय, रंगकर्म प्रदर्शन तथा अध्ययन, अभिनय, प्रशिक्षण, प्रसार और विकास।
19. फिल्म सिटी की स्थापना, संचालन तथा समन्वय, फिल्म निर्माण, प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, विकास तथा समस्त सम्बन्धित विषय।
20. सांस्कृतिक सम्मेलनों का परिरक्षण और संरक्षण।
21. वित्तीय अभाव वाले कलाकारों तथा साहित्यकारों को पेंशन तथा वित्तीय सहायता।
22. साहित्य, कला तथा स्वाधीनता संग्राम/आंदोलन के क्षेत्र में शोध कार्य के लिए फैलोशिप।
23. सार्वजनिक स्थलों पर विशिष्ट व्यक्तियों की प्रतिमा स्थापित करने हेतु अनुमति प्रदान करना।
24. स्वाधीनता संघर्ष सेनानियों/शहीदों की स्मृति में शहीद स्तम्भों तथा स्मारकों की स्थापना।
25. सेवाओं से संबंधित सभी विषय जिनका विभाग से संबंध है (वित्त विभाग और सामान्य प्रशासन विभाग को आवंटित किए गए विषयों को छोड़कर) उदाहरणार्थ– नियुक्तियाँ, पदस्थापनाएँ, स्थानांतरण, वेतन, छुट्टी, निवृत्ति वेतन, पदोन्नतियाँ, सामान्य भविष्य निधि, प्रतिनियुक्ति, दण्ड तथा अभ्यावेदन।

विभाग द्वारा प्रशासित अधिनियम और नियम :

1. मध्यप्रदेश राजभाषा अधिनियम, 1957 (क्रमांक 5 सन् 1958)
2. मध्यप्रदेश प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्वीय स्थल तथा पुरावशेष अधिनियम, 1964 (क्र. 12 सन् 1964)
3. राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 (क्र. 4 सन् 2009)
4. सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय अधिनियम, 2012 (क्रमांक 1 सन् 2013)
5. मध्यप्रदेश निखात निधि नियम, 1964
6. मध्यप्रदेश प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष नियम, 1975
7. कलाकार कल्याण कोष नियम, 1982
8. मध्यप्रदेश अशासकीय सांस्कृतिक संस्था सहायता अनुदान नियम, 1987
9. अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों और उनके आश्रितों को मासिक वित्तीय सहायता नियम, 2005
10. राष्ट्रीय एवं राज्य सम्मान नियम, 2017

विभाग के अधीन आने वाले संचालनालय तथा कार्यालय :

1. संचालनालय, पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, भोपाल
2. क्षेत्रीय उप–संचालक, पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, जबलपुर, इंदौर और ग्वालियर
3. राजकीय अभिलेखागार क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर और ग्वालियर

4. राज्य स्तरीय संग्रहालय, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, धुबेला (जिला–छतरपुर) उज्जैन तथा रामवन (जिला–सतना)
5. जिला स्तरीय संग्रहालय, शहडोल, रीवा, पन्ना, ओरछा (जिला–टीकमगढ़), विदिशा, राजगढ़, होशंगाबाद, देवास, धार, मंदसौर, मण्डला, भिण्ड, सागर एवं दमोह
6. पुरातत्ववेत्ता कार्यालय रीवा, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद, भोपाल और इंदौर
7. संस्कृति संचालनालय, भोपाल
8. संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर, उज्जैन, इंदौर, मंदसौर, धार, नरसिंहगढ़, मैहर और खण्डवा
9. ललित कला महाविद्यालय, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, धार और खण्डवा
10. मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल
11. रवीन्द्र भवन, भोपाल
12. त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन
13. मैहर बैण्ड, मैहर
14. सांस्कृतिक गांव आदिवर्त मध्यप्रदेश जनजातीय एवं लोककला राज्य संग्रहालय, खजुराहो
15. साकेत रामायण कला संग्रहालय, ओरछा
16. स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल
17. डॉ. शंकरदयाल शर्मा स्वतंत्रता संग्राम राज्य संग्रहालय, भोपाल
18. शहीद भवन, भोपाल

अधिनियम के अधीन गठित मण्डल, निगम और विश्वविद्यालय :

1. राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर
2. साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची

अन्य संस्थाएँ तथा निकाय :

1. भारत भवन न्यास, भोपाल
2. मध्यप्रदेश नेहरू केन्द्र, लालबाग न्यास, इंदौर
3. मध्यप्रदेश हेरीटेज डेव्हलपमेंट ट्रस्ट, भोपाल
4 वीर भारत न्यास, भोपाल
5. आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, भोपाल
6. जिला पुरातत्व संघ (सभी जिला मुख्यालयों में)
7. मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल

(i) उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल
(ii). जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल
(iii). साहित्य अकादमी, भोपाल
(iv) कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन
(v) सिंधी साहित्य अकादमी, भोपाल

(vi). मराठी साहित्य अकादमी, भोपाल

(vii) भोजपुरी साहित्य अकादमी, भोपाल

(viii) पंजाबी साहित्य अकादमी, भोपाल

(ix) मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल

(x) प्रेमचंद सृजनपीठ, उज्जैन

(xi) निराला सृजनपीठ, भोपाल

(xii) मुक्तिबोध सृजनपीठ, सागर

(xiii) बाल साहित्य सृजनपीठ, इंदौर

(xiv) पं. सूर्यनारायण व्यास कला संकुल, उज्जैन

(xv) सांस्कृतिक संकुल, जबलपुर

(xvi) जनजातीय संग्रहालय, भोपाल

(xvii) तानसेन कला संकुल, ग्वालियर

(xviii) राजा मानसिंह तोमर कला केन्द्र, ग्वालियर

8. धर्मपाल शोधपीठ, भोपाल

9. महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, भोपाल/उज्जैन

10. रेडियो आज़ाद हिन्द, भोपाल

11. शौर्य स्मारक, भोपाल

विभाग के अधीन सेवाओं के नाम और विशेष सेवा विषय :

1. मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग अधीनस्थ (राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय) राजपत्रित सेवा भर्ती नियम 1998
2. मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग अधीनस्थ (राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय) तृतीय श्रेणी (लिपिकीय तथा अलिपिकीय) सेवा तथा भर्ती नियम, 1999
3. मध्यप्रदेश राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय भर्ती (चतुर्थ श्रेणी) नियम, 1997
4. मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् सेवा तथा भर्ती नियम, 2005
5. मध्यप्रदेश पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय तृतीय श्रेणी (अराजपत्रित, अलिपिकीय) सेवा भर्ती नियम, 1999
6. मध्यप्रदेश पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय (राजपत्रित) सेवा भर्ती नियम, 2019
7. मध्यप्रदेश पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय संचालनालय (चतुर्थ श्रेणी) भर्ती नियम, 1998
8. मध्यप्रदेश स्वराज संस्थान संचालनालय तृतीय श्रेणी (अराजपत्रित) सेवा भर्ती नियम, 2013.
9. मध्यप्रदेश स्वराज संस्थान संचालनालय चतुर्थ श्रेणी सेवा भर्ती नियम, 2015.

संस्कृति विभाग की संरचना

स.क्र.	पदनाम	स्वीकृत संख्या
1.	मंत्री	01
2.	प्रमुख सचिव	01
3.	उप सचिव	01
4.	अनुभाग अधिकारी	01
5.	सहायक ग्रेड–1	02
6.	सहायक ग्रेड–2	02
7.	सहायक ग्रेड–3	03
8.	दफ्तरी	01
9.	भृत्य	01
	योग	**13**

1. **संसदीय कार्यों से संबंधित की गई कार्यवाही**

वर्ष 01.01.2022 से 31.12.2022 तक संसदीय कार्यों की स्थिति निम्नानुसार है :–

उक्त अवधि में कुल 96 विधानसभा प्रश्न प्राप्त हुये थे, जिनमें से प्रत्यक्ष रूप के 41 एवं अन्य विभाग से संबंधित 55 प्रश्न थे। इस प्रकार कुल 41 विधानसभा प्रश्नों के उत्तर संस्कृति विभाग द्वारा विधानसभा को भेजे गये।

2.	आश्वासन	09
3.	ध्यानाकर्षण	04
4.	अधिनियम	निरंक
5.	अशासकीय संकल्प	निरंक
6.	शून्यकाल सूचना	निरंक

विभागीय संरचना

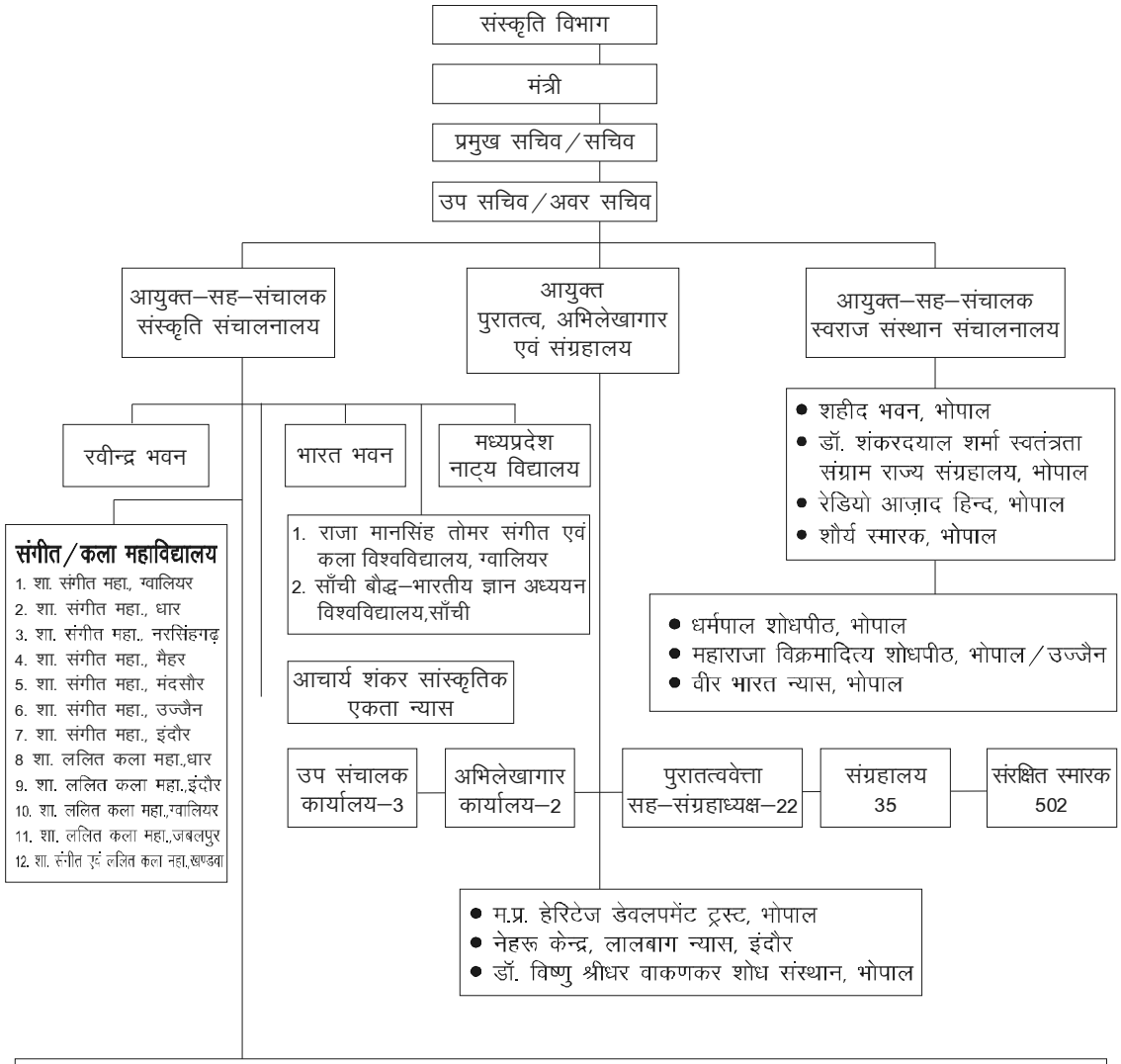

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

- **उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल**

क. तानसेन कला वीथिका, ग्वालियर ख. ख्याल केन्द्र, भोपाल ग. ध्रुपद केन्द्र, भोपाल, ग्वालियर
घ. चक्रधर नृत्य केन्द्र, भोपाल ड़. हस्सू हद्दू खाँ सभागार, ग्वालियर

- **आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल**

क. साकेत रामायण कला संग्रहालय, ओरछा ख. आदिवर्त जनजातीय एवं लोक कला राज्य संग्रहालय, खजुराहो
ग. तुलसी शोध संस्थान, चित्रकूट घ. जनजातीय संग्रहालय, भोपाल ड़ त्रिवेणी कला एवं पुरातत्व संग्रहालय, उज्जैन

- **साहित्य अकादमी, भोपाल**
- **मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल**
- **पंजाबी साहित्य अकादमी, भोपाल**
- **पं. सूर्यनारायण व्यास कला संकुल, उज्जैन**
- **प्रेमचन्द सृजनपीठ, उज्जैन**
- **निराला सृजनपीठ, भोपाल**
- **कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन**
- **मराठी साहित्य अकादमी, भोपाल**
- **तानसेन कला संकुल, ग्वालियर**
- **सांस्कृतिक संकुल, जबलपुर**
- **मुक्तिबोध सृजनपीठ, सागर**
- **बाल साहित्य सृजनपीठ, इंदौर**
- **सिंधी साहित्य अकादमी, भोपाल**
- **भोजपुरी साहित्य अकादमी, भोपाल**
- **राजा मानसिंह तोमर कला केन्द्र, ग्वालियर**

संस्कृति सम्मान

राष्ट्रीय सम्मान

सम्मान	स्थापना वर्ष	राशि	विषय क्षेत्र
महात्मा गांधी सम्मान	1995–96	10 लाख	गांधी विचार दर्शन (संस्था के लिए)
कबीर सम्मान	1986–87	3 लाख	भारतीय भाषाओं की कविता
तानसेन सम्मान	1980–81	2 लाख	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत
कालिदास सम्मान	1980–81	2 लाख	शास्त्रीय संगीत
कालिदास सम्मान	1980–81	2 लाख	शास्त्रीय नृत्य
कालिदास सम्मान	1980–81	2 लाख	रंगकर्म
कालिदास सम्मान	1980–81	2 लाख	रूपंकर कलाएँ
तुलसी सम्मान	1983–84	2 लाख	आदिवासी, लोक व पारम्परिक कलाएँ महिला कलाकार
लता मंगेशकर सम्मान	1984–85	2 लाख	सुगम संगीत–पार्श्व गायन, संगीत निर्देशन
इक़बाल सम्मान	1986–87	2 लाख	उर्दू साहित्य में रचनात्मक लेखन
मैथिलीशरण गुप्त सम्मान	1987–88	2 लाख	हिन्दी कविता
कुमार गंधर्व सम्मान	1992–93	2 लाख	शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन, वादन एवं नृत्य हेतु युवा कलाकार
शरद जोशी सम्मान	1992–93	2 लाख	हिन्दी व्यंग्य, ललित निबंध, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र
देवी अहिल्या सम्मान	1996–97	2 लाख	आदिवासी, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में महिला कलाकार
किशोर कुमार सम्मान	1997–98	2 लाख	फिल्म के क्षेत्र में निर्देशन, अभिनय, पटकथा, गीत लेखन
डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर सम्मान	2005–06	2 लाख	पुरातत्व
अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद सम्मान	2006–07	2 लाख	स्वाधीनता संग्राम के आदर्श, राष्ट्रभक्ति और समाजसेवा
महाराजा अग्रसेन सम्मान	2008–09	2 लाख	सामाजिक सद्भाव और समरसता
महर्षि वेद व्यास सम्मान	2008–09	2 लाख	शिक्षा
वीरांगना लक्ष्मीबाई सम्मान	2012–13	2 लाख	देश की सुरक्षा, कर्तव्य हेतु बलिदान, अदम्य साहस, वीरता, नारी उत्थान के लिए महिला को
नानाजी देशमुख सम्मान	2012–13	2 लाख	सामाजिक सांस्कृतिक समरसता, उत्थान, परिष्कार, आध्यात्म, परम्परा
कवि प्रदीप सम्मान	2012–13	2 लाख	मंचीय कविता के क्षेत्र में

राजा मानसिंह तोमर सम्मान	2011–12	1 लाख	संगीत, संस्कृति एवं कला संरक्षण (संस्था के लिए)
सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान	2015–16	1 लाख	हिन्दी सॉफ्टवेयर, वेब डिज़ाइनिंग, डिजिटल भाषा
निर्मल वर्मा सम्मान	2015–16	1 लाख	अप्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी का विकास
फादर कामिल बुल्के सम्मान	2015–16	1 लाख	विदेशी मूल के लोगों द्वारा हिन्दी भाषा/बोलियों का विकास
गुणाकर मुले सम्मान	2015–16	1 लाख	हिन्दी में वैज्ञानिक/तकनीकी लेखन एवं पाठ्य पुस्तकों का निर्माण
हिन्दी सेवा सम्मान	2015–16	1 लाख	हिन्दी को समृद्ध करने के लिये हिन्दी भाषी लेखकों/साहित्यकारों को सम्मान

राज्य स्तरीय सम्मान

शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	हिन्दी साहित्य
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	उर्दू साहित्य
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	संस्कृत साहित्य
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	संगीत
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	नृत्य
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	नाटक
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	रूपंकर कला
शिखर सम्मान	1980–81	1 लाख	आदिवासी एवं लोक कलाएँ
शिखर सम्मान	2009–10	1 लाख	दुर्लभ वाद्य वादन

पुरस्कार

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी

रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में राज्य पुरस्कार

दत्तात्रेय दामोदर देवलालीकर पुरस्कार	51,000/–
मुकुन्द सखाराम भाण्ड पुरस्कार	51,000/–
रघुनाथ कृष्णराव फड़के पुरस्कार	51,000/–
नारायण श्रीधर बेन्द्रे पुरस्कार	51,000/–
जगदीश स्वामीनाथन पुरस्कार	51,000/–
सैयद हैदर रज़ा पुरस्कार	51,000/–
देवकृष्ण जटाशंकर जोशी पुरस्कार	51,000/–
विष्णु चिंचालकर पुरस्कार	51,000/–
लक्ष्मीसिंह राजपूत पुरस्कार	51,000/–
राममनोहर सिन्हा पुरस्कार	51,000/–

उस्ताद लतीफ़ खाँ सम्मान

दुर्लभ वाद्यों के प्रतिष्ठित एवं शीर्ष कलाकारों के लिए	51,000/–

साहित्य अकादमी

अखिल भारतीय पुरस्कार

पुरस्कार	विषय	राशि
पं. माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार	निबंध	1,00,000/–
गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार	कहानी	1,00,000/–
राजा वीर सिंह देव पुरस्कार	उपन्यास	1,00,000/–
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार	आलोचना	1,00,000/–
पं. भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार	गीत एवं हिन्दी ग़ज़ल	1,00,000/–
अटल बिहारी वाजपेयी पुरस्कार	कविता	1,00,000/–
कुवेरनाथ राय पुरस्कार	ललित निबंध	1,00,000/–
विष्णु प्रभाकर पुरस्कार	आत्मकथा–जीवनी	1,00,000/–
निर्मल वर्मा पुरस्कार	संस्मरण	1,00,000/–
महादेवी वर्मा पुरस्कार	रेखाचित्र	1,00,000/–
प्रोफेसर विष्णुकांत शास्त्री पुरस्कार	यात्रा–वृत्तांत	1,00,000/–
भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार	अनुवाद	1,00,000/–
नारद मुनि पुरस्कार	फेसबुक/ब्लॉग/नेट	1,00,000/–

प्रादेशिक पुरस्कार

वृन्दावन लाल वर्मा	उन्यास	51,000/–
सुभद्राकुमारी चौहान पुरस्कार	कहानी	51,000/–
श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार	कविता	51,000/–
आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार	आलोचना	51,000/–
हरिकृष्ण प्रेमी पुरस्कार	नाटक	51,000/–
राजेन्द्र अनुरागी पुरस्कार	डायरी	51,000/–
बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार	प्रदेश के लेखक की पहली कृति	51,000/–
ईसुरी पुरस्कार	लोक भाषा विषयक	51,000/–
हरिकृष्ण देवसरे पुरस्कार	बाल साहित्य	51,000/–
नरेश मेहता पुरस्कार	संवाद/पटकथा लेखन	51,000/–
जैनेन्द्र कुमार जैन पुरस्कार	लघुकथा	51,000/–
सेठ गोविन्द दास पुरस्कार	एकांकी	51,000/–
शरद जोशी पुरस्कार	व्यंग्य	51,000/–
वीरेन्द्र मिश्र पुरस्कार	गीत	51,000/–
दुष्यंत कुमार पुरस्कार	ग़ज़ल	51,000/–

मध्यप्रदेश की छह बोलियों के पुरस्कार

संत पीपा स्मृति पुरस्कार	मालवी	51,000/–
संत सिंगाजी स्मृति पुरस्कार	निमाड़ी	51,000/–
श्री विश्वनाथ सिंह जूदेव स्मृति पुरस्कार	बघेली	51,000/–
श्री छत्रसाल स्मृति पुरस्कार	बुन्देली	51,000/–
टंट्या भील स्मृति पुरस्कार	भीली	51,000/–
रानी दुर्गावती स्मृति पुरस्कार	गोंडी	51,000/–

कालिदास संस्कृत अकादमी

अखिल भारतीय

कालिदास पुरस्कार	संस्कृत में रचित मौलिक सृजनात्मक श्रेष्ठ कृति के लिए/प्रति दो वर्ष में	1,00,000/–
राष्ट्रीय चित्रकला पुरस्कार (चार)		1,00,000/–
राष्ट्रीय मूर्तिकला पुरस्कार (एक)		1,00,000/–

प्रादेशिक पुरस्कार

भोज पुरस्कार	संस्कृत साहित्य की समीक्षात्मक कृति के लिए	51,000/–
व्यास पुरस्कार	संस्कृत की साहित्यिक कृति अथवा शास्त्रीय ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद के लिए	51,000/–
राजशेखर पुरस्कार	पारम्परिक शास्त्रों की शैली में रचित शास्त्रीय ग्रंथ के लिए	51,000/–

सिंधी साहित्य अकादमी (प्रादेशिक पुरस्कार)

संत हिरदाराम गौरव पुरस्कार	सिंधी साहित्य की जीवनपर्यन्त सेवा	51,000/–
सिंधी पुरस्कार	गद्य लेखन	10,000/–
सिंधी पुरस्कार	पद्य लेखन	10,000/–

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी
(उर्दू पुस्तकों (कृति) के लिए पुरस्कार)

अखिल भारतीय पुरस्कार

मीर तकी मीर पुरस्कार	उर्दू शायरी	51,000/–
हामिद सईद ख़ाँ पुरस्कार	कहानी एवं लघु कथा	51,000/–
शादाँ इन्दौरी पुरस्कार	निबंध एवं अनुवाद	51,000/–
हकीम कमरुल हसन पुरस्कार	उर्दू पत्रकारिता, शोध एवं आलोचना	51,000/–
जौहर कुरैशी पुरस्कार	हास्य व्यंग्य	51,000/–
इब्राहिम यूसुफ पुरस्कार	नाटक एवं दास्तान	51,000/–

प्रादेशिक पुरस्कार

सिराज मीर ख़ाँ पुरस्कार	उर्दू शायरी	31,000/–
बासित भोपाली पुरस्कार	कहानी एवं लघु कथा	31,000/–
मोहम्मद अली ताज पुरस्कार	रेखाचित्र एवं रिपोर्ताज	31,000/–
नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ पुरस्कार	उर्दू पत्रकारिता, उर्दू पत्रिका, शोध व आलोचना	31,000/–
शैरी भोपाली पुरस्कार	बाल साहित्य	31,000/–
कैफ़ भोपाली पुरस्कार	उर्दू शिक्षक	31,000/–
शम्भू दयाल सुखन पुरस्कार	उर्दू भाषी लेखकों/शायरों की उर्दू कृति	31,000/–
शिफ़ा ग्वालियरी पुरस्कार	प्रदेश के लेखक/शायर की पहली कृति	31,000/–
जाँ निसार अख़्तर पुरस्कार	रसाई, नात, उर्दू साहित्य/शायरी की एक विद्या	31,000/–
पन्नालाल श्रीवास्तव नूर पुरस्कार	आत्मकथा एवं संस्करण	31,000/–
सूरज कला सहाय पुरस्कार	यात्रा वृतांत	31,000/–
नवाब शाहजहाँ बेगम ताजवर पुरस्कार	निबंध एवं अनुवाद	31,000/–
निदा फ़ाज़ली पुरस्कार	उर्दू नज़्म, दोहा, रुबाई	31,000/–

भारत भवन

अन्तर्राष्ट्रीय छापा कला द्वैवार्षिकी पुरस्कार

चार ग्रेण्ड प्राईज अवार्ड एवं सम्मान पट्टिका	1,00,000/–
दस मेरिट अवार्ड एवं सम्मान पट्टिका	

विभागीय प्रकाशन

संचालनालय, पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल–462003

पुरातन
इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व की अनियतकालीन शोध पत्रिका। वर्ष 1984 से प्रकाशित।
इसके अतिरिक्त समय–समय पर कई पुस्तकें।

स्वराज संस्थान संचालनालय
रवीन्द्र भवन परिसर
भोपाल – 462002

स्वराज पुस्तक मालांतर्गत स्वाधीनता संघर्ष विषयों पर लगभग 70 पुस्तकें, अक्षयनिधि पुस्तक योजनान्तर्गत आठ पुस्तकें, स्वराज संदर्भ आलेख सीरीज, स्वराज बुलेटिन का प्रकाशन।

साहित्य अकादमी
मुल्ला रमूज़ी संस्कृति भवन
प्रथम तल, बाणगंगा, भोपाल–462003

साक्षात्कार
सृजनात्मक साहित्य की हिन्दी मासिक पत्रिका।
वर्ष 1976 से प्रकाशित।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा, भोपाल

कलावार्ता
संगीत, नृत्य, नाट्य, फिल्म एवं ललित–समकालीन कला की रचनात्मक अनियतकालीन पत्रिका। वर्ष 1981 से प्रकाशित।

जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय
श्यामला हिल्स, भोपाल

चौमासा
जनजातीय और लोक वाचिक परम्परा, संस्कृति और कला पर केन्द्रित चौमासिक पत्रिका।
वर्ष 1982 से प्रकाशित।

कालिदास संस्कृत अकादमी
विश्वविद्यालय मार्ग, उज्जैन

कालिदास
कालिदास और संस्कृत साहित्य की शोध पत्रिका।
वर्ष 1982 से प्रकाशित।

सिन्धी साहित्य अकादमी
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन
बाणगंगा, भोपाल

सिन्धू मशाल
सिन्धी साहित्य, कला और संस्कृति केन्द्रित वार्षिक।
वर्ष 1999 से प्रकाशित।

बाल सिन्धू मशाल
सिन्धी बच्चों के लिए तथा बच्चों की रचनाएं केन्द्रित वार्षिक पत्रिका। वर्ष 2005 से प्रकाशित।

मराठी साहित्य अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल–462003

अथर्वनाद
मराठी साहित्य अनियतकालिक सृजनात्मक साहित्यिक पत्रिका। वर्ष 2011 से प्रकाशित

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी
मुल्ला रमूज़ी संस्कृति भवन
प्रथम तल, बाणगंगा, भोपाल

पुस्तकें – महफ़िलें दानिश्वराँ, सुबह सलोनी चम–चमचम, अंधेरा रायगाँ लम्हात का, ख़्याल अपना–अपना, इंतेख़ाबे तजल्लियाते नज़र, सरमाया–ए–निशात, दीवाने–ग़ालिब, उर्दू आपके लिए।
पत्रिकायें – तमसील, मौजे नर्बदा (ख़बरनामा)

भारत भवन
ज. स्वामीनाथन मार्ग, श्यामला हिल्स
भोपाल–462002

पूर्वग्रह
साहित्य और कलाओं की आलोचना त्रैमासिक पत्रिका।
वर्ष 1974 से प्रकाशित।

संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

भाग – एक

संचालनालय, पुरातत्व एवं संग्रहालय, म.प्र. की स्थापना वर्ष 1956 में हुई तथा वर्ष 1994 में राजकीय अभिलेखागार का इसमें विलय हुआ। मध्य प्रदेश, पुरातत्व संपदा की दृष्टि से संपन्न प्रदेश है। इस संचालनालय का मुख्य कार्य प्रदेशभर में फैली पुरा–संपदा का सर्वेक्षण, चिन्हांकन, छायांकन, संकलन, संरक्षण, प्रदर्शन, उत्खनन एवं अनुरक्षण करना है, इसके साथ संग्रहालय में सुरूचिपूर्ण प्रदर्शन, महत्वपूर्ण प्रतिमाओं की अनुकृतियों का निर्माण, प्रदर्शनियों व पुरातत्व विषय पर केन्द्रित शोध संगोष्ठियों का आयोजन एवं पुरातत्वीय सामग्रियों का प्रकाशन करना है। राजकीय अभिलेखागार के अन्तर्गत अभिलेखों एवं महत्वपूर्ण दस्तावेजों का संरक्षण, संवर्धन तथा शोधकार्य किये जाते हैं।

आयुक्त/संचालक, पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय **'विभागाध्यक्ष'** हैं। मुख्यालय स्तर पर संरक्षण, उत्खनन, सर्वेक्षण, अनुरक्षण, मुद्राशास्त्र, प्रतिकृति, रसायन, छायांकन, प्रकाशन तथा संग्रहालय शाखाएं कार्यरत हैं। राज्य विभाजन के पश्चात् संचालनालय के अन्तर्गत तीन क्षेत्रीय उप संचालक कार्यालय यथा पूर्वी क्षेत्र जबलपुर, पश्चिमी क्षेत्र इन्दौर एवं उत्तरी क्षेत्र ग्वालियर संचालनालय के अधीन हैं। राजकीय अभिलेखागार शाखा के अन्तर्गत दो क्षेत्रीय कार्यालय यथा इन्दौर एवं ग्वालियर में संचालित हैं। नागपुर कार्यालय का रिकार्ड भोपाल स्थानांतरित किया गया है। अभिलेखों को दीर्घ समय तक सुरक्षित रखने एवं इनके समुचित रखरखाव व रिकार्ड हेतु माइक्रोफिल्मिंग इकाई भी भोपाल में स्थापित है।

राज्य स्तरीय 07 संग्रहालय यथा भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इन्दौर, धुबेला (जिला–छतरपुर), उज्जैन एवं रामवन (जिला–सतना) है, 14 जिला स्तरीय संग्रहालयों यथा :– शहडोल, रीवा, पन्ना, ओरछा (जिला–निवाड़ी), विदिशा, राजगढ़, होशंगाबाद, देवास, धार, मन्दसौर, मण्डला, भिण्ड, सागर एवं दमोह हैं, जिनमें से भिण्ड, सागर एवं दमोह संग्रहालय जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद के हैं किन्तु हेरिटेज भवनों में होने से इनका रखरखाव संचालनालय द्वारा किया जाता है, इसके अतिरिक्त 9 स्थानीय संग्रहालय यथा :– महेश्वर, आशापुरी, भानपुरा, पिछोर, गन्धर्वपुरी, चंदेरी, कसरावद (खरगौन), गोलघर (भोपाल) एवं राजवाड़ा (इन्दौर) संचालित हैं, 5 स्थल संग्रहालय यथा :– हिंगलाजगढ़, कुण्डेश्वर (टीकमगढ़), ओंकारेश्वर, मोहन्द्रा (पन्ना) एवं सलकनपुर (सीहोर) में स्थित हैं। 12 संग्रहालय जिला पुरातत्व संघों के अधीन मध्यप्रदेश में संचालित हैं, जिनमें भिण्ड, सागर एवं दमोह के संग्रहालयों का रखरखाव संचालनालय द्वारा नियमित बजट से किया जाता हैं तथा इनमें संघ के कर्मचारियों को अनुदान राशि द्वारा वेतन भत्तों की प्रतिपूर्ति जिला पुरातत्व, पर्यटन, संस्कृति परिषद के माध्यम से की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त 22 पुरातत्ववेत्ता–सह–संग्रहाध्यक्ष कार्यालय मध्यप्रदेश में संचालित हैं।

डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर शोध संस्थान एवं मध्यप्रदेश हेरिटेज डेवलपमेंट ट्रस्ट, भोपाल में गठित हैं। वर्तमान में प्रदेश में कुल 502 स्मारक/स्थल राज्य संरक्षित किये जा चुके हैं।

संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय
विभागीय स्वीकृत सेटअप का विवरण

क्र.	पदनाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त पद
1	आयुक्त/संचालक भारतीय प्रशासनिक सेवा	1	1	—
2	प्रथम श्रेणी	8	0	8
3	द्वितीय श्रेणी	41	06	35
4	तृतीय श्रेणी लिपिकीय	105	51	54
5	तृतीय श्रेणी अलिपिकीय	99	33	66
6	चतुर्थ श्रेणी	362	229	133
7	आऊटसोर्सिंग	14	14	—
	योग	**630**	**334**	**296**

संचालनालय के अन्तर्गत वर्ष 2022–23 में 02–तृतीय श्रेणी एवं 01–चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी का स्थानान्तरण किया गया। 56 न्यायालयीन प्रकरणों में 09 प्रकरण निराकृत हो चुके है तथा 47 प्रकरणों में कार्यवाही प्रचलित है। तृतीय श्रेणी के 05 कर्मचारियों को समयमान वेतनमान स्वीकृत किया गया। तृतीय श्रेणी 02 एवं चतुर्थ श्रेणी 01 कर्मचारी की अनुकंपा नियुक्ति की गई।

भाग–दो

बजट प्रावधान
वर्ष 2020–21

(रुपये लाख में)

क्र.	योजना का नाम	बजट अनुमान	आहरण अप्रैल 2020 से 31.03.2021 तक व्यय
	लेखाशीर्ष–2205		
1	103–पुरातत्व	2417.29	2081.81
2	104–अभिलेखागार	282.24	205.70
3	105–सार्वजनिक पुस्तकालय	25.50	23.13
4	107–संग्रहालय	1074.53	962.35
	योग	**3799.56**	**3272.99**

बजट प्रावधान
वर्ष 2021–2022

(रुपये लाख में)

क्र.	योजना का नाम	बजट अनुमान	आहरण अप्रैल 2021 से 31.03.2022 तक व्यय
	लेखाशीर्ष–2205		
1	103–पुरातत्व	3380.00	2925.36
2	104–अभिलेखागार	254.01	191.54
3	105–सार्वजनिक पुस्तकालय	25.50	7.40
4	107–संग्रहालय	1166.06	1016.47
	योग	**4825.57**	**4140.77**

बजट प्रावधान
वर्ष 2022–23

(रुपये लाख में)

क्र.	योजना का नाम	स्वीकृत प्रावधान	आहरण अप्रैल 2022 से 31.01.2023 तक
	लेखाशीर्ष–2205		
1	103–पुरातत्व	4717.80	2990.09
2	104–अभिलेखागार	264.00	155.20
3	105–सार्वजनिक पुस्तकालय	15.00	8.70
4	107–संग्रहालय	1178.00	739.60
	कुल योग	**6174.80**	**3893.59**

भाग – 3

राज्य योजनाएँ

उत्खनन/सर्वेक्षणः– वित्तीय सत्र 2022–23 में उत्खनन शाखा द्वारा प्रदेश में बिखरी पुरासम्पदा के चिन्हांकन एवं संरक्षण के उद्देश्य से ग्राम से ग्राम पुरातत्वीय सर्वेक्षण के अंतर्गत 12 तहसीलों यथा बागली, उदयनगर, हाटपिपल्या, खातेगांव, सतवास, टोंकखुर्द, सेंधवा, चिचौली, बैतूल शहर, गोहद, गोरमी एवं रतलाम शहर तहसीलों का ग्राम से ग्राम पुरातत्वीय सर्वेक्षण कराया गया, सर्वेक्षण में बैतूल जिले की चिचोली तहसील से प्रथमवार शैलचित्र प्रकाश में आये। उत्खनन एवं मलवा सफाई कार्यों के अंतर्गत मंदिर क्रमांक 05 देवबड़ला जिला सीहोर एवं सलैया समारी जिला पन्ना के मंदिर भग्नावशेषों का पुरातत्वीय प्रविधि से मलवा सफाई कार्य कराया गया, जिसमें से मंदिर क्रमांक 05 देवबड़ला जिला सीहोर के मलवा सफाई का कार्य पूर्ण किया जा चुका है, जिसमें परिसर में अन्य चार परमार कालीन मंदिरों के ध्वंशावशेष भी चिन्हित हुये हैं, जिनके मलवा सफाई की कार्यवाही की जा रही है। इसी प्रकार सलैया समारी, जिला पन्ना के मलवा सफाई का कार्य निरंतर प्रगति पर है, जिसे मार्च 2023 तक पूर्ण कर लिया जायेगा।

देवबड़ला जिला सीहोर में मलवा सफाई में प्राप्त मंदिर क्रमांक 02 तथा मंदिर क्रमांक 17 आशापुरी जिला रायसेन एवं महाकाल मंदिर परिसर उज्जैन के पुरातत्वीय प्रविधि से कराये गये मलवा सफाई में प्रकाश में आये मंदिर की पुनर्संरचना का कार्य प्रगति पर है। इसी प्रकार सिद्धेश्वर मंदिर ओंकारेश्वर के पुनर्संरचना का कार्य कराया जा रहा है, जो पूर्णता की ओर है।

आगामी वित्तीय सत्र 2023–24 में 12 तहसीलों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण, 04 स्थलों पर उत्खनन/मलवा सफाई तथा 02 जिलों के विस्तृत सर्वेक्षण तथा डाक्युमेन्टेशन का कार्य किया जाना लक्षित है।

अनुरक्षण :– पुरातत्वीय धरोहर को सहेजने एवं उसे उसके मूल रूप में बनाये रखने की दृष्टि से स्मारकों के लिये विशेष वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग किया जाता है जिसमें स्मारक के निर्माण के समय उपयोग की गई सामग्री के अनुरूप ही अनुरक्षण आदि कार्यो में सामग्री का उपयोग किया जाता है जिससे स्मारक के मूल स्वरूप को यथा अनुरूप बनाये रखा जाकर अतीत की धरोहर को भविष्य के लिये सुरक्षित रखा जा सके। इसके अतिरिक्त स्मारकों एवं राज्य संचालित संग्रहालयों की सुरक्षा व्यवस्था के लिये भी विभागीय अमले के अतिरिक्त सुरक्षा कर्मी रखे जाकर सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है, स्मारकों, पुरावशेषों, कलाकृतियों के रसायनिक संरक्षण का कार्य भी इसी योजना के अंतर्गत किया जाता है।

अनुरक्षण शाखा द्वारा राज्य संरक्षित स्मारकों के अनुरक्षण, उन्नयन एवं विकास कार्य सम्पन्न कराये जाते हैं। इस कार्य हेतु संचालनालय में प्राप्त बजट के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा प्रस्तुत प्राक्कलन के आधार पर परीक्षण उपरांत प्रशासकीय, वित्तीय एवं तकनीकी स्वीकृति जारी की जाती है। क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा आवंटित बजट के आधार पर स्मारकों के अनुरक्षण कार्य सम्पन्न कराये जाते हैं।

33–अनुरक्षण आयोजना मद में रू. 17.50 लाख का बजट प्राप्त हुआ, जिसके तहत ग्वालियर, जबलपुर, भोपाल एवं इंदौर क्षेत्र के 45 स्मारकों पर अनुरक्षण एवं विकास कार्य किये जा रहे हैं।

32–लघु निर्माण आयोजना मद में रू. 3.64 लाख बजट के अंतर्गत मुख्यालय, भोपाल में राशि रू. 3,57,145/–से 2 लघु कार्य कराये गये।

005–अन्य मद में प्राप्त रू. 1.82 लाख के अंतर्गत मुख्यालय, भोपाल में राशि रू. 1,64,216/– से 1 अन्य कार्य कराया गया।

006–सफाई व्यवस्था के तहत प्राप्त 10.00 लाख के अंतर्गत भोपाल, होशंगाबाद, इंदौर, ग्वालियर एवं जबलपुर क्षेत्र के स्मारकों में राशि रू. 9,73,620/– से साफ–सफाई कार्य कराये गये।

रसायन खण्ड :– रसायन शाखा के द्वारा अतीत की धरोहर को भविष्य के लिये सुरक्षित रखने के लिए राज्य संरक्षित स्मारकों में प्रदर्शित पुरावशेषों का रसायनिक संरक्षण कार्य किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2022–23 में 02 स्मारकों तथा 05 संग्रहालयों में प्रदर्शित 756 प्रतिमाओं का रसायनिक संरक्षण कार्य एवं 03 संग्रहालयों का दीमक विनिष्टीकरण कार्य सम्पन्न किया गया।

02 स्मारकों यथा जहांगीर महल, ओरछा, जिला–निवाड़ी के भित्तिचित्रों, राज्य संरक्षित स्मारक शिव मंदिर, देवबड़ला, जिला–सीहोर का रसायनिक संरक्षण कार्य एवं जिला संग्रहालय, श्योपुर में प्रदर्शित 97 प्रतिमाओं एवं धुबेला संग्रहालय में प्रदर्शित 381 प्रतिमाओं का रसायनिक संरक्षण कार्य प्रगति पर है।

मॉडलिंग खण्ड :– वित्तीय वर्ष 2022–23 में माह अप्रैल से दिसम्बर 2022 तक शाखा में पुरातत्वीय महत्व की प्रतिमाओं की कुल 380 नग प्रतिकृतियों का निर्माण एवं विक्रय किया गया है। नवनिर्मित मध्यप्रदेश भवन, नई दिल्ली में प्रदर्शन हेतु 25 नग फाईबर ग्लास एवं पीओपी की पुरातत्वीय महत्व की प्रतिकृतियों का निर्माण कर प्रदाय की गई हैं, जिसमें प्रदेश के पुरातत्वीय वैभव का समुचित प्रदर्शन हो सके।

फोटोग्राफी खण्ड :– संचालनालय द्वारा राज्य संरक्षित स्मारक यथा स्मारक समूह जगदीशपुर (इस्लामनगर), भोपाल एवं इंदौर, ग्वालियर के स्थलों पर लगभग 03 फिल्मांकन की अनुज्ञप्तियां जारी की गई।

पारितोषिक/पुरस्कार :– राज्य शासन द्वारा स्थापित डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरस्कार वर्ष 2018–19 एवं 2019–20 का सम्मान प्रो. रवि कोरिसेट्टार कर्नाटक एवं डॉ. नारायण व्यास, भोपाल को प्रदान किया गया।

सेमिनार/कार्यशाला :– विश्व धरोहर दिवस एवं विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर प्रदेश के संग्रहालयों में 02 कार्यशाला का आयोजन एवं 01 पुरातात्विक विषयक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

स्मारकों के अनुरक्षण एवं मंदिरों की पुनर्संरचना व रसायनिक अनुरक्षण पर केन्द्रित ठेकेदारों व इंजीनियरर्स को प्रक्षिशित करने हेतु कार्यशाला आयोजित की गई।

मेला/उत्सव/प्रदर्शनी :– आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत फोटोग्राफी प्रतियोगिता संपन्न कराई। विभागीय गतिविधियों के प्रचार–प्रसार हेतु ग्वालियर व्यापार मेला में भी विभागीय प्रदर्शनी लगाई गयी है। गणतंत्र दिवस वर्ष–2023 के अवसर पर लाल परेड, मैदान, भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय मुख्य समारोह में संचालनालय की मॉडलिंग शाखा के अंतर्गत बहुमूल्य पुरातत्वीय प्रतिमाओं की प्रतिकृतियों का निर्माण प्रक्रिया को दृष्टिगत रखते हुए चलित झांकी का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया।

कलाकृतियों का क्रय :– विभाग द्वारा पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पुरासामग्री, कलाकृतियां, पेन्टिंग आदि का क्रय किया जाता है।

डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरातत्व शोध संस्थान :– उज्जैन महाकालेश्वर परिसर में वैज्ञानिक पद्धति से नवीन मंदिर, मलवा सफाई एवं उत्खनन कार्य किया गया। जिला नरसिंहपुर की तहसील करेली के ग्राम विनायगी टोला में नवीन शैलचित्रों की खोज की गई है। विश्व संस्थान द्वारा विश्व विरासत सप्ताह के अवसर पर "प्राचीन मृण मूर्तिकला" की प्रदर्शनी एवं दो व्याख्यानमाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

संग्रहालय :– संग्रहालयों की स्थापना का मूल उद्देश्य पुरातत्वीय सामग्रियों का संरक्षण, प्रदर्शन एवं उनका प्रचार–प्रसार करना है। संचालनालय, पुरातत्व द्वारा प्रदेश में अवस्थित संग्रहालयों के उन्नयन, विकास एवं प्रदर्शन का कार्य सम्पादित कराया जाता है। संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश, भोपाल के अन्तर्गत प्रदेश में 35 संग्रहालय संचालित हैं जिसमें 7 राज्य स्तरीय संग्रहालय, 14 जिला स्तरीय संग्रहालय, 9 स्थानीय संग्रहालय एवं 5 स्थल संग्रहालय हैं।

उक्त संग्रहालयों में मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं बहुमूल्य पुरावशेष, प्रतिमायें, सिक्के, अभिलेख एवं अन्य पुरातत्वीय सामग्री प्रदर्शित हैं। वित्तीय वर्ष 2022–23 में पाँच संग्रहालयों में उन्नयन एवं विकास कार्य तथा चार संग्रहालयों में रखरखाव के कार्य सम्पादित कराये जाने का लक्ष्य निर्धारित है। संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश द्वारा केन्द्रीय सहायता योजनान्तर्गत भारत शासन से प्राप्त राशि से नवीन संग्रहालय, सिरोंज, (जिला–विदिशा) का निर्माण कार्य प्रगति पर है। यह कार्य, परियोजना क्रियान्वयन इकाई, लोक निर्माण विभाग, विदिशा द्वारा सम्पादित कराया जा रहा है।

बुरहानपुर में गुरू गोविन्द सिंह जी की 350वीं वर्षगांठ पर ''मेमोरियल म्यूजियम'' की स्थापना हेतु भारत शासन द्वारा राशि रू. 15.39 करोड़ स्वीकृत की गई है। इस राशि से बुरहानपुर में नवीन संग्रहालय का निर्माण, मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम मर्यादित, भोपाल के माध्यम से कराया जा रहा है।

अनुदान :– संचालनालय द्वारा प्रदेश में पुरातत्ववीय गतिविधियों के प्रचार–प्रसार के लिये जिला पुरातत्व संघों को अनुदान दिया जाता है, जिसमें पुरातत्व संघों के अधीन संग्रहालयों में कार्यरत कर्मचारियों का वेतन व संग्रहालय का रख–रखाव एवं अन्य व्ययों के लिये अनुदान दिया गया।

अभिलेखागार :– अभिलेखागार का मुख्य कार्यालय संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, बाणगंगा मार्ग, भोपाल में स्थित है तथा दो अभिलेख कक्ष डी–ब्लॉक, पुराना सचिवालय एवं सतपुड़ा भवन, भोपाल में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त एक क्षेत्रीय कार्यालय राजवाड़ा एवं रामपुर कोठी, इंदौर में है। अभिलेखागार शाखा में मध्यप्रदेश राज्य में विलीन की गई, भूतपूर्व रियासतों यथा सिंधिया राज्य ग्वालियर, होलकर राज्य इंदौर, भोपाल राज्य, मध्यभारत राज्य तथा मध्यप्रांत के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेख संरक्षित हैं। यह अभिलेख अंग्रेजी, हिन्दी, मोढ़ी, उर्दू एवं फारसी भाषा में है। राजकीय अभिलेखागार के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण दस्तावेजों का संरक्षण, संवर्धन तथा शोध कार्य किये जाते हैं।

जनसामान्य को अभिलेखीय विरासत की जानकारी से अवगत कराने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश की स्थापना दिवस के अवसर पर **''मध्यप्रदेश राज्य पुनर्गठन''** विषय पर दुर्लभ अभिलेखों एवं छायाचित्रों की प्रदर्शनी दिनांक 25 से 30 नवम्बर 2022 तक राज्य संग्रहालय, भोपाल में आयोजित की

गई एवं ऐतिहासिक अभिलेखों एवं संरक्षण विषय पर क्षेत्रीय अभिलेखागार, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में 25 नवम्बर 2022 को व्याख्यानमाला का आयोजन राज्य संग्रहालय, भोपाल के सभागार में आयोजित किया गया।

अभिलेखीय विरासत को संरक्षित रखने के उद्देश्य से भारत शासन से प्राप्त अनुदान राशि से राजधानी परियोजना प्रशासन के माध्यम से भूतपूर्व भोपाल राज्य के अभिलेख कक्षों में तथा मध्यभारत राज्य के अभिलेख कक्ष में आप्टीमाईजर्स लगाने का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। आप्टीमाईजर्स में भोपाल राज्य के वर्ष 1914 से 1949 तक के अभिलेख तथा मध्यभारत राज्य के वर्ष 1948 से 1956 तक के अभिलेखों को व्यवस्थित विभागवार, वर्षवार क्रमानुसार सुरक्षित रखने का कार्य कराया जा रहा है।

देश–विदेश के शोधकर्ताओं को त्वरित शोध सामग्री/अभिलेख उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से मध्यभारत राज्य के वर्ष 1948 से 1956 तक के विविध विभागों के अभिलेखों का शोध संदर्भ (Reference Media) तैयार करने का कार्य कराया जा रहा है।

वर्ष 2022–23 में विभिन्न शोधकर्ताओं को उनके शोध विषय से संबंधित शोध सामग्री/सुविधा उपलब्ध कराई गई तथा प्राप्त मांग पत्रों से संबंधित वांछित जानकारी/अभिलेख उपलब्ध कराये गये।

सार्वजनिक पुस्तकालय :– संचालनालय के अधीनस्थ ग्रन्थालयों में लगभग 60000 पुस्तकें एवं पत्र–पत्रिकाओं, धार्मिक पाण्डुलिपियों एवं दुर्लभ ग्रन्थों का संकलन है, जिसमें पुरातत्व, इतिहास, संग्रहालय, अनुरक्षण, मानव विज्ञान, स्थापत्य, कला, पेंटिंग, वैदिक साहित्य, मुद्राशास्त्र, लिपिशास्त्र, जिला गजेटियर्स आदि महत्वपूर्ण विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। विभागीय अधिकारी/कर्मचारियों, जनसामान्य, शोधार्थियों को शोध सुविधा उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से पुरातत्व, इतिहास, संग्रहालय, अनुरक्षण आदि विषयों की महत्वपूर्ण उपयोगी पुस्तकों का क्रय किया जाता है।

संचालनालय के अधीनस्थ महाराजा छत्रसाल संग्रहालय, धुबेला जिला छतरपुर के शोध ग्रन्थालयों का उन्नयन एवं विकास कार्य के अंतर्गत 200 महत्वपूर्ण पुरानी पुस्तकों के बाईंडिंग का कार्य सम्पादित किया गया है।

देश/विदेश के लगभग 200 शोधार्थियों, जनसामान्य व्यक्ति/विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारियों को शोध कार्य के लिये ग्रन्थालयीन सेवायें प्रदान की गयी हैं।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी :– संचालनालय के अधीन संरक्षित समस्त संग्रहालयों/स्मारकों एवं विभागीय गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी जनमानस को सुलभता से प्रदान करने हेतु बेवसाईट को नवीनतम आकर्षक रूप प्रदान किया गया है। पारदर्शिता एवं सुचिता को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान में एम.पी. ऑनलाईन ई–टिकटिंग प्रणाली के द्वारा संग्रहालयों एवं स्मारकों की ऑनलाईन के माध्यम से टिकट बुक किये जाने की सतत व्यवस्था की गई है। दर्शकों की सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश के तीन स्मारकों/संग्रहालयों में एम.पी. ऑनलाईन द्वारा कियोस्क सेन्टर स्थापित किये गये हैं, जिससे ऑनलाईन टिकट सफलतापूर्वक दर्शकों को उपलब्ध हो सकें।

शासकीय कार्यों को पेपरलेस, पारदर्शिता एवं सरलीकरण को ध्यान में रखते हुए विभाग में ई–ऑफिस प्रणाली लागू किये जाने, ई–अटेन्डेंस एप्लीकेशन तैयार किये जाने की कार्यवाही प्रचलन में है। अधिकारी एवं कर्मचारियों की आई.टी. से संबंधित प्रशिक्षण भी निरंतर करवाया जाता है। विभाग द्वारा निर्मित प्रदेश की उत्कृष्ट कलाकृतियों की प्रतिकृतियों की जानकारी भी बेवसाइड पर उपलब्ध है।

भाग – चार

विभागीय प्रकाशन

संचालनालय द्वारा किये जा रहे सर्वेक्षण/उत्खनन एवं अन्य अन्वेषण कार्यों की जानकारी जनमानस को प्रदान करने के उद्देश्य से विभागीय प्रकाशन कराया जाता है, जिसमें सर्वेक्षण पर आधारित जिले के पुरातत्व एवं इतिहास पर केन्द्रित पुस्तकें, संग्रहालय के फोल्डर, कैटलॉग एवं अन्य विभागीय शोधकार्य आदि प्रकाशित किये जाते हैं। वर्ष 2022–23 में विभागीय जर्नल अंक–18 एवं छतरपुर जिले का पुरातत्व एवं विदिशा जिले के शैलाचित्रों के अभिलेखीकरण पर आधारित पुस्तक "विदिशा जिले के शैलचित्र" का प्रकाशन कराया जा चुका है। इसके अतिरिक्त निवाड़ी, सिवनी, टीकमगढ़, जबलपुर, दमोह, मुरैना जिले के पुरातत्व पर केन्द्रित पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

संचालनालय के अधीन संचालित गतिविधियों के प्रचार–प्रसार एवं शोध कार्य को प्रोत्साहन देने के लिये विभाग प्रकाशन कार्य करवाता है, जिसमें विभाग के संग्रहालयों के फोल्डर, ब्रोशर, सर्वेक्षण प्रतिवेदन एवं शोध कार्य पर केन्द्रित शोध संगोष्ठियों के शोध पत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये जाते हैं।

भाग – पाँच

महिला नीति

कार्यालय में महिलाओं के लिये किये गये कार्यों में विशेष रूप से निम्नानुसार उल्लेखनीय हैं:–

महिला नीति के फलस्वरूप पुरातत्व, संचालनालय में एक महिला समिति का गठन किया गया, संचालनालय पुरातत्व में महिलाओं के लिए अलग से एक कक्ष आवंटित किया गया है। अभी तक कोई महिला उत्पीड़न के प्रकरण प्रकाश में नहीं आये हैं। संचालनालय के द्वारा संचालित सभी योजनाओं में महिलाओं को भी समान रूप से लाभ के अवसर प्रदान करने के यथासंभव प्रयास किये जाते हैं।

26 tuojh 2023 ¼x.kr= fnol½ ij ijkrkfRod /kjgj dh pfyr >kdh dk yky ijM xkm.M] Hkkiky e in'ku

[ktjkgk uR; lekjkg] [ktjkgk

jk"Vh; fd'kkj dekj lEeku vydj.k lekjkg ,o lxhr l/;k

e/;in'k LFkkiuk fnol lekjkg & i[;kr xk;d 'kdj egknou

e/;in'k LFkkiuk fnol lekjkg volj ij ekuuh; e[;e=h Jh f'kojkt flg pkgku

संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

भाग–एक

संस्कृति कला और साहित्य का संवर्धन, संरक्षण, विस्तार और विकास के लिये बहुआयामी कार्य, साथ ही राजभाषा हिन्दी के संरक्षण और प्रचार–प्रसार की गतिविधियां भी की जा रही हैं। संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु प्रतिबद्धता के अनुरूप महत्वपूर्ण कार्यों के उत्तरदायित्व का निर्वहन, संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले और नीति निर्धारण, साहित्य और कला का विकास, सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण, हिन्दी भाषा का प्रयोग और उसका विकास, शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसका विकास, जिला गजेटियरों का लेखन, प्रकाशन और पुनर्मुद्रण, अभावग्रस्त कलाकारों साहित्यकारों को पेंशन और आर्थिक सहायता, अशासकीय साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन और आर्थिक सहायता, चयनित कलाकारों, साहित्यकारों के सम्मान के साथ ही राजकाज में हिन्दी भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने, प्रदेश के जिलों की महत्वपूर्ण एवं समग्र जानकारी गजेटियर के रूप में संकलित करने के साथ साहित्य और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन का कार्य किया जाता है।

संस्कृति संचालनालय का स्वीकृत सेट–अप

क्र.	कार्यालय	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	चतुर्थ श्रेणी	योग
1.	संस्कृति संचालनालय	3	5	18	11	37
2.	महाविद्यालय	22	27	214	50	313
3.	रवीन्द्र भवन	–	1	12	9	22
	योग	**25**	**33**	**244**	**70**	**372**

स्वीकृत सेटअप के अतिरिक्त संचालनालय में सुपरन्यूमेरेरी पदों पर 06 कर्मचारी कार्यरत हैं।

भाग–दो

बजट प्रावधान

वर्ष 2020–21

(राशि लाख में)

शीर्ष	सेगमेंट कोड	बजट प्रावधान 2020–21	वास्तविक व्यय 2020–21
1	2	3	4
2205 (102) कला और संस्कृति का संवर्धन	8888	2055.84	1985.00
	0101	6228.38	6041.78
3454 गजेटियर	0101	69.98	48.08
4202 पूंजीगत परिव्यय	0101/0701	2100.02	405.70
0102–अनुसूचित जनजाति उपयोजना	0102	1457.23	1457.21
0103–अनुसूचित जाति उपयोजना	0103	520.01	520.00
7881–आदिवासी उपयोजना क्षेत्र में विविध विकास कार्य अनुच्छेद 275 (1)	0802	200.00	200.00
कुल योग		**12631.46**	**10657.77**
2202 (7981) ललित कला संस्थान	8888	309.26	258.57
2202 (7982) संगीत महाविद्यालय	8888	853.24	668.48
2202 (7043) जनभागीदारी समिति	8888	115.00	39.59
महाविद्यालय योग		**1277.50**	**966.64**
विभागाध्यक्ष कुल योग		**13908.96**	**11624.41**

बजट प्रावधान

वर्ष 2021–22

(राशि लाख में)

शीर्ष	सेगमेंट कोड	बजट प्रावधान 2021–22	वास्तविक व्यय 2021–22
1	2	3	4
2205 (102) कला और संस्कृति का संवर्धन	8888	1800.00	1648.00
	0101	9140.66	5680.86
3454 गजेटियर	0101	99..85	52..51
4202 पूंजीगत परिव्यय	0101/0701	10385.06	857.25
0102–अनुसूचित जनजाति उपयोजना	0102	1650.02	11650.00
0103–अनुसूचित जाति उपयोजना	0103	750.01	600.00
कुल योग		**23699.58**	**6638.77**
2202 (7981) ललित कला संस्थान	8888	355.00	214.78
2202 (7982) संगीत महाविद्यालय	8888	962.00	517.65
2202 (7043) जनभागीदारी समिति	8888	115.00	23.49
महाविद्यालय योग		**1432.00**	**755.92**
विभागाध्यक्ष कुल योग		**25131.58**	**7394.69**

बजट प्रावधान
वर्ष 2022–23

(राशि लाख में)

शीर्ष	सेगमेंट कोड	बजट प्रावधान 2022–23	माह दिसम्बर 2022 तक का वास्तविक व्यय
1	2	3	4
2205 (102) कला और संस्कृति का संवर्धन	8888	3176.24	1208.30
	0101	14582.04	7669.31
3454 गजेटियर	0101	120.00	47.51
4202 पूंजीगत परिव्यय	0101/0701	37600.08	228.00
0102–अनुसूचित जनजाति उपयोजना	0102	1970.00	1408.00
0103–अनुसूचित जाति उपयोजना	0103	640.01	512.00
कुल योग		**58088.37**	**11073.12**
2202 (7981) ललित कला संस्थान	8888	1088.00	549.62
2202 (7982) संगीत महाविद्यालय	8888	400.00	246.81
2202 (7043) जनभागीदारी समिति	8888	115.00	58.04
महाविद्यालय योग		**1603.00**	**854.47**
विभागाध्यक्ष कुल योग		**59691.37**	**11927.59**

भाग–तीन

राज्य योजनाएँ

1.1 अशासकीय संस्थाओं को अनुदान – प्रदेश के अशासकीय संस्थाओं को सहायता अनुदान के अन्तर्गत वर्ष 2018–19 में 174 तथा वर्ष 2019–20 में 255 तथा 2020–21 में 365 संस्थाओं को अनुदान राशि प्रदान की गई।

1.2 अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों, कलाकारों को मासिक वित्तीय सहायता – प्रदेश के अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों को जीवन यापन के लिए योजना के तहत राशि रुपये 1500.00 प्रतिमाह की सहायता राशि जिला पंचायत कार्यालय के माध्यम से उपलब्ध करायी जाती है। वर्ष 2018–19 में 250, वर्ष 2019–20 में 254, वर्ष 2020–21 में 246, 2021–22 में 243 एवं 2022–23 में 238 साहित्यकारों/कलाकारों को सहायता राशि उपलब्ध कराई गई है।

1.3 कलाकार कल्याण कोष से आर्थिक सहायता – प्रदेश के अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों को तथा उनके आश्रितों को गंभीर रूप से बीमारी के इलाज के लिए वर्ष 2021–22 में 18 एवं 2022–23 में 09 कलाकारों को सहायता उपलब्ध करायी गई है।

1.4 गजेटियर – प्रदेश के जिलों की महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय प्रमाणिक जानकारी का संकलन गजेटियर में किया जाता है। भारत शासन की योजना के अनुरूप इन गजेटियरों का लेखन कार्य अंग्रेजी भाषा में किया गया, तदुपरान्त संचालनालय द्वारा इनके हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित कराए गए हैं। संचालनालय द्वारा ब्रिटिश एवं रियासती काल में लिखे गये गजेटियरों एवं इसके समदृश्य पुस्तकों का भी पुनर्प्रकाशन कराया गया है। अब तक अंग्रेजी में पूर्व मध्यप्रदेश के सभी 45 जिलों के 43 गजेटियर, इनमें से 24 जिलों के गेजेटियरों के हिन्दी अनुवाद और 13 जिलों के अनुपूरक गजेटियर और 26 ब्रिटिश एवं रियासती काल के गजेटियर समदृश्य पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है।

1.5 समारोह – वित्तीय वर्ष 2022–23 में संस्कृति संचालनालय द्वारा विभिन्न अनुषंगों के साथ मिलकर कला विविधताओं के अंतर्गत गायन, वादन, नृत्य, रंगकर्म इत्यादि विधाओं पर केन्द्रित कार्यक्रमों के साथ ही संवाद, व्याख्यान, परिचर्या इत्यादि पर केन्द्रित कार्यक्रम संयोजित किये गये हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार हैं :–

संग प्रसंग (रवीन्द्र भवन), कुमार गंधर्व सम्मान अलंकरण (देवास), प्राकट्य पर्व (चित्रकूट, ओरछा, उज्जैन, उमरिया, शहडोल, विदिशा, शिवपुरी, नीमच, रतलाम, पन्ना, राजगढ़ एवं छिंदवाड़ा), मालवा उत्सव (इंदौर), देवी अहिल्या गौरव दिवस (इंदौर), विरासत महोत्सव (मऊसहानियाँ), विश्व योग व संगीत दिवस (नरसिंहगढ़, उज्जैन, मंदसौर, धार, इंदौर, ग्वालियर, मैहर, खण्डवा एवं जबलपुर), रानी दुर्गावती बलिदान दिवस (जबलपुर), गुरु पूर्णिमा पर्व (नरसिंहगढ़, उज्जैन, मंदसौर, धार, इंदौर, ग्वालियर, मैहर, खण्डवा एवं जबलपुर), किशोर कुमार स्मृति समारोह (बुरहानपुर एवं भोपाल), भक्ति पर्व (भोपाल, दमोह, पन्ना, शिवपुरी एवं श्योपुर), राष्ट्रीय हिंदी भाषा सम्मान अलंकरण समारोह (भोपाल), विष्णु नारायण भातखण्डे स्मृति प्रसंग (नरसिंहगढ़, उज्जैन, मंदसौर, धार, इंदौर, ग्वालियर, मैहर एवं खण्डवा), पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित समारोह (ग्वालियर), राष्ट्रीय लता मंगेशकर अलंकरण एवं गीत संगीत संध्या (इंदौर), शक्ति पर्व (सलकनपुर, मैहर एवं गुना), महात्मा गांधी सम्मान अलंकरण एवं कवि सम्मेलन (भोपाल एवं उज्जैन), दशहरा पर्व (परासिया), नर्मदा महोत्सव (जबलपुर), शरदोत्सव

(चित्रकूट), श्रीमहाकाल महा–लोक परिसर का निर्माण (उज्जैन), किशोर कुमार सम्मान अलंकरण (खण्डवा), अंतर्राष्ट्रीय रामलीला उत्सव (भोपाल), दतिया महोत्सव (दतिया), स्थापना दिवस समारोह (भोपाल), राष्ट्रीय कालिदास सम्मान अलंकरण (उज्जैन),राष्ट्रीय देवी अहिल्या एवं तुलसी सम्मान अलंकरण (सिंगाजी धाम), लोकोत्सव (करीलाधाम), अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला (दिल्ली), महाबोधि महोत्सव (सांची), स्मृति प्रसंग (भोपाल), तानसेन संगीत समारोह (ग्वालियर), खजुराहो फिल्म फेस्टिवल (खजुराहो) समारोह सम्पन्न किये गये है। उपर्युक्त सभी आयोजन अप्रैल–2022 से दिसम्बर–2022 की अवधि में सम्पन्न किये गये हैं।

1.6 सम्मान – साहित्य, संस्कृति, सिनेमा, सामाजिक समरसता, सद्भाव आदि बहुआयामी क्षेत्रों में उत्कृष्टता, सृजनात्मकता और बहुउल्लेखनीय योगदान को समादृत करने के लिए मध्यप्रदेश की पहल देशभर में अग्रणी और अनूठी है। संस्कृति विभाग द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य सम्मान संस्कृति संचालनालय के अंतर्गत स्थापित किये गये हैं, जो निम्नानुसार है :–

(1) राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मान – गांधी विचार दर्शन (संस्था हेतु),
(2) राष्ट्रीय कबीर सम्मान – भारतीय भाषाओं की कविता के लिए,
(3) राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान – हिन्दी साहित्य के लिए,
(4) राष्ट्रीय इकबाल सम्मान – उर्दू साहित्य के लिए,
(5) राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान – हिंदी व्यंग्य, ललित निबंध, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र लेखन आदि,
(6) राष्ट्रीय कालिदास सम्मान – शास्त्रीय संगीत,
(7) राष्ट्रीय कालिदास सम्मान – शास्त्रीय नृत्य ,
(8) राष्ट्रीय कालिदास सम्मान – रूपंकर कलाएँ,
(9) राष्ट्रीय कालिदास सम्मान – रंगकर्म
(10) राष्ट्रीय तानसेन सम्मान – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत
(11) राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान – अभिनय, पटकथा, गीत, लेखन, निर्देशन (बारी–बारी से)
(12) राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान – संगीत निर्देशन, पार्श्व गायन (बारी–बारी से)
(13) राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान – आदिवासी लोक व पारंपरिक कलाओं के लिए महिला कलाकार
(14) राष्ट्रीय तुलसी सम्मान – आदिवासी लोक व पारंपरिक कलाओं के लिए महिला कलाकार
(15) राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान – शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन, वादन एवं नृत्य (युवा कलाकार)
(16) राष्ट्रीय कवि प्रदीप सम्मान – मंचीय कविता के लिए
(17) राष्ट्रीय नानाजी देशमुख सम्मान – सामाजिक, सांस्कृतिक समरसता, उत्थान, परिष्कार, आध्यात्म, परंपरा, समाज एवं विकास तथा संस्कृति हेतु व्यक्ति (पुरुष एवं महिला) एवं संस्था के लिए
(18) राष्ट्रीय राजा मानसिंह तोमर सम्मान – संगीत, संस्कृति एवं कला के संरक्षण में कार्य करने वाली संस्था के लिए
(19) राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान – हिन्दी सॉफ्टवेयर सर्च इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजीटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजीटल ऑडियो विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान
(20) राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान – भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिंदी के विकास में अमूल्य योगदान
(21) राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान – विदेशी मूल के व्यक्ति के हिंदी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान
(22) राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान – हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य पुस्तकों के लिए लेखन

(23) राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान – अहिंदी भाषी लेखकों और साहित्यकारों को लेखन–सृजन में हिंदी की समृद्धि के लिए योगदान
(24) राज्य शिखर सम्मान – हिन्दी साहित्य
(25) राज्य शिखर सम्मान – उर्दू साहित्य
(26) राज्य शिखर सम्मान – संस्कृत साहित्य
(27) राज्य शिखर सम्मान – नृत्य
(28) राज्य शिखर सम्मान – संगीत
(29) राज्य शिखर सम्मान – नाटक
(30) राज्य शिखर सम्मान – रूपंकर कलाएँ
(31) राज्य शिखर सम्मान – जनजातीय एवं लोक कलाएँ
(32) राज्य शिखर सम्मान – दुर्लभ वाद्यवादन

उल्लेखित सम्मानों में राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मान एवं हिन्दी सम्मानों का चयन हेतु 4 सदस्यों की उपस्थिति में बैठक आयोजित की जाती है। शेष राष्ट्रीय एवं राज्य सम्मान का चयन हेतु 3 सदस्यों की उपस्थिति में बैठक आयोजित की जाती है। उल्लेखित सम्मानों के लिए अलग–अलग समिति का गठन शासन द्वारा किया जाता है। चयन समिति में मनोनीत सदस्य सम्बन्धित कला एवं साहित्य के (सम्मानों के अनुरूप) श्रेष्ठ कलाकार, साहित्यकार एवं विशेषज्ञ होते हैं। चयन समिति की सर्वसम्मत अनुशंसा राज्य शासन के लिए बंधनकारी होती है।

1.7 कला पंचांग – संचालनालय द्वारा वित्तीय वर्ष में आयोजित होने वाली समस्त गतिविधियों की जानकारी देने के लिए एक आकर्षक कैलेण्डर कला–पंचांग का प्रकाशन भी किया गया, जिसमें अप्रैल–2022 से मार्च–2023 की अवधि में आयोजित होने वाले विभिन्न समारोह/उत्सव इत्यादि की जानकारी अंकित की गई है। यह कैलेण्डर बहुरंगी, नयनाभिराम एवं राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सचित्र दर्शाता है।

1.8 वेबसाइट – समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप विभाग के समग्र आकार को देखने, जानने तथा उससे जुड़ने की दृष्टि से संस्कृति विभाग की एक वेबसाइट बनायी गयी है, जिसको और अधिक कलात्मक, सुसज्जित एवं समृद्ध किया गया है। इस वेबसाइट www.culturemp.in के माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, सक्रियता एवं उपक्रमों को दुनिया भर में देखा और जाना जा सकता है।

1.9 एम.पी.कल्चर एप – संस्कृति विभाग द्वारा संस्कृति से संबंधित कार्यक्रमों की जानकारी एवं कतिपय आयोजनों के सजीव प्रसारण हेतु एम.पी. कल्चर एप विकसित किया गया है, जिसमें कोई भी व्यक्ति पंजीयित होकर एस.एम.एस. एवं ई–मेल के माध्यम से आयोजनों की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

1. रवीन्द्र भवन –

राजधानी भोपाल में रवीन्द्र भवन की स्थापना वर्ष 1962 में हुई थी। रवीन्द्र भवन सभागृह, ओपन स्टेज, लॉन का उपयोग विभिन्न स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक कला/संगीत/साहित्य विधाओं की संस्थाओं और कलाकारों, निकाय–निगमों, सामाजिक संस्थाओं द्वारा सांस्कृतिक एवं अन्य कार्यक्रमों के लिये आरक्षण कर उपयोग किया जाता है। रवीन्द्र भवन सभागृह में 510 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। इस सभागृह के अलावा परिसर में एक मुक्ताकाश मंच है, जिसमें 5000 दर्शकों की क्षमता से भव्य आयोजन होते हैं।

नव निर्मित 'रवीन्द्र सभागम केन्द्र' की आधारशिला नवम्बर, 2015 को रखी गई थी जिसका लोकार्पण दिनांक 26 जनवरी, 2022 को महामहिम राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री के कर कमलों द्वारा किया गया। 'रवीन्द्र सभागम केन्द्र' आधुनिक साज–सज्जा एवं सर्वसुविधायुक्त होने के साथ–साथ सभागृह और कक्षों को राग आधारित पहचान दी जा सके, इस उद्देश्य से आंतरिक स्थलों के प्रत्येक कक्ष के लिए पृथकशः एक नाम दिया गया है।

इसमें "हंसध्वनि" नाम से मुख्य ऑडिटोरियम जिसकी क्षमता 1500 है, के अतिरिक्त एक "गौरांजनी" लघु ऑडिटोरियम क्षमता 212 (वातानुकूलित अलंकरण कक्ष एवं वातानुकूलित विश्राम रूम) के साथ "जयजयवन्ती" सभागार (बोर्ड रूम) क्षमता 80, "मालकौस" बैठक कक्ष (मिटिंग हॉल) क्षमता 40, "कौशिकी" उत्सव कक्ष (बैंक्वेट हॉल) क्षमता 350, "मल्हार" ऑडियो रिकार्डिंग स्टूडियो, "श्रीरंजिनी" वीडियो रिकार्डिंग स्टूडियो, "कुरंजिका" भोजन कक्ष, "वागीश्वरी" अभ्यास कक्ष (रिहर्सल रूम), "ललित" कला विथिकायें (आर्ट गैलरी) आदि सुविधाएं कलाप्रेमियों एवं जनसामान्य के लिए न्यूनतम दर पर उपलब्ध होंगी। वर्ष 2022–23 में (जनवरी 2023 की स्थिति में) नये सभागृह एवं विभिन्न स्थानों पर 230 दिवस कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं।

2. शासकीय संगीत एवं ललित कला महाविद्यालय –

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के नियंत्रणाधीन एवं संस्कृति संचालनालय के अन्तर्गत प्रदेश के **07–शासकीय संगीत महाविद्यालय** संचालित हैं। इन महाविद्यालयों में संगीत से संबंधित विषयों/विधाओं {गायन, हारमोनियम, तबला, सितार, वायलिन, सारंगी एवं नृत्य (कथक)} में सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा (विद् एवं कोविद्) स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षण कार्य संपादित किया जाता है :–

1. शासकीय संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर – माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर की स्थापना वर्ष 1918 में की गयी। इस महाविद्यालय के श्री पंचाक्षरी, श्री गंगाजलि वाले, पंडित राजा भैया पूछवाले, श्री बाला साहब पूछवाले, पंडित एकनाथ सारोलकर, श्री मुबारक अली खाँ, श्री रामचन्द्र अग्निहोत्री आदि कलाकारों ने संगीत के क्षेत्र में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्वालियर का नाम रोशन किया।

वर्तमान में महाविद्यालय में गायन, सितार, तबला, वेला, नृत्य आदि विषयों के अन्तर्गत डिप्लोमा, पोस्ट डिप्लोमा, स्नातक एवं स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम संचालित हैं। माह दिसम्बर, 2021 एवं 2022 में तानसेन समारोह में महाविद्यालय की ओर से शिक्षक एवं छात्र/छात्राओं द्वारा प्रथम प्रस्तुति दी गई।

शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर म.प्र. में एकमात्र ऐतिहासिक महाविद्यालय है, जो अपने 105 वर्ष पूर्ण कर चुका है। वर्तमान सत्र में छात्र/छात्राओं की कुल संख्या 460 है।

2. लता मंगेशकर शासकीय संगीत महाविद्यालय, इंदौर – शासकीय संगीत महाविद्यालय, इन्दौर की स्थापना सन् 1935 में हुई। सन् 1965 से महाविद्यालय स्वयं के भवन में संचालित हो रहा है। महाविद्यालय में कई प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा संगीत की शिक्षा प्राप्त की गयी, जिनमें प्रो0 शशिकांत ताम्बे, श्री रामदास मुंगरे, ख्यात ध्रुपद गायक पवार बंधु आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विश्व संगीत एवं योग दिवस, गुरू पूर्णिमा महोत्सव, भातखण्डे पुण्यतिथि तथा वार्षिक उत्सव के अवसर पर आयोजित संगीत सभाओं में देश के प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियां दी जाती हैं। महाविद्यालय के अमीर खां सभागार में देश के लब्ध प्रतिष्ठित मूर्धन्य कलाकारों, उस्ताद अमीर खां, भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जितेन्द्र अभिषेकी, विदूषी मालिनी राजुरकर, पंडित कुमार गंधर्व, उस्ताद जहांगीर खां, पंडित अम्बादास पंत आगले, पंडित रूपक कुलकर्णी, पंडित राम देशपाण्डे के द्वारा मंचीय प्रस्तुतियां दी गई हैं।

महाविद्यालय में वर्तमान में गायन, तबला, सितार, वायलिन तथा कथक नृत्य विषय में डिप्लोमा के साथ ही स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पाठ्यक्रम की शिक्षा प्रदान की जाती है। महाविद्यालय में वर्तमान में 500 विद्यार्थी अध्ययनरत् है। महाविद्यालय में श्री किरण मांजरेकर जी की अध्यक्षता में जनभागीदारी समिति का गठन किया गया है। मान. मुख्यमंत्री महोदय द्वारा महाविद्यालय का नाम लता मंगेशकर के नाम पर ''लता मंगेशकर शासकीय संगीत महाविद्यालय, इंदौर'' किया गया है।

3. शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय, उज्जैन – शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय, उज्जैन मध्यप्रदेश का संगीत के क्षेत्र का द्वितीय प्राचीन महाविद्यालय है, जिसकी स्थापना सत्र 1926 में हुई थी। वर्तमान में संगीत से संबंधित शास्त्रीय गायन, तबला, सितार, कथक, नृत्य में स्नातक/स्नातकोत्तर /डिप्लोमा तथा हारमोनियम, वायलिन एवं सारंगी में डिप्लोमा तथा सुगम संगीत में संगीतिका जूनियर, सीनियर स्तर की कक्षाओं का नियमित संचालन किया जा रहा है।

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विश्व योग एवं संगीत दिवस, गुरू पूर्णिमा, पंडित विष्णुनारायण भातखण्डे स्मृति प्रसंग, लता मंगेशकर सुगम संगीत की प्रतियोगिता आदि आयोजनों में देश के प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियॉ दी जाती है। शैक्षणिक सत्र 2022–23 में कुल 252 विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं।

4. शासकीय संगीत महाविद्यालय, मंदसौर – इस संस्थान की स्थापना वर्ष 1941 में हुई थी। महाविद्यालय वर्तमान में स्वयं के भवन में संचालित हो रहा है। शिक्षण कार्य के अन्तर्गत संगीत की विभिन्न विधायें यथा गायन, तबला, वायलिन एवं नृत्य विषय में विभिन्न स्तरीय पाठ्यक्रम का अध्यापन कराया जा रहा है।

माह जून 2022 को महाविद्यालय द्वारा योग एवं संगीत दिवस के अवसर पर शास्त्रीय संगीत सभा तथा जुलाई 2022 में गुरू पूर्णिमा के अवसर पर शास्त्रीय संगीत सभा का आयोजन महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा किया गया। शासन द्वारा मनाया जाने वाले भारत पर्व एवं स्थानीय प्रशासन के विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों में महाविद्यालय की सक्रिय भागीदारी रहती है। चालू शैक्षणिक सत्र में विभिन्न विधाओं में कुल 84 विद्यार्थियों ने प्रवेश प्राप्त किया है।

5. शासकीय संगीत महाविद्यालय, धार – महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1945 में हुई। वर्तमान में यह महाविद्यालय, जिला प्रशासन के भवन में संचालित किया जा रहा है। महाविद्यालय में गायन, वायलिन तथा तबला की कक्षायें संचालित हैं, जिसमें संगीत कला प्रवेशिका प्रथम से संगीत कला विद् अंतिम तक 6 वर्षीय डिप्लोमा तथा बी0पी0ए0 (04 वर्षीय स्नातक उपाधि) तक अध्ययन–अध्यापन का कार्य किया जाता है। चालु शैक्षणिक सत्र में विभिन्न विधाओं में कुल 74 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है।

महाविद्यालय में महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विश्व योग एवं संगीत दिवस, गुरू पूर्णिमा, पंडित विष्णुनारायण भातखण्डे स्मृति प्रसंग का आयोजन किया जाता है।

6. शासकीय संगीत महाविद्यालय, मैहर – शासकीय संगीत महाविद्यालय, मैहर की स्थापना वर्ष 1956 में हुई। महाविद्यालय में शास्त्रीय संगीत की गायन एवं कथक (नृत्य) के अतिरिक्त वायलिन, सितार, सरोद, तबला विषय का अध्ययन डिप्लोमा एवं स्नातक स्तर की कक्षाओं का अध्यापन किया जाता है। महाविद्यालय में लगभग 257 विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकृत है। महाविद्यालय में अनेक गतिविधियां जैसे वार्षिकोत्सव, बसंत पंचमी, विश्व योग एवं संगीत दिवस, गुरूपूर्णिमा तथा पं. विष्णुनारायण भातखण्डे स्मृति समारोह आदि आयोजित किये जाते है।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब द्वारा 1918 में स्थापित किया मैहर वाद्ययंत्र (मैहर बैण्ड) महाविद्यालय के अन्तर्गत संचालित है, जिसमें राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हासिल किया है। मैहर में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह आयोजन में मैहर बैण्ड की विशेष प्रस्तुति रखी जाती

है। शास्त्रीय संगीत के अत्यन्त दुर्लभ वाद्यों का संग्रहण तथा उन वाद्यों का वादन आज भी मैहर वाद्यवृन्द (मैहर बैण्ड) में अनवरत जारी है। मैहर वाद्यवृन्द (मैहर बैण्ड) को भारत की अनेक संस्थाओं द्वारा अनेकों सम्मान से नवाजा गया है। मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा भी 18 नवम्बर 2018 को मैहर वाद्यवृन्द (मैहर बैण्ड) को शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया। चालू शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय में कुल 257 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है।

7. शासकीय संगीत महाविद्यालय, नरसिंहगढ़ – महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1945 में हुई। वर्तमान में यह महाविद्यालय जिला प्रशासन द्वारा आवंटित सह–प्रशिक्षण केन्द्र महादेवपुरी, जनपद पंचायत के भवन में संचालित हो रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में गायन, तबला, वायलिन एवं नृत्य विषय में विद्, कोविद् डिप्लोमा एवं बी.म्यूज (बी.पी.ए.), पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। साथ ही शैक्षणिक वर्ष 2022–23 से एम.ए./एम.पी.ए. (गायन तथा तबला विषय) पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किये गये है। चालू शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय में कुल 197 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

इसी प्रकार प्रदेश में **04–शासकीय ललित कला महाविद्यालय** संचालित हो रहे हैं। इन महाविद्यालयों में **ललित कला** से संबंधित समस्त विषय/विधा **{चित्रकला, मूर्तिकला एवं व्यवहारिक कला}** में **स्नातक एवं स्नातकोत्तर** में शिक्षण कार्य संपादित किया जाता है :–

8. शासकीय ललित कला महाविद्यालय, ग्वालियर :– गालव ऋषि की तपोभूमि ग्वालियर में कला परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं विस्तार के उद्देश्य से सन् 1954 में प्रसिद्ध कलागुरू स्वर्गीय श्री डी.डी. देवलालीकर के नेतृत्व में ललित कला शिक्षण संस्थान प्रारंभ किया गया। संस्था के प्रथम प्राचार्य के रूप में श्री डी.डी. देवलालीकर पदस्थ रहे। उल्लेखनीय है कि इस संस्थान में पदस्थ रहे, कला मनीषी प्राचार्यगणों तथा शिक्षकों की लगन तथा अध्यापन कार्य के प्रति समर्पण से यहां के अध्ययनरत विद्यार्थी आज देश–विदेश में कला जगत में नाम रोशन कर रहे हैं।

शा. ललित कला संस्थान, ग्वालियर में चित्रकला/मूर्तिकला/व्यवहारिक कला विषय में स्नातक/स्नातकोत्तर के अलावा एक वर्षीय सर्टिफिकेट कोर्स (चित्रकला/मूर्तिकला/व्यवहारिक कला) संचालित हैं। शिक्षण के साथ ही यहां के विद्यार्थियों द्वारा चित्रकला, मूर्तिकला की विभिन्न राज्य स्तरीय प्रदर्शनी आयोजित की जाती है।

वर्तमान में छात्र/छात्राओं की संख्या 240 यू.जी./पी.डी./सर्टिफिकेट कोर्स के छात्र/छात्राओं को नियमित रूप से चित्रकला/मूर्तिकला/व्यवहारिक कला के रूप अध्ययन कराया जा रहा है। विगत वर्षों की भॉति महाविद्यालय में कला के प्रति विभिन्न कार्य शालाऐं, सेमीनार आदि का आयोजन का प्रचार–प्रसार हो रहा है जिससे कला के क्षेत्र में विद्यार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। वर्तमान में विद्यार्थी राज्य स्तरीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यशालाओं में भागीदारी कर रहे है।

9. शासकीय ललित कला महाविद्यालय, इंदौर :– शासकीय ललित कला महाविद्यालय, इन्दौर की स्थापना सन् 1927 में ख्यात कलाकार श्री डी0डी0 देवलालीकर के प्रयासों से तत्कालीन महाराजा होलकर के सहयोग से हुई। महाविद्यालय में ख्यात चित्रकार श्री देवलालीकर जी द्वारा श्री एन.एस. बेन्द्रे, श्री डी.जे. जोशी तथा एम.एफ. हुसैन जैसे शिष्यों ने कला की शिक्षा प्राप्त की, जिन्होंने देश–विदेश में अपने गुरू तथा महाविद्यालय का नाम रोशन किया।

महाविद्यालय प्रारंभ में 1960 तक जे.जे.स्कूल ऑफ आर्ट मुम्बई से सम्बद्ध रहा। तत्पश्चात महाविद्यालय कुछ वर्ष इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से सम्बद्ध रहा। छत्तीसगढ़ के गठन के पश्चात महाविद्यालय को मध्यप्रदेश में कलाओं के संवर्धन हेतु स्थापित राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर की सम्बद्धता प्राप्त हुई।

महाविद्यालय में वर्तमान में चित्रकला तथा व्यवहारिक कला में चार वर्षीय बी.एफ.ए. स्नातक उपाधि तथा दो वर्षीय एम.एफ.ए. की स्नातकोत्तर उपधि की शिक्षा प्रदान की जाती है। वर्तमान में महाविद्यालय में कुल 118 छात्र–छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

10. शासकीय ललित कला महाविद्यालय, धार – महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1939 में हुई। वर्तमान में महाविद्यालय जिला प्रशासन के अन्तर्गत शासकीय विद्यालय के भवन में संचालित हो रहा है। इस महाविद्यालय को जिला प्रशासन द्वारा भूमि आवंटित हो चुकी है तथा भवन निर्माण आकल्पन/प्राक्कलन प्रक्रिया प्रचलित है।

उल्लेखनीय है कि इस महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर अनेक उच्चस्तरीय कलाकारों एवं कलाविदों ने, जिनमें श्री राजाभाऊ महुणकर, श्री दिनकर राव देव, श्रीधर राव मेहुणकर, श्री आर.एस. कानूनगो, श्री सास्वड़कर, श्री सातपुते, श्री चन्द्रावत आदि प्रमुख रहें, ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त कर, महाविद्यालय एवं धार शहर व प्रदेश का नाम रोशन किया।

महाविद्यालय में बी0एफ0ए0 चित्रकला चार वर्षीय पाठ्यक्रम एवं एम0एफ0ए0 चित्रकला 02 वर्षीय पाठ्यक्रम तथा सर्टिफिकेट कोर्स संचालित किये जा रहे हैं। वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2022–23 में कुल 43 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा विश्वविद्यालय की प्रवीण्य सूची में भी स्थान प्राप्त किया है। तानसेन समारोह, 2021 में छात्र–छात्राओं ने चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया एवं पुरस्कृत भी हुये। महाविद्यालय के विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहा है।

11. शासकीय ललित कला महाविद्यालय, जबलपुर – ललित कला महाविद्यालय जबलपुर की स्थापना 1961 में हुई। महाविद्यालय में चित्रकला, व्यवहारिक कला, मूर्तिकला के अन्तर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में उक्त संचालित पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की कुल संख्या 171 है।

महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव आयोजन एवं चित्रकला/व्यवहारिक कला/मूर्तिकला विषयों पर सेमीनार/कार्यशाला आयोजित की जावेंगी।

12. शासकीय संगीत एवं ललित कला महाविद्यालय, खण्डवा – शासकीय संगीत एवं ललित कला महाविद्यालय, खंडवा प्रदेश का ऐसा प्रथम संयुक्त महाविद्यालय है, जिसमें संगीत एवं ललित कला दोनों विधाऐं साथ में संचालित की जाती हैं। इस महाविद्यालय की स्थापना जून, 2013 में हुई। वर्तमान में संगीत से संबंधित विषय/विधा (गायन, तबला, सितार, हारमोनियम, कथक, वायलिन) में डिप्लोमा, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के एवं ललित कला विधा में (चित्रकला, मूर्तिकला एवं व्यवहारिक कला) के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में उक्त संचालित पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की कुल संख्या 285 है।

शैक्षणिक सत्र 2022–23 में माह जुलाई में सिरेमिक कार्यशाला, माह सितम्बर में भातखंडे स्मृति के अवसर पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। माह दिसम्बर में संचालनालय एवं यूनिसेफ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित ''आर्ट फॉर चेंज'' कार्यशाला महाविद्यालय में आयोजित की गई तत्पश्चात यूनिसेफ द्वारा आयोजित प्रर्दशनी कम्युनिकेशन फॉर चेंज में विद्यार्थियों की रवीन्द्र भवन, भोपाल में उपस्थिति रही। तानसेन समारोह, ग्वालियर के वृहद आयोजन में ललित कला के विद्यार्थियों द्वारा कार्यशाला में सहभागिता तथा संगीत के विद्यार्थियों हेतु शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

3. मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल –

वर्ष 2011 में विभाग के प्रशासकीय नियंत्रण अन्तर्गत म.प्र. नाट्य विद्यालय स्थापित किया गया। संस्थान की स्थापना पारम्परिक शास्त्रीय एवं आधुनिक रंगजगत संबंधी शिक्षण, प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन आदि में कला मनीषियों के सान्निध्य तथा सहयोग से कलाकारों को नाट्य प्रशिक्षण प्रदान करने आदि प्रमुख उद्देश्य के साथ की गयी।

मालवांचल लोक शैली पर आधारित नाट्य प्रस्तुति – मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के प्रत्येक सत्र के विद्यार्थियों को विद्यालय द्वारा प्रदान किये जाने वाले एक वर्षीय प्रशिक्षण में विविध शैलियों में से किन्ही चार शैलियों पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के सत्र 2020–21 के विद्यार्थियों के साथ श्री लोकेन्द्र त्रिवेदी, नई दिल्ली के निर्देशन में प्रथम नाट्य प्रस्तुति के रूप में मालवांचल लोक शैली पर आधारित नाट्य प्रस्तुति ''वराह मिहिर'' काल उपासक और खगोलशास्त्री का मंचन रवीन्द्र भवन सभागार, भोपाल में किया गया।

पाश्चात्य शैली पर आधारित नाट्य प्रस्तुति – मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के सत्र 2020–21 के विद्यार्थियों के साथ श्री सत्यव्रत राउत, हैदराबाद के निर्देशन में द्वितीय प्रस्तुति के रूप में यथार्थवादी/पाश्चात्य शैली पर आधारित नाट्य प्रस्तुति ''ए मिड समर नाइट्स ड्रीम'' तैयार की गई। उक्त नाट्य प्रस्तुति का मंचन रवीन्द्र भवन सभागार, भोपाल में किया गया।

नवागत नाट्य समारोह 2022 – मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष चयनित 15 विद्यार्थियों को अध्ययन अनुदान योजना के अन्तर्गत एक वर्ष की इर्न्टनशिप प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक विद्यर्थियों द्वारा चार नाट्य प्रस्तुतियाँ तैयार की जाती है, इस प्रकार एक सत्र में 15 विद्यार्थियों द्वारा 60 प्रस्तुतियाँ अलग–अलग शैलियों में तैयार की जाती हैं। अध्ययन अनुदान/इन्टर्नशिप के अंतर्गत प्रत्येक सत्र में योजना का लाभ प्राप्त किये 15 विद्यार्थियों के 60 नाटकों में से गठित विशेषज्ञ समिति द्वारा श्रेष्ठ नाटकों का चयन किया जाता है। चयनित नाटकों को भोपाल के आम दर्शकों के समक्ष मंचन के लिए नवागत नाट्य समारोह मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय द्वारा आयोजित किया जाता रहा है।

विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये नाटकों में से चयन समिति में उपस्थित विशेषज्ञों द्वारा चयनित एवं नवागत नाट्य समारोह 2022 में मंचित किये गये नाटक निम्नानुसार हैं :–

नाटक बल्लभपुर की रूपकथा (निर्देशक श्री प्रतीक शर्मा), चन्दा बेड़नी (निर्देशक श्री संजय सिंह, जादोन), चैनपुर की दास्तान (निर्देशक श्री अक्षय सिंह ठाकुर), शेरों की गिनती (निर्देशक श्री अंकित दास), बघेली लोक रंग संगीत (निर्देशक सुश्री आरती यादव), रियासत–ए–वियराघवगढ़ (निर्देशक श्री अनुदीप सिंह ठाकुर), एक फिल्म कथा (फिल्मीश) (निर्देशक श्री राजा सुब्रहमन्यम), दास्तान ए घरवाली (निर्देशक श्री दिनेश कुमार), पांचाली (निर्देशक सुश्री पूजा केवट), कौवाहकनी, (निर्देशक श्री उत्तम कुमार), वेणी (निर्देशक सुश्री नुपुर पाण्डे), ठीक तुम्हारे पीछे (निर्देशक श्री विकास राजपूत), गली दुल्हन वाली (निर्देशक सुश्री नयन रघुवंशी) प्रोग्रेस (निर्देशक श्री जयेश भार्गव), त्रिय (निर्देशक सुश्री आराधना परस्ते), महारथी (निर्देशक श्री अरूण ठाकुर) तीसरी कसम (निर्देशक श्री राजीव रंजन झा), टैक्स फ्री (निर्देशक श्री अंकित कुमार मिश्रा) एवं पहाड़ी लोक रंग संगीत (निर्देशक सुश्री अनिता बिटालु)।

11वें नवीन सत्र के विद्यार्थियों का चयन – मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के 11वें नवीन सत्र के 26 प्रशिक्षणार्थियों के चयन हेतु विद्यालय द्वारा भोपाल शहर में चार दिवसीय अंतिम चयन कार्यशाला का आयोजन नवीन रवीन्द्र भवन, भोपाल में किया गया। विस्तृत प्रचार–प्रसार के लिए राष्ट्रीय व प्रादेशिक स्तर पर कार्यशालाओं का **विज्ञापन माह–मार्च 2022** में देश के लगभग 10 प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

सत्र समाप्ति नाट्य समारोह 2022 – मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के सत्र 2020–21 के विद्यार्थियों के प्रशिक्षण समाप्ति के अवसर पर ''सत्र समाप्ति नाट्य समारोह'' रवीन्द्र भवन, भोपाल में आयोजित किया गया था। समारोह में विद्यार्थियों द्वारा एक वर्षीय पाठ्यक्रम में प्राप्त प्रशिक्षण के दौरान तैयार की गई दो नाट्य प्रस्तुतियाँ ''सब ठाठ पड़ा रह जाएगा'' निर्देशक श्री रंजीत कपूर, नई दिल्ली एवं ''वराह मिहिर'' निर्देशक श्री लोकेन्द्र त्रिवेदी, नई दिल्ली का प्रदर्शन किया गया है।

अकादमिक कक्षाएं – दिनांक 01 जनवरी से 31 दिसम्बर 2022 तक संचालित की गई कक्षाएं। मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय में आमंत्रित अतिथि व्याख्याताओं द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

भारत भवन द्वारा आयोजित आदरांजलि समारोह में मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के वर्तमान सत्र 2022–23 के विद्यार्थियों द्वारा आमंत्रित अतिथि व्याख्याता सुश्री अंजना पूरी के निर्देशन में तैयार रंग–संगीत की प्रस्तुति का मंचन किया गया।

शैक्षणिक भ्रमण – विद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार प्रत्येक सत्र के विद्यालय के लिए प्रतिवर्ष भ्रमणशील अध्ययन कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। वर्तमान सत्र के विद्यार्थियों द्वारा माह–अगस्त 2022 में वन विहार, मानव संग्रहालय, साँची एवं भीमबेटका का भ्रमण करवाया गया।

भारतीय शास्त्रीय नाट्य शैली पर आधारित नाट्य प्रस्तुति – मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के वर्तमान सत्र 2022–23 के विद्यार्थियों के साथ श्री सी. आर. जाम्बे, हेगुडू (बैंगलोर) के निर्देशन में भारतीय शास्त्रीय नाट्य शैली पर आधारित प्रस्तुतिपरक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 07 नवंबर से 19 दिसंबर 2022 तक किया गया था। उक्त प्रस्तुतिपरक कार्यशाला के दौरान नवीन नाट्य प्रस्तुति महाकवि भवभूति लिखित ''मालतीमाधव'' एवं महाकवि भास लिखित ''दूत वाक्यम्'' का निर्माण किया गया है।

कार्यशाला के दौरान भागवत एवं यक्षगान शैली का प्रशिक्षण विद्यार्थियों को प्रदान किया गया। उक्त प्रस्तुतिपरक कार्यशाला के दौरान तैयार की गई नाट्य प्रस्तुति महाकवि भवभूति लिखित ''मालतीमाधव'' एवं महाकवि भास लिखित ''दूत वाक्यम्'' का मंचन दिनांक 17 एवं 18 दिसंबर 2022 को परधोनी सभागार, जनजातीय संग्रहालय, भोपाल में किया गया।

4. राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर

विश्वविद्यालय की स्थापना – राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर अध्यदेश 2008 (क्रमांक 5 सन् 2008) के तहत 19 अगस्त 2008 को राजा मानसिंह तोमर एवं कला विवविद्यालय ग्वालियर में स्थापित किया गया। इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र विस्तारित कर संपूर्ण भारत करने हेतु विश्वविद्यालय प्रयासरत है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (पं.) साहित्य कुमार नाहर एवं कुलसचिव श्री दिनेश पाठक है।

परिसर निर्माण – राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु राज्य शासन द्वारा 20 एकड़ विश्वविद्यालय को आवंटित की गई है। विश्वविद्यालय की लगभग 04 एकड़ भूमि ग्वालियर जिला प्रशासन द्वारा किये गये विकास के कार्यों व संभागीय आयुक्त कार्यालय के निर्माण हेतु भूमि उपलब्ध कराये जाने के पश्चात वर्तमान में विश्वविद्यालय के पास अनुमानित रूप से 16 एकड़ भूमि ही शेष बची है। विश्वविद्यालय के विकास एवं निर्माण कार्यों के अंतर्गत ऑडिटोरियम निर्माण,

अकादमिक भवन निर्माण, बालक–बालिका छात्रावास, कुलपति–कुलसचिव आवास, शिक्षक एवं कर्मचारी आवास तथा अतिथि आवास गृह का निर्माण कार्य किया जाना प्रस्तावित है। सुरक्षा एवं अनुशासन की दृष्टि से सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिसर सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में है।

सम्बद्ध महाविद्यालय एवं छात्रों की संख्या – विश्वविद्यालय के स्थापना वर्ष 2008–09 में 18 शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे, जो अब बढ़कर कुल 131 हो गए हैं। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय अध्ययनशाला में संचालित संकायों यथा संगीत नृत्य, ललित कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अंर्तत वर्ष 2008–09 में 1761 विद्यार्थी अध्ययनरत थे, जो अब बढ़कर लगभग 15000 हो गए हैं। विश्विद्यालय एवं इससे सम्बद्ध महाविद्यालयों में नवीन प्रवेश एवं परीक्षा संबंधी प्रक्रिया को पूर्णतः ऑनलाईन किया गया है।

संचालित पाठ्यक्रम – वर्तमान में विश्वविद्यालय की अध्ययनशाला व संबंधित महाविद्यालयों के अंतर्गत विभिन्न संकायों में लगभग 42 पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति जी को अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली की राष्ट्रीय सांस्कृतिक समिति में बाहय विषय–विशेषज्ञ के रूप में नामित किया गया है। भारतीय सांस्कृतिक संबंद्ध परिषद् तथा भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय के अन्तर्गत संगीत नाटक अकादमी की साधारण सभा में बाहय विषय–विशेषज्ञ के रूप में नामित किया गया है।

शोध कार्यक्रम – विश्वविद्यालय में शोध कार्यक्रम 07 अप्रैल, 2013 से प्रारम्भ किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा अभी तक कुल 22 शोधार्थियों को उपाधि प्रदान की जा चुकी है। वर्तमान में विश्वविद्यालय में शोधार्थियों की संख्या 87 है।

विभागीय गतिविधियाँ – विश्वविद्यालय व स्पिक–मैके के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 18 अक्टूबर, 2022 को पदम भूषण पं. साजन मिश्र जी द्वारा विश्वविद्यालय में व्याख्यान प्रदर्शन कर प्रस्तुति दी। भारतीय सांस्कृतिक संबंद्ध परिषद विश्वविद्यालय के परस्पर सहयोग दिनांक 30 नवम्बर, 2022 को "सुरताल'' कार्यक्रम में नई दिल्ली से पधारे कलाकार उस्ताद असगर हुसैन द्वारा अपनी प्रस्तुति विश्वविद्यालय में दी। तानसेन समारोह की श्रृंखला में दिनांक 20 दिसम्बर, 2022 को पं. किरण देशपाण्डे व 21 दिसम्बर, 2022 को श्रीमती शाश्वती मण्डल वादी–सवादी के कार्यक्रम में विश्वविद्यालय में आगमन हुआ। विश्वविद्यालय द्वारा ग्वालियर अंचल के सर्वाधिक पुराने व विख्यात शिक्षण संस्थान जीवाजी विश्वविद्यालय के साथ एक दूसरे के परस्पर सहयोग व संसाधन के उपयोग हेतु एम.ओ.यू. संपादित किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय शिक्षण मण्डल के आर.एफ.आर.एफ. संस्थान, नागपूर से भी एम.ओ.यू. संपादित किया है।

उपलब्धियाँ – विश्वविद्यालय के छात्र श्री नितिन रघुवंशी द्वारा सत्र 2022–23 राजपथ परेड हेतु चयन किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय की छात्र–छात्राओं को जिला प्रशासन द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में सांस्कृतिक गतिविधियों हेतु आमंत्रित किया जाता है। वर्तमान सत्र में विश्वविद्यालय में तीन विदेशी छात्र–छात्राओं ने भी ललित कला संकाय व कथक संकाय में अध्ययनरत है। जबकि एक विदेशी को स्नातक की उपाधि प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय द्वारा विगत माह बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय युवा उत्सव में रंगमंच संकाय में लगातार पांचवे वर्ष प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रथम रनरअप की ट्रॉफी प्राप्त की। इसी क्रम में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित सेन्ट्रल जोन युवा उत्सव, सतना में रंगमंच संकाय में लगातार चौथी बार प्रथम स्थान प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विश्वविद्यालय को 12B योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में दिनांक 29 एवं 30 मार्च, 2019 को आयोग द्वारा गठित समिति द्वारा विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया गया। यू.जी.सी. द्वारा विश्वविद्यालय को पत्र क्रमांक F.No.9-172012(CPP-I/PU) Date 27 Jun 2019 द्वारा 12B का स्टेटस प्रदाय किया गया।

प्रस्तावित योजना – विश्वविद्यालय के विभागों (संगीत एंव कला) द्वारा तैयार पाठ्यक्रम का एम.ओ. यू. सभी विश्वविद्यालयों से करने हेतु प्रस्ताव प्रक्रियाधीन है। विश्वविद्यालय के सभी विभाग प्रदर्शनकारी हैं एवं छात्रों हेतु आवश्यक थियेटर के निर्माण हेतु भारत सरकार की Scheme of financial Assistance for Creation of Cultural Infastruture के अन्तर्गत स्टूडियो थियेटर के निर्माण का प्रस्ताव प्रक्रियाधीन है।

5. सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, सांची

मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्ष 2012 में गठित सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय अकादमिक उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है। बौद्ध एवं भारतीय दर्शन के विभिन्न आयामों पर गहन शोध एवं उच्चस्तरीय अध्ययन के उद्देश्य से स्थापित सांची विश्वविद्यालय में जुलाई 2022 से अकादमिक सत्र प्रारंभ हुआ।

सांची विश्वविद्यालय के सलामतपुर–सांची, रायसेन स्थित 120 एकड़ के परिसर में भवन निर्माण कार्य चल रहा है। प्रथम चरण हेतु तैयार की गई डीपीआर के आधार पर 5 भवनों को मध्यप्रदेश टूरिज्म द्वारा निर्मित किया जा रहा है। एक भवन का निर्माण कार्य जुलाई 2023 तक पूर्ण हो जाने की आशा है। नए अकादमिक सत्र 2023–24 का शुभारंभ इस भवन से ही किया जा सकता है। प्रथम चरण में अकादमिक परिसर, प्रशासनिक परिसर, महिला छात्रावास, पुरुष छात्रावास व पुस्तकालय भवन सम्मिलित हैं।

मध्यप्रदेश शासन से सलामतपुर परिसर में द्वितीय चरण की मंजूरी मिलने के बाद डीपीआर तैयार किया जा चुका है। जल्द ही दूसरे चरण के भवनों का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो जाएगा। द्वितीय चरण में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक गैर शैक्षणिक अधिकारी कर्मचारियों हेतु आवासीय परिसर का निर्माण किया जाना है।

अकादमिक सत्र 2022–23 में विश्वविद्यालय द्वारा 9 विभिन्न स्कूलों व 21 विभागों द्वारा 70 से अधिक नियमित पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विभिन्न विभागों के अंतर्गत इस सत्र में कुल 47 शोधार्थियों को चयनित किया गया। विभिन्न विभागों में स्नातकोत्तर, सर्टिफिकेट, डिप्लोमा छात्रों की कुल संख्या लगभग 250 है।

भारत शोध संस्थान के साथ मिलकर विश्वविद्यालय द्वारा 35 से अधिक लघु पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए। भारतीय ज्ञान परंपरा में नवाचार के अध्ययन हेतु एक केंद्र प्रारंभ किया गया।

विश्वविद्यालय द्वारा बौद्धिक पीठ का निर्माण किया गया। इस पीठ के तहत शोध गतिविधियां प्रारंभ की गई। बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक पर्यावरण व अन्य विषयों पर अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में सांची विश्वविद्यालय को विकसित करने के उद्देश्य से इस पीठ का गठन किया गया।

सांची विश्वविद्यालय द्वारा सत्र 2022–23 में अनुवाद व विवेचन हेतु एक विशेष केंद्र प्रारंभ किया गया। इस केंद्र के माध्यम से विश्वविद्यालय अमूल्य व अप्रचलित पुस्तकों, प्राचीन कृतियों को संरक्षित करेगा। इसके अतिरिक्त इस केंद्र द्वारा संस्कृत, पाली, चीनी भाषा, हिंदी, अंग्रेजी, फारसी इत्यादि का अनुवाद अन्य प्रचलित व बोली जाने वाली भाषाओं में किया जाएगा। विभिन्न पीएचडी शोधार्थियों द्वारा

परियोजनाओं के माध्यम से अनुवाद व शिक्षण हेतु अध्ययन सामग्री तैयार कराए जाने का निर्णय लिया गया ताकि सांची विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता का केंद्र बनाया जा सके।

विश्वविद्यालय द्वारा बौद्ध वास्तुकला, बौद्ध चिकित्सा पद्धति, तुलनात्मक बौद्ध लेख, व्यापार हेतु बौद्ध दर्शन, भारतीय हिमालयाई अध्ययन, विरासत प्रबंधन, भारतीय सौंदर्यशास्त्र, भारतीय सामाजिक नृविज्ञान भारतीय पत्रकारिता एवं जन संचार, प्रवासी और प्रवासन अध्ययन, भाषा विज्ञान, पाण्डुलिपि विज्ञान, विदेशी भाषा के तहत – फ्रेंच, कोरियन, जर्मन, जापानी, तिब्बती, सिंहली के पाठ्क्रमों हेतु सैद्धांतिक सहमति बनी।

विश्वविद्यालय द्वारा मई माह में छठवीं वार्षिक युवा इतिहासकार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'इतिहास पाठ्यक्रम : वर्तमान परिप्रेक्ष्य व चुनौतियाँ' विषय पर केंद्रित इस संगोष्ठी में भारत के प्रामाणिक इतिहास लेखन, तथ्य संकलन, इतिहास और दर्शन पुनर्लेखन व शोध पर चर्चा की गई। इस संगोष्ठी में 5 सत्रों में 150 से ज्यादा शोध पत्र पढ़े गए।

संगोष्ठी के माध्यम से शोधार्थी इतिहास में शोध की शास्त्रीय विधि से परिचित हो सके तथा भारतीय प्राथमिक स्त्रोतों के आधार पर इतिहास लेखन को करने के तरीकों के बारे में जाना।

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के साथ एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए। बिहार के मोतिहारी के महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय व गुजरात के अहमदाबाद स्थित भारत शोध संस्थान, सांची विश्वविद्यालय के साथ शैक्षणिक व शोध के क्षेत्र में एक–दूसरे को आपसी सहयोग प्रदान करेंगे।

इसी प्रकार भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित बौद्ध विधाओं पर गहन अध्ययन व शोध के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश सरकार संस्कृति विभाग के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्थान, लखनऊ के साथ एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए गए। दोनों ही संस्थान, बौद्ध तीर्थ स्थलों के सांस्कृतिक महत्व, कला, अवशेषों के संरक्षण के क्षेत्र में मिलकर कार्य करेंगे। जिसके अंतर्गत भारत में उपलब्ध बौद्ध विद्या संबंधित सामग्री का संकलन, इनका भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में अनुवाद, भारत में विदेशों से प्राप्त बौद्ध विद्या का तुलनात्मक अध्ययन शामिल होगा।

विश्वविद्यालय द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय– अमरकंटक, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर, पं. एस. एन. शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल, सत्यचेतना आश्रम– चेन्नई, अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान भोपाल, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान – भोपाल, ज्ञानगंगा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी– जबलपुर, कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस–भोपाल, शासकीय महाविद्यालय बैरसिया– भोपाल, शासकीय कन्या महाविद्यालय–उज्जैन, भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस से एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किए। इन एम.ओ.यू. के तहत शिक्षक व छात्रों के आदान–प्रदान पर सहमति बनी।

विश्व प्रसिद्ध सांची स्तूप पर 3000 से अधिक लोगों के साथ योग कर विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों ने अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। सांची विश्वविद्यालय के योग विभाग के विशेषज्ञों ने सभी को योगासन कराए। सांची विश्वविद्यालय के यू–ट्यूब लिंक के माध्यम से इसका सीधा प्रसारण किया गया। एक साथ देश के करोड़ों लोगों ने एक ही समय योग करने का विश्व रिकॉर्ड भी कायम किया।

विश्वविद्यालय के डॉक्टरों की एक टीम ने नर्मदापुरम (होशंगाबाद) के सुकतवा ब्लॉक के पांच गांव कासदा खुर्द, खकरापुरा, सहेली, केसला और मोरपानी का दौरा कर स्कूलों तथा घर–घर जाकर बच्चों, महिलाओं और पुरुषों की जांच की, उन्हें सिकल सेल एनीमिया के बारे में बताया। मध्यप्रदेश के

नर्मदापुरम इस चिन्हित ब्लॉक में प्रदेश के सबसे ज्यादा सिकल सेल एनीमिया के मरीज हैं। सुकतवा की जनसंख्या तकरीबन 523 है।

सांची विश्वविद्यालय में चेस ओलंपियाड टॉर्च रिले का जबरदस्त स्वागत किया गया। शतरंज खेल में जागरुकता लाने के उद्देश्य से आजादी के अमृत महोत्सव अंतर्गत देश के प्रतिष्ठित 75 स्थानों पर इस टॉर्च को ले जाया गया। वर्ल्ड चेस फेडरेशन द्वारा 44वें चेस ओलंपियाड का आयोजन इस वर्ष पहली बार भारत में किया गया। 188 देशों के 2000 प्रतिभागी चेस ओलंपियाड में शामिल हुए।

इंदौर में सांची विश्वविद्यालय व पीपल ऑफ इंडियन ओरिजिन चेंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा एक संयुक्त सम्मेलन को आयोजित किए जाने हेतु कार्ययोजना तैयार की गई। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने हेतु अप्रवासी भारतीयों को आमंत्रित किया गया। मॉरीशर, फोजी, न्यूजीलैंड, ब्रिटेन, कनाडा इत्यादि देशों से अतिथि सम्मिलित होंगे। सेमिनार का मुख्य विषय '5 बिलियन डॉलर इकोनॉमी में प्रवासी भारतीयों का योगदान' होगा। इस सम्मेलन में 150 से अधिक प्रवासियों के जुटने की उम्मीद है। इस सम्मेलन में मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ाए जाने पर चर्चा होगी।

मार्च 2023 माह में सातवें अंतर्राष्ट्रीय धर्म–धम्म सम्मेलन को आयोजित किए जाने हेतु योजना तैयार की गई। सांची विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश शासन व इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली के साथ मिलकर सातवां अंतर्राष्ट्रीय धर्म–धम्म सम्मेलन भोपाल में आयोजित करने जा रहा है। इस सम्मेलन में विश्व के अकादमिक, आध्यात्मिक, व्यवसायिक, कॉर्पोरेट व अन्य क्षेत्रों के विद्वान सम्मिलित होंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित लघु व दीर्घ परियोजनाओं के तहत विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को शोधकार्य आवंटित किए गए। इसमें सनातन और बौद्ध संस्कृति आधारित विभिन्न परियोजना शामिल हैं।

6. मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद को साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों को संचालित करने के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा नियमित अनुदान दिया जाता है। परिषद के अंतर्गत कार्यरत अकादमियों द्वारा संस्कृति विभाग के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अनुरूप कला और साहित्य के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए कार्य किये जाते हैं। परिषद अपने अनुषंगों के माध्यम से विभाग के लिए निर्धारित विभागीय योजनाओं को विस्तार देते हुए मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद के अन्तर्गत उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, साहित्य अकादमी, कालिदास संस्कृत अकादमी, सिंधी साहित्य अकादमी, मराठी साहित्य अकादमी, भोजपुरी साहित्य अकादमी, पंजाबी साहित्य अकादमी एवं मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी के माध्यम से निर्धारित विभागीय योजनाओं को क्रियान्वित करती रही है।

(1) उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल

1. गुरू पूर्णिमा संगीत समारोह नाना साहब पानसे–बकायन, जिला–दमोह – ख्यात मृदंगाचार्य नाना साहब पानसे की स्मृति में प्रतिवर्ष गुरूपूर्णिमा के अवसर पर बकायन, जिला–दमोह समारोह का आयोजन किया जाता है।

2. पं. नन्दकिशोर शर्मा स्मृति समारोह, भोपाल – भोपाल में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा को कायम रखने में प्रसिद्ध संगीतज्ञ पण्डित नन्दकिशोर शर्माजी का स्थान अग्रणीय है। आपने पुराने शहर भोपाल में सरस्वती कला मंदिर की स्थापना की जिसमें प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विद्यार्थियों

ने संगीत का प्रशिक्षण प्राप्त कर संगीत के क्षेत्र में भोपाल का गौरव बढ़ाया। आप हारमोनियम एवं जलतंरग वादक के साथ–साथ नवीन वाद्य शीर्ष तरंग के आविष्कारक भी थे।

3. मध्यप्रदेश नाट्य समारोह – प्रदेश के रंगकर्म पर केन्द्रित समारोह। यह प्रतिवर्ष मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में क्रमशः किया जाता है।

4. घुँघरू – युवा एवं प्रतिभाशाली कलाकारों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम संयोजित किया जाता है।

5. संगीत–नृत्य–नाट्य–ललित कलाएँ के क्षेत्र में कार्यशालाएँ – नृत्य प्रशिक्षण कार्यशाला–हिन्दुस्तानी शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियों के युवा कलाकारों की सहभागिता इस समारोह में होती है। ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान इच्छुक विद्यार्थियों में नृत्य के प्रति रूचि जागृत करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

नृत्य प्रशिक्षण कार्यशाला – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियों के युवा कलाकारों की सहभागिता उक्त समारोह में होती है। ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान इच्छुक विद्यार्थियों को नृत्य के प्रति रुचि जागृत करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

मूर्तिकार शिविर – शिल्प कला के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से शिविर का आयोजन।

नाट्य समारोह – रंगकर्म को प्रोत्साहन, संवर्धन एवं संरक्षण देने के उद्देश्य से आयोजित किया जाता है।

6. मध्यप्रदेश राज्य कला पुरस्कार प्रदर्शनी – मध्यप्रदेश के ललित कलाओं के 10 विख्यात कलाकारों के नाम पर केन्द्रित अकादमी ने वर्ष–2013 से रूपंकर कलाओं के 10 पुरस्कारों की घोषणा की है और प्रतिवर्ष ललित कलाओं के 10 पुरस्कार प्रदान करती है। प्रत्येक पुरस्कार की राशि रुपये 51,000/– है। यह पुरस्कार खजुराहो नृत्य समारोह के अवसर पर प्रदान किये जाते हैं।

7. दुर्लभ वाद्य प्रसंग–लतीफ खाँ स्मृति समारोह, भोपाल – प्रदेश के ख्यात सारंगी नवाज उस्ताद अब्दुल लतीफ खाँ की स्मृति में दुर्लभ वाद्यों पर केन्द्रित समारोह का आयोजन भोपाल में किया जाता है। इसी अवसर पर दुर्लभ वाद्य के किसी एक साधक को उस्ताद लतीफ खाँ सम्मान से सम्मानित किया जाता है। उस्ताद लतीफ खाँ स्मृति में आयोजित सारंगी समारोह के स्वरूप में परिवर्तन कर इसे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय दुर्लभ वाद्यों पर केन्द्रित देश के एकमात्र समारोह के रूप में स्थापित किया गया है।

8. कुमार गंधर्व समारोह, देवास – मूर्धन्य संगीतकार पण्डित कुमार गन्धर्व की स्मृति में अकादमी द्वारा वर्ष 1992–93 से देवास में प्रतिवर्ष कुमार गन्धर्व समारोह का आयोजन किया जाता है। इस समारोह में देश के प्रसिद्ध एवं युवा प्रतिभाशाली कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते है। समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष शासन द्वारा स्थापित कुमार गंर्धव सम्मान से किसी एक युवा कलाकार को सम्मानित भी किया जाता है।

9. तानसेन संगीत समारोह, ग्वालियर – संगीत सम्राट तानसेन की स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने के उद्देश्य से आयोजित यह देश का एक वृहद संगीत समारोह है जिसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है। इस छह दिवसीय समारोह में देश के वरिष्ठ एवं प्रतिभाशाली युवा कलाकार अपनी कला के माध्यम से संगीत सम्राट तानसेन को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर स्वयं को धन्य समझते हैं, अब तक इस समारोह में देश के अनेक शीर्षस्थ गायकों ने शिरकत की है। तानसेन समारोह को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप देते हुए संगीत सभाओं के अलावा अन्य प्रमुख गतिविधियाँ भी समारोह के साथ जोड़ी गई हैं जिसमें गमक, विश्व–संगीत, वादी–संवादी, प्रदर्शनियाँ एवं गुजरी संगीत सभा शामिल है।

10. राग अमीर समारोह, इन्दौर – वरिष्ठ संगीतज्ञ उस्ताद अमीर खाँ की स्मृति में अकादमी द्वारा इन्दौर में प्रतिवर्ष राग अमीर समारोह का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश के वरिष्ठ एवं युवा कलाकार उस्ताद अमीर खाँ को अपनी संगीतांजलि अर्पित करते हैं। इन्दौर में आयोजित किया जाने वाला यह राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है, जिसमें अब तक अनेक वरिष्ठ एवं युवा कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके है। संगीत सभाओं के अलावा ललित कलाओं पर केन्द्रित प्रदर्शनी राष्ट्रीय 'रंग अमीर', 'कला विमर्श' एवं 'रागदारी' संगीत व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाता है।

11. सुरयात्रा, भोपाल – विगत कुछ वर्षों से आयोजित इस समारोह को सुगम संगीत (फिल्मी गीतों पर आधारित) के कार्यक्रमों के शीर्ष कार्यक्रम के रूप में देखा जाता है। हिन्दी फिल्मों के सदाबहार गीतों पर केन्द्रित कार्यक्रम।

12. अलाउद्दीन संगीत समारोह, मैहर – विख्यात संगीत मनीषी पद्मविभूषण स्वर्गीय बाबा अलाउद्दीन खाँ की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से मैहर, जिला–सतना में अकादमी द्वारा वर्ष 1979–80 से प्रतिवर्ष इस समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत–नृत्य के वरिष्ठ एवं युवा कलाकार अपनी कला के माध्यम बाबा को अपनी संगीतांजलि अर्पित करते हैं। यह समारोह राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त समारोह है। इस तीन दिवसीय समारोह को विस्तृत स्वरूप देते हुए डोम पंडाल स्थापित कर संगीत सभाओं के साथ भारतीय लघुचित्र शैलियों में राग–रागिनियों पर एकाग्र चित्रों की प्रदर्शनी **'राग माला'** को संयोजित किया जाता है।

13. खजुराहो नृत्य समारोह, खजुराहो – अकादमी द्वारा आयोजित किया जाने वाला अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समारोह है। इस सात दिवसीय समारोह में देश के शीर्षस्थ और युवा प्रतिभाशाली नृत्यांगनाएँ एवं नर्तक अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

यह समारोह मध्यप्रदेश नहीं अपितु देश–विदेश के कला जगत में अत्यंत लोकप्रिय समारोह है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियों का यह प्रतिष्ठित समारोह है।समारोह की उत्सवधर्मिता की स्थायी पहचान के लिए भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपों की मुख्य प्रस्तुतियाँ आयोजित होती है। साथ ही अनुषांगिक गतिविधि नेपथ्य–शास्त्रीय नृत्य शैली की कलायात्रा, कलावार्ता–कलाकार और कलाविदों का संवाद, हुनर–देशज कला परम्परा का मेला, आर्ट–मार्ट– ललित कलाओं का अंतर्राष्ट्रीय मेला, अलंकरण–मध्यप्रदेश राज्य रूपंकर कला पुरस्कार एवं प्रदर्शनी शीर्षक से नवाचार के तहत विशेष रूप से आरम्भ की गई।

अंतर्राष्ट्रीय समकालीन नृत्य मंच 'वर्ल्ड डांस एलाइंस' के अंतर्गत एशिया पेसिफिक के छह देशों मलेशिया, ताईवान, सिंगापुर, ईरान (कनाडा), कोरिया एवं भारत के नृत्य प्रदर्शनों को क्युरेट कर इन देशों के एकल एवं समूह नृत्यों की भागीदारी को सात दिवसीय समारोह में छह दिवसीय सुनिश्चित की जा रही है। जिसमें प्रदर्शन, कार्यशालाएँ, व्याख्यान एवं परिचर्चा आदि की व्यवस्था स्टूडियो (सोलो स्पेस और कोरियोग्राफी स्पेस) निर्मित कर किया जायेगा। इन प्रस्तुतियों से विभिन्न देशों की संस्कृतियों को विशेषकर वहाँ के नृत्यों को जानने–परखने का अवसर प्राप्त होगा। इन नृत्यों के माध्यम से भारतीय नृत्यों में परस्पर संबंध स्थापित कर नई सम्भावनाओं को तलाशने का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

14. ध्रुपद केन्द्र, भोपाल – उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादेमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल के अन्तर्गत कार्यरत ध्रुपद केन्द्र की स्थापना 1 दिसम्बर 1981 को भोपाल में की गई थी। यह केन्द्र भारतीय शास्त्रीय गायन की दुर्लभ शैली ध्रुपद को गुरू–शिष्य परम्परा के अंतर्गत गहन प्रशिक्षण प्रदान करने का केन्द्र है। इस केन्द्र में डागर घराने के प्रख्यात ध्रुपद गायक एवं गुरू उस्ताद ज़िया फरीदुद्दीन डागर गुरू के पद पर दीर्घकाल तक आसीन रहे तत्पश्चात केन्द्र को समय–समय

पर विख्यात रूद्रवीणा वादक उस्ताद ज़िया मोहिउद्दीन डागर का भी मार्गदर्शन एवं सानिद्ध प्राप्त होता रहा। इस केन्द्र में गुरू–शिष्य परम्परा के अन्तर्गत छात्रवृत्ति पर विद्यार्थियों को ध्रुपद का गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

15. चक्रधर नृत्य केन्द्र, भोपाल – चक्रधर कथक नृत्य केन्द्र की स्थापना के पीछे शिक्षा के औपनिवेशिक दृष्टि को दुरूस्त कर पारम्परिक भारतीय शिक्षा को पुनः स्थापित करना रहा है। यह शिक्षा गुरू केन्द्रित हुआ करती हैं और इसका उद्देश्य ऐसे नृत्य और संगीत कलाकार (नर्तक या नर्तकी) तैयार करना होता है जो अपने प्रदर्शनों में पारम्परिक अन्तदृष्टि और नवाचार को निरन्तर प्रकट कर सके। यह प्रयोग गुरु–शिष्य सम्बन्धों के पारम्परिक दृष्टि को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इन केन्द्रों की स्थापना का प्रयोग एक तरह की परम्परा की सफल पुनर्स्थापना ही सिद्ध हुई क्योंकि इसमें प्रशिक्षित अनेक छात्र आज देश के महत्वपूर्ण नर्तक/नृत्यांगनाएँ हैं।

विगत लगभग तीन दशकों से गुरु–शिष्य परम्परा के अंतर्गत पारम्परिक रूप से कला विधाओं का प्रशिक्षण निरन्तर जारी है। आज नई पीढ़ी में कलाओं के विभिन्न अनुशासनों के प्रति गहरा रुझान देखने में आ रहा है। रायगढ़ घराने के महान नर्तक महाराज चक्रधर सिंह की स्मृति में कथक नृत्य शैली की शिक्षा लगभग चार दशकों से अकादमी द्वारा गुरू–शिष्य परम्परा के अन्तर्गत प्रदान की जा रही है। चक्रधर नृत्य केन्द्र से अनेक छात्राओं ने कथक नृत्य में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त किया।

16. कलावार्ता – रचनात्मक सृजनकर्म पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन।

17. तानसेन कलावीथिका – उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी की अनुषंग कार्यालय पड़ाव ग्वालियर में नियमित संचालित है।

18. बैजू बावरा संगीत समारोह – महान संगीतज्ञ बैजू बावरा की स्मृति में इस वर्ष तीन दिवसीय कार्यक्रम चंदेरी (जिला–अशोकनगर) में आयोजित किया गया है।

(2) जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल

अकादमी मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातीय और लोक समुदायों की संस्कृति एवं कला विषयक सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण, प्रकाशन और समारोहों के आयोजन तथा संग्रहालयों/संस्थानों का संचालन करती है। अकादमी द्वारा वित्त वर्ष 2022–23 में निर्धारित नौ समारोह, छः सर्वेक्षण–दस्तावेजीकरण कार्य किये गये हैं। श्रीराम राजा सरकार मंदिर–ओरछा में 'रामराज्य' कला दीर्घा की स्थापना की गई है, जिसमें विविध चित्र शैलियों में श्रीराम के चरित का चित्रांकन और श्रीराम राज्याभिषेक की झाँकी का प्रदर्शन किया गया है। ओरछा में प्रस्तावित 'साकेत' अन्तर्राष्ट्रीय रामायण कला संग्रहालय की स्थापना के लिये आवंटित भूमि पर बाउण्ड्री वॉल का निर्माण कराया गया है। अध्यात्म विभाग के लिये प्रदेश के मंदिरों के स्वरूप, महात्म्य, विशिष्टता, अनुष्ठान, पर्व–त्यौहार और मंदिर की स्थापना तथा मान्य लोक देवियों से सम्बन्धित विश्वासों, अनुष्ठानों, स्वरूप एवं अलंकरण विषयक समग्र वाचिक साहित्य का सर्वेक्षण/संकलन एवं दस्तावेजीकरण कार्य कराये गये हैं, जिन पर आधारित पृथक–पृथक पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। चौमासिक पत्रिका "चौमासा" के तीन अंकों तथा तीन अनुषंग पुस्तिकाओं यथा–बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोक कथाओं पर केन्द्रित 'सोने की चिड़िया', देवभूमि और भित्ति अंकन पर केन्द्रित 'अलंकरण' और सप्तमातृकाओं पर केन्द्रित 'सत्नाम का सत्य' के साथ ही दो स्वतंत्र पुस्तकों क्रमशः पशुचारक जाति ठाट्या, रेवांचल की वाचिक परम्परा के ऋतुगीत का प्रकाशन किया गया है। श्रीराम कथा में वर्णित वनवासी चरितों क्रमशः भक्तिमती शबरी, निशाद्राज गुह्य पर लीलानाट्य तथा पाठ आधारित चित्रांकन तैयार कराए गए हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी की घोषणा के क्रम में इन लीला नाट्यों तथा चित्र प्रदर्शनी को प्रदेश के 89 जनजातीय ब्लॉकों में संयोजित किया गया है।

(ख) मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, भोपाल

जनजातीय जीवन, देशज ज्ञान परम्परा और सौन्दर्यबोध पर एकाग्र जनजातीय संग्रहालय, भोपाल में संचालित है। संग्रहालय में वर्तमान में पाँच दीर्घाएँ हैं जो क्रमशः जनजातीय जीवन, कलाबोध, देवलोक, छत्तीसगढ़ी जनजीवन तथा जनजातीय बाल खेलों पर आधारित हैं। संग्रहालय में चालू वित्त वर्ष में निर्धारित सात समारोह आयोजित किये गये हैं। संग्रहालय की 'लिखन्दरा' प्रदर्शनी दीर्घा में प्रदेश के अलग–अलग जनजातीय चित्रकारों के सृजित चित्रों की प्रदर्शनी प्रतिमाह तथा विविध विषयों पर एकाग्र तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ और पाँच परिसंवाद संयोजित किये गये हैं। मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक समग्र को तैयार करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश के जनपदीय और जनजातीय व्यंजनों, पारम्परिक नृत्यों, विमुक्त जातियों की संस्कृति और कला परम्परा एवं मध्यप्रदेश की सातों प्रमुख जनजातियों के विविध सांस्कृतिक पक्षों के शोध–सर्वेक्षण एवं दस्तावेजीकरण का कार्य किया जा रहा है। प्रदेश के दस जिलों में विविध कलानुशासनों में सक्रिय और संभावनाशील कलाकारों के चिन्हांकन हेतु सर्वेक्षण कराया गया है।

(ग) 'त्रिवेणी' कला एवं पुरातत्व संग्रहालय–उज्जैन.

भारतीय ज्ञान परम्परा के शैव, शाक्त और वैष्णव परम्परा की विचारधाराओं की कला अभिव्यक्ति केन्द्रित संग्रहालय ***'त्रिवेणी'*** में इन तीनों ही परम्पराओं की चित्र एवं शिल्प अभिव्यक्तियाँ हैं। एक दीर्घा प्रदर्शनी के लिये है, जिसमें समय–समय पर अलग–अलग विषयों के चित्र प्रदर्शित किये जाते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आधारभूत आख्यानों के पुनर्पाठ के दृष्टिगत संग्रहालय द्वारा चित्रांकित कराये जा रहे अट्ठारह पुराणों में से ग्यारह का चित्रांकन पूर्ण हो चुका है। चार पुराण कथाओं का चित्रांकन निरंतरता में जारी है। चालू वित्त वर्ष में श्री कैलाशचन्द शर्मा–राजस्थान को जोधपुरी चित्र शैली में 'नारद पुराण' का चित्रांकन कार्य सौंपा गया है। सभी अट्ठारह पुराणों के मूल चित्रों के प्रदर्शन के साथ ही इन अभिव्यक्तियों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जायेगा। इन पुराणों के हिन्दी भाष्य का कार्य अध्येताओं से कराया जा रहा है। श्री हनुमान चालीसा की चालीस चौपाईयों आधारित चित्रांकन कार्य श्री सुनील विश्वकर्मा–वाराणसी से कराया गया है, जिसकी पहली प्रदर्शनी 'अन्तर्राष्ट्रीय रामलीला उत्सव–भोपाल' में संयोजित की गई है।

51 शक्तिपीठों के चित्रांकन का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही शैव, शाक्त और वैष्णव अनुष्ठान में उपयोगी दीपकों का वृहद संकलन किया जा रहा है। अब तक संकलित दीपकों की पहली प्रदर्शनी 'लोकरंग–भोपाल' में आयोजित की गई है।

सांदीपनि आश्रम में श्रीकृष्ण द्वारा सीखी चौदह विद्याओं और चौसठ कलाओं को नाथ द्वारा चित्र शैली में चित्रांकित किये जाने का कार्य कराया जा रहा है। साथ ही भगवान श्रीकृष्ण द्वारा आश्रम में सीखे गए ज्ञान के भाष्य गीता सार को मिट्टी शिल्प में सृजित कराकर प्रदर्शित करने की कार्रवाई प्रचलन में है। चौसठ कलाओं एवं चौदह विद्याओं का भारतीय ज्ञान परम्परा में पृथक–पृथक जगह उल्लेखित सामग्री से विशद् पाठ तैयार कराया गया है।

'त्रिवेणी' संग्रहालय और 'सर्वांग' दीर्घा के लिये वित्त वर्ष में प्रस्तावित दो संगोष्ठी, सात समारोहों का आयोजन किया गया है।

(घ) 'आदिवर्त' जनजातीय लोक कला राज्य संग्रहालय–खजुराहो

खजुराहो के सहस्त्राब्दी वर्ष में स्थापित संग्रहालय को माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा 'अन्तर्राष्ट्रीय कला केन्द्र' के रूप में विकसित किये जाने की घोषणा की गई है, जिसके परिपालन में

संग्रहालय को मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक गाँव के रूप में विकसित किया जा रहा है। पहले चरण में मध्यप्रदेश के जनजातीय आवासों तथा घरेलू उपयोग की वस्तुओं का निर्माण और प्रदर्शन किया जा चुका है। दीर्घा का सौन्दर्यीकरण और जनजातीय सौन्दर्यबोध के बहुपक्षों को प्रदर्शित किया गया है। जनजातीय मान्यताओं के देवलोक और परिवेश अनुसार विविध अलंकरण कराये जा चुके हैं। संग्रहालय का लोकार्पण 22 फरवरी, 2023 को प्रस्तावित है। प्रदेश के पाँचों सांस्कृतिक जनपदों–बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड, निमाड़, मालवा एवं चम्बल जनपदों के पारम्परिक आवासों के निर्माण के साथ ही दैनंदिनी और जीवनोपयोगी सामग्रियों का संकलन कराया जा रहा है। संग्रहालय में विविध शिल्प माध्यमों की कार्यशालाएँ निरन्तरता में आयोजित हो रही हैं।

(ड.) तुलसी शोध संस्थान–चित्रकूट

संत महाकवि तुलसी और भक्ति साहित्य केन्द्र के रूप में संस्थान की स्थापना की गई है। चालू वित्त वर्ष में संस्थान द्वारा प्रस्तावित तीन समारोह, पाँच व्याख्यान, पाँच भक्ति संगीत आयोजित की गई है।

(3) साहित्य अकादमी, भोपाल

निरंतर सृजन संवाद – भोपाल स्थित स्थानीय साहित्यकारों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से तथा देश–विदेश से भोपाल में पधारे साहित्यकारों को आमंत्रित कर निरंतर रचना पाठ एवं संवाद शृंखला का आयोजन 1994 से प्रारंभ किया गया है, जो प्रतिमाह किया जाता है। इस वर्ष इसमें स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर 'अमृत महोत्सव' को समर्पित 'हिंदी साहित्य में नदी विमर्श' विषय पर व्याख्यान एवं अर्द्धांग पर आधारित 'स्त्री विमर्श का भारतीय प्रतिमान' विषय पर रचनापाठ आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय एवं राज्य सम्मान नियम, 2017 साहित्यिक पुस्तकें और कई साहित्यिक पत्रिकाएँ, समस्त पाठक मंच केन्द्रों को साहित्य अकादमी के माध्यम से भेजी जाती हैं। प्रदेश में लगभग 158 पाठक मंच केन्द्र संचालित हैं। वर्ष में एक बार केन्द्र संयोजकों की कार्यशाला आयोजित की जाती है।

रचनाकारों की कार्यशाला – प्रदेशभर से युवा रचनाकारों को इस कार्यशाला में आमंत्रित किया जाता है। प्रत्येक वर्ष विधावार आयोजित कर इस कार्यशाला में लगभग 100 प्रतिभागियों की सहभागिता प्रतिवर्ष होती है। इस वर्ष यह कार्यशाला अमरकंटक में आयोजित की गई।

अलंकरण समारोह – कुल 13 अखिल भारतीय पुरस्कार प्रत्येक रुपये 1,00,000/– (एक लाख) एवं कुल 15 प्रादेशिक पुरस्कार प्रत्येक रुपये 51,000/– (इक्यावन हजार) के दिये जाते हैं। साथ ही मध्यप्रदेश की छः बोलियों का पुरस्कार भी दिया जाता है, जिसमें बघेली, बुंदेली, निमाड़ी, मालवी, भीली एवं गोंडी के नाम से दिया जाता है।

पाण्डुलिपि प्रकाशन योजना – प्रदेश के रचनाकारों को इस योजना का लाभ दिया जाता है, जिसमें 20 सामान्य वर्ग के रचनाकारों एवं 20 अनुसूचित जाति/जनजाति के रचनाकारों को प्रत्येक रुपये 20,000/– का सहायता अनुदान दिया जाता है।

रामनारायण उपाध्याय स्मृति समारोह में विमर्श एवं रचनापाठ – पं. रामनारायण उपाध्याय निमाड़ी के मर्मज्ञ एवं छोटे–छोटे भावपूर्ण आलेख लिखने के लिए साहित्य जगत में प्रसिद्ध रहे हैं। उपाध्याय की भाषाशैली पाठक के मन को छुये बगैर नहीं रह पाती थी। उनकी स्मृति को समर्पित विमर्श एवं रचनाओं का पाठ इस वर्ष से प्रारंभ किया गया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान स्मृति समारोह में विमर्श – भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीय काव्य धारा की प्रमुख कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का संबंध मध्यप्रदेश से रहा है। वर्ष 1988 से प्रतिवर्ष आयोजित हो रहा है।

स्वामी विवेकानंद स्मृति समारोह में विमर्श एवं रचनापाठ – वर्ष 2007 से प्रतिवर्ष उनके जयंती के अवसर पर विवेकानंद समारोह आयोजित किया जाता है। यह आयोजन विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों में युवा छात्रों, नागरिकों की उपस्थिति में किया जाता है।

प्रकाशन – साक्षात्कार पत्रिका : रचना, विचार और आलोचना की मासिक पत्रिका 'साक्षात्कार' वर्ष 1976 से निरंतर प्रकाशित हो रही है। हिंदी जगत की बहुचर्चित पत्रिका साक्षात्कार में वरिष्ठतम साहित्यकारों से लेकर युवा रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं। **साहित्यिक गजेटियर** : जिलों के साहित्यिक गजेटियर भी तैयार किये जा रहे हैं। बघेली साहित्य का इतिहास, बुंदेली साहित्य का इतिहास, निमाड़ी साहित्य का इतिहास एवं मालवी साहित्य का इतिहास। साथ ही इस वर्ष 2022–2023 में महत्वपूर्ण पुस्तकें 'मध्यप्रदेश के साहित्यकार', 'स्वतंत्रता संग्राम के जनजातीय योद्धा', साहित्य के महावीर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' जैसी कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन। इसके अतिरिक्त दुर्लभ पुस्तकों का पुनर्प्रकाशन भी अकादमी द्वारा किया जाता है।

(4) कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन

सारस्वतम् परिचर्चा/व्याख्यान – महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के सहकार से स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृतज्ञों का अवदान शीर्षक व्याख्यान एवं परिचर्चा का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय रामटेक, नागपुर के कुलपति, प्रो. मधुसूदन पेन्ना थे। अध्यक्षता पूर्व संभागायुक्त डॉ. मोहन गुप्त ने की।

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुना के सहकार से स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृतज्ञों का अवदान शीर्षक व्याख्यान सह परिचर्चा का अयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. गोविन्द मसूरे, सीहोर थे। अध्यक्षता डॉ. विष्णुनारायण तिवारी, ग्वालियर ने की।

संस्कृत विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के सहकार से व्याख्यान आयोजित हुआ। इसमें प्रो. इला घोष, जबलपुर ने राजशेखर की शोध दृष्टि शीर्षक व्याख्यान दिया। प्रो. रामविनय सिंह, देहरादून विशिष्ट अतिथि थे तथा अध्यक्षता प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने की।

कलाशिविर – **(1) पाटनगढ़,** (जिला–डिण्डौरी) में वनजन कलाशिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन के मुख्य अतिथि पद्मश्री अर्जुन ध्रुर्वे थे। समापन के मुख्य अतिथि पद्मश्री दुर्गाबाई व्याम थीं। अध्यक्षता प्रो. श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी, कुलपति, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक ने की। इस शिविर में कालिदास साहित्य पर केन्द्रित गोदना, गोंड, कोरकू, बंजारा, भील–भिलाला शैली में चित्रांकन किया गया। इस अवसर पर 40 जनजातीय छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षण भी दिया गया। **(2) वर्णागम शिविर, उज्जैन** – धातु चित्र उत्कीर्णन कला (नक्काशी) पर केन्द्रित वर्णागम शिविर का आयोजन उज्जैन में किया गया। वरिष्ठ चित्रकार डॉ. श्रीकृष्ण जोशी मुख्य अतिथि थे तथा अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बालकृष्ण शर्मा ने की। इस शिविर में खजुराहो के पाँच कलाकारों ने धातु पात्रों पर कालिदास साहित्य का चित्रांकन किया। इस शिविर में पन्द्रह से अधिक कलाकारों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का समापन वरिष्ठ रंगकर्मी श्री श्रीपाद जोशी, उज्जैन के मुख्य आतिथ्य में हुआ।

(3) समरस कला शिविर, खजुराहो – खजुराहो में मेघदूतम पर केन्द्रित बिहार की मंजूषा कलाशैली पर केन्द्रित समरस कला शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन विधि पद्मश्री डॉ. अवध किशोर जड़िया एवं मंजूषा कलागुरु श्री मनोज कुमार पण्डित के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। इस शिविर

में ग्यारह कलाकारों ने चित्रांकन किया तथा सत्रह कलाकारों को इस शैली का प्रशिक्षण भी दिया।

नाट्य समारोह, उज्जैन –

(1) बाल नाट्य समारोह – संस्कृत नाट्य के संस्कारों के पोषण के उद्देश्य से बाल नाट्य समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि महापौर उज्जैन श्री मुकेश टटवाल तथा प्रो. केदार नारायण जोशी थे। इस अवसर पर 15 वर्ष तक के बच्चों ने मध्यमव्यायोगः, भगवदज्जुकम्, अमरबलिदानम् एवं रघुवंशवर्धनम् की प्रस्तुति की। समापन के अतिथि वरिष्ठ इतिहासविद् डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन थे।

(2) संस्कृत नाट्य समारोह – संस्कृत नाट्य के संवर्धन के उद्देश्य से संस्कृत नाट्य समारोह का आयोजन किया गया। सभापति नगर निगम, उज्जैन श्रीमती कलावती यादव मुख्य अतिथि थीं तथा अध्यक्षता म.सान्दीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के सचिव डॉ. विरूपाक्ष जड्डीपाल थे। मुम्बई मराठी साहित्य संघ द्वारा नृत्यकुटम्, मालवा सांस्कृतिक परिषद्, उज्जैन द्वारा अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की प्रस्तुति की गई।

कार्यशाला –

(1) शास्त्रीय नृत्य प्रशिक्षण कार्यशाला – इस कार्यशाला में कथक नृत्य का प्रशिक्षण श्रीराम भारतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के श्री धीरेन्द्र तिवारी द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि म.प्र. जन अभियान परिषद् के उपाध्यक्ष श्री विभाष उपाध्याय तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो. राम राजेश मिश्र थे। इस कार्यशाला में 150 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए।

(2) संस्कृत नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला – संस्कृत रंगकर्म के संस्कारों के पोषण के उद्देश्य से इस कार्यशला का आयोजन किया गया। वरिष्ठ रंगकर्मी श्री लोकेन्द्र त्रिवेदी, नईदिल्ली ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया। इस कार्यशाला में 35 छात्र–छात्राओं को मालविकाग्निमित्रम् नाटक का प्रशिक्षण दिया गया, जिसकी प्रस्तुति अ.भा.कालिदास समारोह के अवसर पर की गई।

संस्कृत सम्भाषण शिविर – संस्कृत के व्यावहारिक प्रशिक्षण के उद्देश्य से जनजातीय बहुल क्षेत्र रामपुरा, जिला–सीहोर, बैकल्दा, जिला–झाबुआ तथा डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) में संस्कृत सम्भाषण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के 250 छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

संस्कृत गौरव दिवस, विदिशा – संस्कृत के पारम्परिक वैशिष्ट्य को रेखांकित करने के उद्देश से संस्कृत गौरव दिवस का आयोजन विदिशा में किया गया। मुख्य अतिथि नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष श्री मुकेश टण्डन तथा जिला कलेक्टर श्री उमाशंकर भार्गव थे। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम पर केन्द्रित नाटक भारतविजयम् की प्रस्तुति की गई। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में विद्वानों ने शोधपत्रों की प्रस्तुति की।

अ.भा.कालिदास समारोह, उज्जैन – विक्रम विश्वविद्यालय के सहकार से अ.भा.कालिदास समारोह का आयोजन 4 से 10 नवम्बर, 2022 तक किया गया। उद्घाटन मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल के मुख्य आतिथ्य में आमंत्रित विद्वानों ने कालिदास साहित्य केन्द्रित व्याख्यान दिए तथा संगोष्ठी के सत्रों में शोधपत्रों का वाचन किया। अ.भा. संस्कृत वादविवाद, प्रादेशिक श्लोकपाठ तथा हिन्दी वादविवाद प्रतियोगिताओं में देशभर से समागत छात्र–छात्राओं ने प्रतिभागिता की। विक्रमोर्वशीयम् पर केन्द्रित चित्रकला प्रतियोगिता/प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

कल्पवल्ली, उज्जैन – वैदिक परम्परा के संवर्धन के उद्देश्य से कल्पवल्ली का आयोजन किया गया। इसमें आमन्त्रित विद्वानों एवं बटुकों ने वेदपाठ किया तथा अद्वैत वेदान्त पर केन्द्रित शोधपत्रों की

प्रस्तुति की।

वाल्मीकि समारोह, चित्रकूट – महर्षि वाल्मीकि के साहित्य पर केन्द्रित वाल्मीकि समारोह का आयोजन किया गया। इसमें आमंत्रित विद्वानों ने शोधपत्र वाचन किया तथा जनजातीय कलाकारों ने लोकगायन एवं लोकनृत्यों की प्रस्तुति की।

कालिदास प्रसंग, मन्दसौर – कालिदास प्रसंग के उद्घाटन के मुख्य अतिथि विधायक श्री यशपाल सिंह सिसौदिया तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो. बालकृष्ण शर्मा अध्यक्ष थे। इस अवसर पर लोकप्रिय व्याख्यान एवं शोध संगोष्ठी के सत्र आयोजित हुए। सुश्री बाला विश्वनाथन, कर्नाटक एवं श्री प्रफुल्लसिंह गहलोत, देवास के निर्देशन में कथक–भरतनाट्यम् नृत्य की प्रस्तुति हुई। प्राचीन अस्त्र–शस्त्रों एवं कालिदास साहित्य पर केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी का संयोजन भी हुआ।

आगामी कार्यक्रम – कला–पंचांग अनुसार जनवरी से मार्च, 2023 में ग्वालियर में अ.भा.भवभूति समारोह, जबलपुर में अ.भा.राजशेखर समारोह, धार में भोज समारोह, ओंकारेश्वर में शांकर समारोह तथा उज्जैन में अ.भा.संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

प्रकाशन – अकादमी द्वारा ''बदरा भईल मोरा दूत'' मेघदूतम् का भोजपुरी अनुवाद प्रकाशित किया गया। इस के साथ संस्कृत पत्रिका 'दूर्वा' एवं 'कालिदास' शोधपत्रिका के दो अंकों का प्रकाशन किया गया। कालिदास सूक्तिमाला एवं समाचार पत्रिका वृत्तान्त का प्रकाशन प्रवर्तित है।

(5) सिन्धी साहित्य अकादमी, भोपाल

सिंधी साहित्य अकादमी की स्थापना सिंधी साहित्य, भाषा एवं संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण के लिये की गई है। अपने उददेश्य की प्रतिपूर्ति हेतु अकादमी वर्ष भर विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आयोजन के साथ–साथ प्रशिक्षण शिविर एवं कार्यशालायें भी आयोजित करती हैं। कोविड–19 के चलते ऑनलाईन गतिवधियां सम्पन्न। साहित्यिक गतिविधि अंतर्गत अकादमी वर्ष में दो बार सिन्धु मशाल का प्रकाशन जिसमें प्रदेश के साथ ही देशभर के साहित्यकारों के लेख प्रकाशित किये जाते हैं, साथ ही प्रदेश के साहित्यकारों की पाण्डुलिपि प्रकाशन हेतु आंशिक आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। वर्ष 2021–22 में निम्नानुसार गतिविधियां आयोजित की गईं :–

1. **चैतीचांद समारोह, इन्दौर एवं भोपाल, 2–3 अप्रैल 2022** – अकादमी द्वारा प्रदेश के विभिन्न जिलों में भगवान झूलेलाल जी का जन्मोत्सव चैतीचांद महोत्सव के रूप में सिंधी समाज में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भोपाल एवं इन्दौर में प्रदेश के सिन्धी कलाकारों एवं नाट्य मण्डली की प्रस्तुतियों के साथ सम्पन्न।

2. सिंधी भाषा दिवस, 10 अप्रैल 2022 – सिंधी भाषा को संविधान की अनुसूची–8 में शामिल किया गया। उसी उपलब्धि को यादगार बनाने हेतु सिंधी भाषा दिवस का आयोजन अकादमी द्वारा किया जाता है। देश एवं प्रदेश के सिंधी साहित्यकार एवं कलाकारों की प्रस्तुतियों के साथ सम्पन्न।

3. ग्रीष्मकालीन भाषा अध्यापन शिविर – सिंधी भाषा एवं संस्कृति के प्रति लगाव एवं सिखाने के उद्देश्य से प्रदेश के छः स्थलों यथा खण्डवा, इटारसी, ग्वालियर, सतना, शुजालपुर एवं सागर में बच्चों के लिये सिंधी भाषा देवनगरी लिपि के 12 दिवसीय शिक्षण शिविर आयोजित। विधा विशेषज्ञ द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

4. सम्राट डाहिर सेन स्मृति आयोजन, ग्वालियर – सिंध के महान सम्राट डाहिर सेन की स्मृति में सिंधी नाटक, व्याख्यान एवं गीत संगीत का आयोजन सम्पन्न किया जाता है।

5. सिन्धु दर्शन यात्रा – लेह लद्दाख में सिन्धु नदी के तट पर सिंधी सांस्कृतिक समागम महोत्सव का आयोजन किया जाता है। अकादमी द्वारा समारोह में साहित्यकार, कलाकार एवं पत्रकारों का प्रतिनिधि दल भेजा जाता है।

6. नारायण श्याम जन्म शताब्दी समारोह, भोपाल – सिंधी के महान कवि एवं साहित्यकार एवं गायक नारायण श्याम की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। यह वर्ष उनका जन्म शताब्दी वर्ष है उनकी स्मृति में वारीअ भरियो पलांदु सिन्धी अंतर्गत अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं नारायण श्याम की रचनाओं की सांगितिक प्रस्तुतियां।

7. आजादी का अमृत महोत्सव अंतर्गत, संत हिरदाराम नगर, 16 अगस्त 2022 – माखीअ खां मिठेरो, ही मुहिंजो वतनु हेमु कालानी केन्द्रित लधु नाटिका, देशभक्तिपूर्ण नृत्य एवं गीतों की प्रस्तुति, स्थानीय युवा कवियों का रचना पाठ एवं व्याख्यान।

8. सिन्धी अदब संगत अंतर्गत किशनचंद बेवस एवं खूबचंद पागल प्रेमी स्मृति संगोष्ठी, नर्मदापुरम – सिन्धी में मूर्धन्य साहित्यकारों एवं विभूतियों पर केन्द्रित अदबी संगत का आयोजन किया जाता है। किशनचंद बेवस एवं खूबचंद पर केन्द्रित अदबी संगत में प्रादेशिक कवियों द्वारा रचनापाठ एवं समृति गायन का कार्यक्रम किया गया।

9. संत कंवरराम स्मृति आयोजन, भोपाल – अमर शहीद संत कंवरराम जी की स्मृति में आयोजन किया जाता है। इस वर्ष वरसी महोत्सव अंतर्गत व्याख्यान एवं पारम्परिक भगत गायन का आयोजन सम्पन्न किया गया।

10. अर्जुन हासिद एवं वासदेव मोही स्मृति आयोजन, भोपाल – सदाहयात शायर अर्जुन हासिद एवं वासुदेव मोही स्मृति में अखिल भारतीय सिंधी कवि सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न किया गया।

11. सिन्धी नाटक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, जबलपुर – सिन्धु दर्पण ग्रुप, भोपाल द्वारा नाट्य मंचन एवं श्री नारी लच्छवानी, प्रिया ज्ञानचन्दानी, शुभम नाथानी भोपाल एवं निशा धामेचा नरसिंहपुर का गायन।

(6) मराठी साहित्य अकादमी, भोपाल

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के अन्तर्गत मध्यप्रदेश में मराठी कला, संस्कृति एवं साहित्य को प्रोत्साहन, संरक्षण देने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद के अन्तर्गत मराठी साहित्य अकादमी का गठन वर्ष–2010 में किया गया। तभी से अकादमी अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य की ओर अग्रसर है, अपने उद्देश्यों की पूर्ति के अनुक्रम में वित्तीय वर्ष 2022–23 में कला पंचाग अनुसार सम्पन्न गतिविधियां निम्नानुसार हैं :–

''स्वागत हे! नववर्ष'' इन्दौर। **''स्वागत हे! नववर्ष''** जबलपुर। **''लोकधारा–रंगयात्रा''** पीथमपुर (धार)। ''**पराक्रमाची ज्योत''** टिमरनी एकपात्रीय नाट्य प्रस्तुति। ''**दिवाली पहाट''** भोपाल। ''**दिवाली पहाट''** जबलपुर। '' **नवं कोरं''** इन्दौर में कविता एवं गझल की प्रस्तुति। मराठी नाटक **''क ताज्ञ मी क तार्थ मी''** बालाघाट। **कविवर्य भास्कर रामचंद्र तांबे कृति पुरस्कार–2019 की घोषणा** 1. **मराठी कविता अथवा नाट्य लेखन** के लिए **''असो आता चाड''** रचनाकार **श्री संदीप शिवाजीराव जगदाळे–पैठण (औरंगाबाद)। 2. मराठी कहानी अथवा कादम्बरी (उपन्यास)** के लिए **''कदाचित''** रचनाकार **श्री बा.बा. कोटंबे– परभणी (महा.)** पुरस्कार प्रदान किये जाने की घोषणा का विज्ञापन जारी किया गया। **कविवर्य भास्कर रामचंद्र तांबे कृति**

पुरस्कार–2020 की घोषणा 1. मराठी कविता अथवा नाट्य लेखन के लिए **''सुपारी.Com''** रचनाकार **श्री योगेश सोमण– पुणे (महा.) 2. मराठी कहानी अथवा कादम्बरी (उपन्यास)** के लिए **''खुरपं''** रचनाकार **सुश्री सुचिता घोरपडे–पुणे (महा.)** पुरस्कार प्रदान किये जाने की घोषणा का विज्ञापन जारी किया गया। ''**मकर संक्रमण व्याख्यानमाला''** जबलपुर। ''**मराठी साहित्य सम्मेलन''** इन्दौर। आवर्तन, बुरहानपुर। अलंकरण समारोह, भोपाल (मराठी भाषा गौरव दिवस)। मराठी लोकधारा, सौंसर। अथर्वनाद पत्रिका का प्रकाशन।

(7) भोजपुरी साहित्य अकादमी, भोपाल

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के अन्तर्गत संस्कृति परिषद् के अनुषंग के रूप में भोजपुरी साहित्य संस्कृति और कलाओं के संरक्षण, विकास और प्रोत्साहन के लिये भोजपुरी सहित्य अकादमी का गठन जुलाई, 2013 में किया गया। अकादमी अपने उद्देश्यों के अनुरूप भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, इतिहास, नृत्य संगीत, गीत, सिनेमा नाटक आदि विधाओं के संबंधित अकादमिक कार्यों और पारम्परिक समकालीन सृजनात्मकता को संरक्षित करने का कार्य कर रही है। वर्ष 2022–23 में विभाग द्वारा जारी कला पंचांग में निर्धारित समारोहों में से निम्नानुसार आयोजन अकादमी द्वारा किया गया है–

1. कजरी–बिरहा एवं महिन्दर मिसिर स्मृति समारोह – स्वतंत्रता के 75वें वर्षगांठ के अवसर पर **'कजरी–बिरहा एवं महिन्दर मिसिर स्मृति समारोह'** का दो दिवसीय आयोजन **डब्ल्यू.सी.एल. ऑफिसर्स क्लब सभागृह, पाथाखेड़ा (सारणी), जिला– बैतूल** में किया गया। इस दो दिवसीय समरोह में प्रथम दिवस **डॉ. अकेला भाई, सिवान (बिहार)** द्वारा **''भोजपुरी संस्कृति में कजरी एवं नारी शक्ति''** पर व्याख्यान दिया गया तथा **सुश्री अंजना नाथ, कलकत्ता** द्वारा ''**भोजपुरी पारम्परिक लोकगीत कजरी–बिरहा गायन''** की प्रस्तुति दी गई। समारोह के दूसरे दिवस **श्री सूर्यप्रकाश श्रीवास्तव (सत्यश्री), भोपाल एवं साथियों** द्वारा **''महिन्दर मिसिर की रचनाओं की संगीतमय''** प्रस्तुति दी गई।

2. ठुमरी समारोह– ठुमरी साम्राज्ञी पद्मविभूषण गिरिजा देवी की स्मृति में दो दिवसीय **''ठुमरी समारोह''** का आयोजन **मल्हार स्मृति सभागार, देवास** में किया गया। इस दो दिवसीय समारोह में प्रथम दिवस **श्री भोलानाथ मिश्र, दिल्ली एवं सुश्री नीना श्रीवास्तव, भोपाल** द्वारा **ठुमरी गायन** की प्रस्तुति दी गई। समारोह के दूसरे दिवस **सुश्री शाश्वती मण्डल, दिल्ली एवं श्री आशीष मिश्रा, वाराणसी** द्वारा **ठुमरी गायन** की प्रस्तुति दी गई।

3. छठ समारोह– छठ पूजन पर्व के अवसर पर दो दिवसीय **''छठ समारोह''** का आयोजन **सैर–सपाटा के समीप स्थित प्रेमपुरा घाट, भोपाल** में किया गया। इस दो दिवसीय समारोह में प्रथम दिवस **सुश्री सुलेखा रमैया, भागलपुर** द्वारा **छठ गायन** की प्रस्तुति दी गई। समारोह के दूसरे दिवस **श्री संजीव सिन्हा, जबलपुर एवं सुश्री अनमोल सिंह, भोपाल** द्वारा **छठ गायन** की प्रस्तुति दी गई। विगत वर्षानुसार इस वर्ष भी एक दिवसीय **''छठ समारोह''** का आयोजन **कांकरपुरा तालाब किनारे, महू** में किया गया। इस समारोह में सुप्रसिद्ध लोकगीत गायिका **सुश्री मैथिली ठाकुर, मधुबनी, बिहार** द्वारा **छठ गीतों** की प्रस्तुति दी गई। वर्ष 2022–23 में अकादमी द्वारा व्याख्यान/विमर्श से प्राप्त लेखों को एकत्रित कर पुस्तक के रूप प्रकाशित किया गया।

भावी योजना – भोजपुरी संस्कृति के मशहूर नाट्य सम्राट भिखारी ठाकुर, सिने संगीतकार चित्रगुप्त, मशहूर गीतकार मोती बीए तथा कालजयी रचना फिरंगियों के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने के उपरान्त इनसे संबंधित आयोजन/गतिविधियों की रूपरेखा निर्मित कर प्रस्तुत की जा रही है।

(8) पंजाबी साहित्य अकादमी, भोपाल

पंजाबी साहित्य अकादमी का गठन मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के अन्तर्गत मध्यप्रदेश में पंजाबी भाषा, साहित्य, कला, शिल्प, संस्कृति, रंगमंच, सिनेमा, नाटक एवं अन्य बहुविध रचनात्मक कार्यो के सम्मान, संरक्षण, संवर्धन, विस्तार, युवाओं को पंजाबी भाषा, परम्पराओं एवं संस्कृति के प्रति अभिरूचि और प्रोत्साहन के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति के लिये किया है।

1. पंजाबी विरसा – श्री गुरू तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व के अवसर पर केन्द्रित कार्यक्रम डी.जे. गोल्डी, लुधियाना के द्वारा लोकनृत्य एवं रंगले सरदार, अमृतसर द्वारा पंजाबी लोकगायन की प्रस्तुति कराई गई।

2. खालसा साजना दिवस – डबरा में सिख पंथ स्थापना दिवस के अवसर पर शब्द कीर्तन की प्रस्तुति एवं ग्वालियर संभाग के विभिन्न जिलों में सुन्दर दस्तार सजाओं प्रतियोगिता का आयोजन संपन्न कराया गया।

3. हिन्द दी चादर – श्री गुरू तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व के अवसर पर धर्म एवं राष्ट्ररक्षा हेतु दिये गये बलिदान गाथा व उनके जीवनवृत्त पर केन्द्रित ताल गुरू वेलफेयर सोसाइटी द्वारा लाईट एण्ड साउण्ड शो कार्यक्रम संपन्न कराया गया।

4. प्रगट भये श्री गुरूतेग बहादुर – श्री गुरू तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व के अवसर पर उनके व्यक्तित्व पर केन्द्रित कार्यक्रम में पंजाबी रंगमंच, पटियाला द्वारा लाइट एण्ड साउण्ड शो के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

5. प्रगट भये श्री गुरूतेग बहादुर – रवीन्द्र भवन, भोपाल, श्री गुरू तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व के अवसर पर केन्द्रित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल की उपस्थिति में व्याख्यान एवं विषय केन्द्रित नाट्य प्रस्तुति देश व पंजाब की ख्यातिनाम संस्था द्वारा प्रस्तुति की गई।

6. आजादी का अमृत महोत्सव – 75वां आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत दिनांक 13 अगस्त 2022 को इटारसी में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आजादी के संग्राम, देशभक्ति से प्रेरित सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही श्री पियूष मिश्रा द्वारा कृत ''गगन दमामा बाज्यो'' की प्रस्तुति एवं अकादमी द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं सम्पन्न कराई गई जिसमें भाग लेने वाले छात्र/छात्राओं को स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र एवं मैडल प्रोत्साहन स्वरूप प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सीताशरण शर्मा स्थानीय विधायक एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उपस्थित रहे।

7. दाता बंदी छोड़ दिवस – दिनांक 29 अक्टूबर 2022 मोहना में दाता बंदी छोड़ दिवस, गुरूगद्दी दिवस एवं दीपावली के अवसर पर श्री गुरूग्रंथ साहिब में विभिन्न रागों पर आधारित गुरूवाणी के बारे में विस्तार से संगोष्ठी, पंजाबी भाषा पर केन्द्रित निबंध प्रतियोगिता एवं श्री गुरतेज सिंह, ग्वालियर श्री सनमजीत सिंह, ग्वालियर द्वारा व्याख्यान प्रस्तुति का आयोजित की गई।

8. व्याख्यान एवं चित्र प्रदर्शनी – दिनांक 15 नवम्बर 2022 को भोपाल में श्री गुरूनानक देव जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर श्री गुरूनानक देव जी के समाजिक समरसता व कल्याणकारी शिक्षा पर केन्द्रित विचार गोष्ठी में सरदार बरजिन्दर सिंह, भोपाल, बीबी अमृत कौर, उज्जैन एवं डॉ. अखिलेश सिंह, भोपाल द्वारा व्याख्यान तथा संदेशों से वर्तमान युवा पीढ़ी को परिचित कराने हेतु केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी का आयोजन संपन्न कराया गया।

9. वीर बाल दिवस – देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी की घोषणा के परिप्रेक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के साहिबजादों द्वारा दिये गये बलिदान को पूरे देश व प्रदेश में वीर बाल दिवस के रूप में मनाये जाने के उद्देश्य से अकादमी द्वारा 11 से 19 दिसम्बर 2022 तक प्रदेश के भोपाल जबलपुर, इन्दौर, ग्वालियर, सागर, उज्जैन, शहडोल, चंबल एवं रीवा के विभिन्न जिलों में वीर बाल दिवस आयोजित किया गया। इसी श्रृंखला में 19 दिसम्बर 2022 को मुख्य कार्यक्रम भोपाल मे मा. संस्कृति मंत्री सुश्री उषा ठाकुर एवं प्रदेश के स्कूल शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार के आतिथ्य में लोक शिक्षण संचालनालय के संयुक्त तत्वाधान में संपन्न कराया गया जिसमे श्री गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादों एवं माता गुजरी जी पर केन्द्रित विशेष रूप से तैयार की गई लघु फिल्म की प्रस्तुति एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। प्रोत्साहन स्वरूप प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह, साहिबजादों के बलिदान पर केन्द्रित लघु पुस्तिका का वितरण प्रदेश के सभी संभागों के स्कूलो में स्कूल शिक्षण विभाग के माध्यम से किया गया।

10. प्रकाश पर्व – दिनांक 29 दिसम्बर 2022 को खण्डवा में श्री गुरू गोविन्द सिंह जी 356वें प्रकाश पर्व के अवसर पर रागी गायन एवं पंजाबी शस्त्र गतका कला का प्रदर्शन का कार्यक्रम श्री कलगीधर गुरुद्वारा, आनंद नगर, खण्डवा के सहयोग से संपन्न किया गया।

(9) मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल

भोपाल, बुरहानपुर एवं रतलाम में मुशायरा, सेमिनार, शामे ग़ज़ल एवं काव्य गोष्ठी आयोजित की गई इसके अलावा "सिलसिला" श्रृँखला के अन्तर्गत 51 ज़िलों में गोष्ठियाँ आयोजित की गईं। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव को समर्पित "तलाशे जौहर" के अन्तर्गत व्याख्यान एवं कार्यशाला भोपाल, नर्मदापुरम, जबलपुर, सागर, रीवा, शहडोल, ग्वालियर एवं मुरैना संभागों में आयोजित की गई थीं जिसमें चयनित रचनाकारों द्वारा तात्कालिक लेखन कार्य विशेषज्ञों के समक्ष पेश किया। उर्दू पुस्तक पर 06 अखिल भारतीय पुरस्कार रुपये 51,000/– एवं उर्दू पुस्तकों पर 13 प्रादेशिक पुरस्कार रुपये 31,000/– के दिये जाते हैं। पुस्तक प्रकाशन हेतु 06 शायरों/साहित्यकारों को बीस–बीस हज़ार रुपये की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई। प्रदेश की 13 लायब्रेरियों को आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई। उर्दू सप्ताह अंतर्गत नवम्बर, 2022 में प्रदेश के स्कूलों में प्रतियोगी आयोजन किये गए थे जिनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को प्रमाण पत्र दिये जायेंगे।

इस वर्ष 02 शायरों को इलाज हेतु रुपये पाँच–पाँच हज़ार की आर्थिक सहायता दी गई। प्रतिवर्ष त्रैमासिक तमसील (पत्रिका) प्रकाशित की जाती है। प्रतिवर्ष त्रैमासिक मौजे नर्मदा (खबरनामा) प्रकाशित किया जाता है। जिसमें अकादमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों एवं गतिविधियाँ प्रकाशित की जाती हैं। प्रदेश के हाईस्कूल, हायर सेकेण्ड्री स्कूल एवं म.प्र. उर्दू अकादमी की उर्दू कक्षा की परीक्षा में (उर्दू विषय में) 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने वालों को प्रथम पुरस्कार रुपये 2,000/– द्वितीय पुरस्कार रुपये 1,500/– एवं तृतीय पुरस्कार रुपये 1,000/– दिये जाते हैं। प्रदेश के छात्र–छात्राओं को पुरस्कार दिये जायेंगे। भोपाल, ग्वालियर, छतरपुर में उर्दू कक्षा की कक्षायें चलाई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त ग़ज़ल सिखाने की कक्षा, अरबी, फारसी एवं कैलीग्राफी की कक्षायें चलाई जा रही हैं।

7. भारत भवन न्यास, भोपाल

भारत भवन की स्थापना 13 फरवरी 1982 को हुई थी। भारत भवन एक बहुकला केन्द्र है जो श्यामला हिल्स पर बड़ी झील के किनारे सुविख्यात वास्तुविद चार्ल्स कोरिया द्वारा आकल्पित विशाल इमारत में स्थित है। इसके परिसर में अनेक दीर्घाएं, सभागार, संग्रहालय, पुस्तकालय, अभिलेखागार, कार्यशालाएँ आदि स्थित हैं। मध्यप्रदेश शासन द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित भारत भवन मध्यप्रदेश एक्ट 1951 के अन्तर्गत पंजीकृत एक स्वायत्त न्यास है।

भारत भवन का उद्देश्य कलाओं का संरक्षण, अनुसंधान, संवर्द्धन और विस्तार करते हुए सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्टता के राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में स्थापित होना, आदिवासी और लोक कलाओं के क्षेत्र में हो रहे व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन का संवर्द्धन, प्रोत्साहन और समर्थन करना, कलात्मक प्रस्तुतियों, प्रदर्शनों, मल्टी मीडिया प्रक्षेपों, प्रदर्शनियों, परिसंवादों, सम्मेलनों आदि के माध्यम से आलोचनात्मक संवाद का सक्रिय मंच तैयार करना, सृजनात्मक, कलात्मक प्रक्रियाओं के व्यवस्थित वैज्ञानिक अनुसंधान और समझ को समर्थन और प्रोत्साहन देते हुए विज्ञान और कलाओं के बीच के बौद्धिक अन्तराल को पाटना तथा कलाओं और संस्कृति के क्षेत्र में भावी अनुसंधानों के लिए अन्य राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ सम्पर्क एवं सहकार स्थापित करना है।

भारत भवन में रूपंकर, रंगमण्डल, वागर्थ, अनहद, छवि प्रभाग और विश्व कविता केन्द्र आदि प्रमुख प्रभाग कार्यरत हैं। वित्तीय वर्ष 2020–21 में कोविड–19 संक्रमण की स्थिति में भारत भवन में अब तक हुए कार्यक्रमों की रिकार्डिंग एवं फोटोग्राफी का डिजिटलाईजेशन के साथ ही ऑनलाइन कार्यक्रमों के साथ ही रूपाभ प्रदर्शनियाँ, प्रकृति और संस्कृति के अंतर्सम्बन्ध का बहुकला समारोह संस्कृति और प्रकृति समारोह आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत परम्परागत चित्रांकन शिविर, सुश्री कौशिकी चक्रवर्ती का गायन, लोकनृत्य, शास्त्रीय नृत्य, वैचारिक सत्र, ऋतुगीत एवं सुश्री मालिनी अवस्थी का गायन आयोजित किया गया। इस वित्तीय वर्ष में भारत भवन के 40वें वर्षगांठ समारोह के अंतर्गत छायाचित्रों की प्रदर्शनी, कविता पाठ, कहानी पाठ, फिल्म, नाट्य प्रस्तुति, नृत्य पर केन्द्रित प्रस्तुति तथा दिनमान समारोह के अतिरिक्त इस वर्ष आगामी माह में रूपाभ प्रदर्शनी, आसपास, कविता प्रसंग, महाभारत, रामायन पर केन्द्रित समारोह, अखिल भारतीय कला शिविरि, नृत्य कार्यशाला, कथा प्रंसग, परिसंवाद, नृत्य समारोह, परंपरा की संगीत सभाएं, पूर्वग्रह पत्रिका प्रकाशन आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाने है। भारत भवन में आने वाले कला प्रेमी यहां के रचनात्मक परिवेश में अपने को ऊर्जावान और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध पाते हैं इससे मध्यप्रदेश शासन भी संस्कृति के क्षेत्र में गौरवान्वित हो रहा है।

8. आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, भोपाल

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग के अधीन ''आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास'' मध्यप्रदेश पब्लिक ट्रस्ट एक्ट 1951 के अंतर्गत पंजीकृत न्यास है।

न्यास के उद्देश्य :– आदि शंकराचार्य की भव्य प्रतिमा की ओंकारेश्वर में स्थापना। आदि शंकराचार्य की प्रतिमा (एकात्मता की मूर्ति) के लिए पूरे प्रदेश के गाँव–गाँव से धातु, दान स्वरूप प्राप्त करना। भारतीय संस्कृति एकता के प्रतीक के रूप में आदि शंकर की प्रतिमा का प्रस्तुतीकरण। प्रतिमा स्थल के आस–पास सुव्यवस्थित जन–सुविधाएँ विकसित करना। ओंकारेश्वर पहुंचने वाले मार्गों के निर्माण और देख–रेख के लिए संबंधित विभागों से सतत् समन्वय करना। भारतीय अद्वैत ज्ञान और दर्शन से जुड़ी गतिविधियों के प्रोत्साहन एवं विचारों के आदान–प्रदान के लिए कार्यशाला, सेमीनार, शोध, संगोष्ठी, व्याख्यान इत्यादि का आयोजन करना। शंकराचार्यजी के द्वारा प्रौन्नत भारतीय सांस्कृतिक एकता की प्रदर्शनी एवं इसका लेजर, प्रकाश एवं ध्वनि माध्यम से प्रदर्शन। न्यास के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भारत सरकार, राज्य सरकार, गैर शासकीय संस्थाओं/संगठनों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के निकायों तथा व्यक्तियों से संपर्क, समन्वय तथा सहयोग स्थापित कर क्रियान्वयन। आचार्य शंकर अंतर्राष्ट्रीय अद्वैत वेदान्त संस्थान की स्थापना एवं संचालन।

भाग– चार

सामान्य प्रशासनिक विषय

शासन की जनहितकारी नीतियों का, संस्कृति संचालनालय को आवंटित कार्यों के परिप्रेक्ष्य में सभी को लाभ मिले इस उद्देश्य से कार्य किया जाता है। अधिकारियों/कर्मचारियों की समस्याओं के निराकरण हेतु कर्मचारी कल्याण अभियान के अंतर्गत निर्धारित बिंदुओं पर भी कार्यवाही की जाती है।

संयुक्त परामर्शदात्री समिति की बैठक आयोजित की जाती है।

न्यायालयीन प्रकरणों के शीघ्र निपटारे के लिए समय पर जवाबदावे प्रस्तुत किये गये और प्रकरणों में प्रस्तुतकर्ता अधिकारियों की नियुक्तियां की गईं। संचालनालय के कर्मचारियों एवं महाविद्यालयों से संबंधित विभिन्न न्यायालयों में विचाराधीन प्रकरणों में कार्यवाही जारी है। संचालनालय में विभागीय जांच का कोई प्रकरण लंबित नहीं है।.

संचालनालय से संबंधित विधानसभा में माननीय सदस्यों द्वारा सीधे संस्कृति विभाग से अथवा अन्य विभागों के माध्यम से पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर समय पर प्रशासकीय विभाग को उपलब्ध कराये गये।

भाग– पांच

अभिनव योजनाएं

1. प्रत्येक आंचलिक बोली के रचनाकार को वार्षिक आधार पर सम्मानित करने की योजना है।
2. लोक कलाकार कल्याण मण्डल का गठन किये जाने की योजना है।
3. सांस्कृतिक विशिष्टता तथा आंचलिक बोली के आधार पर विभिन्न स्थानों का चिन्हांकन कर कला संकुलों का निर्माण किये जाने की योजना है।

भाग– छः

महिला नीति

संस्कृति संचालनालय द्वारा महिलाओं की समस्याओं के निराकरण हेतु एक समिति का गठन किया गया है, जिसमें महिला सदस्य तथा नोडल अधिकारी को संचालनालय से ही मनोनीत किया गया है। समय–समय पर महिला उत्पीड़न प्रकोष्ठ की नोडल अधिकारी द्वारा बैठक आहूत की जाती है, जिसमें सभी महिला सदस्यों से उनकी समस्याओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती हैं। संस्कृति संचालनालय द्वारा महिलाओं के उन्नयन के लिये ऐसे वातावरण व स्थितियों का निर्माण किया गया है, जिससे महिलाएं अपने कार्यक्षेत्र में पुरुषों के समान ही सक्रिय सहभागी हैं।

jk"Vªh; rkulu lEeku vydj.k lekjksg] Xokfy;j

Hkkjr Hkou 41oh o"kZxkB lekjksg] Hkksiky

vrjk"Vªh; jkeyhyk mRlo] Hkksiky

ihj ijkbZ tk.k j--- Hktu l/;k] Hkksiky

vktknh dk ver egkRlo vrxr gj ?kj frjxk vfHk;ku

'kk; Lekjd 6oh o"kxkB lekjkg volj ij fefyVh c.M

,d jke jghe--- Hktuktfy & i[;kr xk;d /ko 'kek&Lo.kJh

tu;k)k jk"Vh; ukV; lekjkg

स्वराज संस्थान संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

भाग – एक

स्वराज संस्थान संचालनालय की स्थापना वर्ष 1998 में की गयी। इस संचालनालय के मुख्य कार्य स्वाधीनता संघर्ष से लेकर स्वराज तक की बहुविध प्रश्नों पर केन्द्रित उच्च स्तरीय गतिविधियों का संचालन, स्वाधीनता संघर्ष के स्मृति चिन्हों को एकत्र कर प्रदर्शित करना, भारत और दुनिया भर में हुए स्वाधीनता संघर्ष पर केन्द्रित फिल्मों, समाचार–पत्रों, पुस्तकों, चित्रों और अन्य माध्यमों की रचनाओं का संग्रह, निर्माण, प्रदर्शन, अध्ययन, शोध, व्याख्यान एवं गोष्ठियाँ आदि कार्यक्रमों का आयोजन का प्रवर्तन संचालन, राज्य स्तरीय डॉ. शंकरदयाल शर्मा स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय एवं पुस्तकालय का संचालन, स्वाधीनता संग्राम–स्वराज को समर्पित सामुदायिक रेडियो केन्द्र आज़ाद हिन्द का संचालन, भारतीय सेना के शहीदों की स्मृति एवं सम्मान में स्थापित शौर्य स्मारक की शौर्यवीथी का संचालन, शहीदों की स्मृति में शहीद स्तम्भ तथा स्मारकों की स्थापना, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों/शहीदों को समर्पित शताब्दी/जयन्ती आयोजन करना है।

स्वराज संस्थान संचालनालय का अमला
विभागीय स्वीकृत सेटअप का विवरण

स.क्र.	पदनाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त पद
1.	आयुक्त/संचालक भारतीय प्रशासनिक सेवा	1	1	–
2.	प्रथम श्रेणी	1	1	–
3.	द्वितीय श्रेणी	3	1	2
4.	तृतीय श्रेणी	9	3	6
5.	चतुर्थ श्रेणी	3	–	3
	कुल योग	**17**	**6**	**11**

स्वराज संस्थान संचालनालय अंतर्गत वर्ष 2022–23 में प्रथम श्रेणी में उप संचालक का पद प्रतिनियुक्ति से भरा, द्वितीय श्रेणी में सहायक संचालक एक पद संविदा नियुक्ति एवं तृतीय श्रेणी एक पद संविदा नियुक्ति से भरा गया।

भाग–दो

बजट प्रावधान

वर्ष 2020–21 (राशि रुपये लाखों में)

क्र.	योजना का नाम	प्रावधान	आवंटन	व्यय
	मांग संख्या 26–लेखाशीर्ष 2205 (राजस्व मद)			
1	8458– स्वराज भवन	221.29	195.58	154.66
2	7714– राष्ट्रीय सम्मान	15.00	12.00	0.009
3	5533– रेडियो आज़ाद हिन्द	75.00	60.00	60.99
4	5690– धर्मपाल शोधपीठ	40.00	32.00	40.00
5	5705– महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ	50.00	40.00	50.00
6	6756– शहीद भवन	68.00	54.40	59.70
7	7373– स्वाधीनता सेनानियों/महापुरुषों की जयंती/पुण्यतिथि समारोह	100.00	80.00	81.72
8	7649– डॉ. शंकरदयाल शर्मा राज्य संग्रहालय एवं वाचनालय	12.51	10.008	01.14
9	7876– स्वाधीनता संग्राम संबंधी गतिविधियों का संकलन, दस्तावेजीकरण, प्रदर्शन	100.02	80.016	77.34
10	8001– वीर भारत योजना	00.01	00.008	–
11	9061– शौर्य स्मारक	45.00	36.00	37.93
	योग (राजस्व व्यय)	**726.83**	**600.01**	**563.48**
	मांग संख्या 26–लेखाशीर्ष 4202 (पूंजीगत मद)			
12	8001– वीर भारत योजना	00.01	00.008	–
13	9052– शहीदों की स्मृति में स्मारक निर्माण	25.00	20.00	17.41
14	9061– शौर्य स्मारक	70.00	56.00	67.20
15	7011– भीमानायक प्रेरणा केन्द्र	00.01	00.008	–
	योग (पूंजीगत परिव्यय)	**95.02**	**76.01**	**84.61**
	महायोग (राजस्व व्यय + पूंजीगत परिव्यय)	**821.85**	**676.02**	**648.09**

बजट प्रावधान
वर्ष 2021–22

(राशि रुपये लाखों में)

क्र.	योजना का नाम	प्रावधान	आवंटन	व्यय
	मांग संख्या 26–लेखाशीर्ष 2205 (राजस्व मद)			
1	8458– स्वराज भवन	250.00	220.75	163.47
2	7714– राष्ट्रीय सम्मान	15.00	12.00	00.56
3	9061– शौर्य स्मारक	85.00	68.00	43.21
4	5533– रेडियो आज़ाद हिन्द	75.00	60.00	51.55
5	5690– धर्मपाल शोधपीठ	200.00	160.00	200.00
6	5705– महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ	200.00	160.00	200.00
7	6756– शहीद भवन	90.00	72.00	57.39
8	7373– स्वाधीनता सेनानियों/महापुरुषों की जयंती/पुण्यतिथि समारोह	200.00	160.00	164.15
9	7649– डॉ. शंकरदयाल शर्मा राज्य संग्रहालय एवं वाचनालय	20.01	16.001	00.98
10	7876– स्वाधीनता संग्राम संबंधी गतिविधियों का संकलन, दस्तावेजीकरण, प्रदर्शन	100.02	80.016	53.59
11	8001– वीर भारत योजना	00.01	00.008	–
	योग (राजस्व व्यय)	**1235.04**	**1008.78**	**934.90**
	मांग संख्या 26–लेखाशीर्ष 4202 (पूंजीगत मद)			
12	8001– वीर भारत योजना	00.01	00.01	–
13	9052– शहीदों की स्मृति में स्मारक निर्माण	50.00	50.00	50.00
14	9061– शौर्य स्मारक	50.00	50.00	26.45
15	7011– भीमानायक प्रेरणा केन्द्र	00.01	00.01	–
	योग (पूंजीगत परिव्यय)	**100.02**	**100.02**	**76.45**
	महायोग (राजस्व व्यय + पूंजीगत परिव्यय)	**1335.06**	**1108.80**	**1011.35**

बजट प्रावधान
वर्ष 2022–23

(राशि रुपये लाखों में)

क्र.	योजना का नाम	स्वीकृत प्रावधान	व्यय (31 जनवरी 2023 की स्थिति)
	मांग संख्या 26–लेखाशीर्ष 2205 (राजस्व मद)		
1	8458– स्वराज भवन	304.00	125.97
2	7714– राष्ट्रीय सम्मान	15.00	0.28
3	9061– शौर्य स्मारक	60.00	38.59
4	5533– रेडियो आज़ाद हिन्द	55.00	37.04
5	5690– धर्मपाल शोधपीठ	500.00	320.00
6	5705– महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ	1000.00	640.00
7	6756– शहीद भवन	70.00	32.45
8	7373– स्वाधीनता सेनानियों/महापुरुषों की जयंती/पुण्यतिथि समारोह	150.00	112.72
9	7649– डॉ. शंकरदयाल शर्मा राज्य संग्रहालय एवं वाचनालय	21.01	00.90
10	7876– स्वाधीनता संग्राम संबंधी गतिविधियों का संकलन, दस्तावेजीकरण, प्रदर्शन	110.02	15.30
11	8001– वीर भारत योजना	00.01	–
	योग (राजस्व व्यय)	**2285.04**	**1323.25**
	मांग संख्या 26–लेखाशीर्ष 4202 (पूंजीगत मद)		
12	8001– वीर भारत योजना	00.01	–
13	9052– शहीदों की स्मृति में स्मारक निर्माण	50.00	40.00
14	9061– शौर्य स्मारक	100.00	–
15	7011– भीमानायक प्रेरणा केन्द्र	00.01	–
	योग (पूंजीगत परिव्यय)	**150.02**	**40.00**
	महायोग (राजस्व व्यय + पूंजीगत परिव्यय)	**2435.06**	**1363.25**

भाग–तीन

राज्य योजनाएँ

स्वाधीनता संघर्ष से लेकर स्वराज तक के बहुविध प्रश्नों पर केन्द्रित उच्च स्तरीय गतिविधियों के केन्द्र के रूप में स्थापित स्वराज संस्थान संचालनालय अपने उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में सक्रिय है। अपनी स्थापना से लेकर अब तक स्वराज संस्थान द्वारा स्वाधीनता संग्राम में मध्यप्रदेश के योगदान पर केन्द्रित अनेक फिल्मों, रेडियो कार्यक्रमों का निर्माण, आज़ादी के दुर्लभ यादगार तरानों को संकलित कर संगीतबद्ध कराने के अलावा विविध जिलों में आज़ादी की लड़ाई में मध्यप्रदेश के योगदान को लेकर डाक्यूमेंटेशन और पुस्तकों के प्रकाशन के अलावा लोकप्रिय प्रदर्शनी, परिसंवाद, संगोष्ठी, व्याख्यान, चर्चा, कार्यशाला, नाट्य समारोह आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ के 75 सप्ताह पूर्व से ही भारत के गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक उपलब्धियों को स्मरण करने के उद्देश्य से आजादी का अमृत महोत्सव की गतिविधियां आरंभ कर स्वतंत्रता दिवस 2023 तक समारोहपूर्वक मनाये जाने के निर्णय के अनुक्रम में मध्यप्रदेश में भी माननीय मुख्यमंत्रीजी श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा **आजादी का अमृत महोत्सव** का शुभारम्भ करते हुए मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थलों पर कार्यक्रम/गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं।

मध्यप्रदेश में **आजादी का अमृत महोत्सव** अंतर्गत प्रदेश के सभी विभागों द्वारा जिला, तहसील एवं ग्रामीण स्तर पर **"हर घर तिरंगा"** अभियान का क्रियान्वयन किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य देशवासियों को अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज लगाने के लिए प्रेरित करना तथा जनसामान्य में देशभक्ति की भावना जागृत करना था। **"हर घर तिरंगा"** अभियान में प्रदेश के विद्यालयीन/महाविद्यालयीन छात्र–छात्रा, युवा, बच्चों एवं जनसामान्य ने बढ़–चढ़कर आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शौर्य स्मारक, भोपाल

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में भारतीय सेना के शहीदों की स्मृति एवं सम्मान में वर्ष 2016 में स्थापित शौर्य स्मारक की शौर्यवीथी में भारतीय सेना, वायुसेना एवं नौसेना से सम्बन्धित संक्षिप्त ऐतिहासिक जानकारी, चित्र, अस्त्र–शस्त्रों के छायाचित्र, टेबलटॉप/स्केल मॉडल, विभिन्न शौर्य पदकों के विवरणों का प्रदर्शन, शौर्य से सम्बन्धित प्रकाशनों का विक्रय, लघु फिल्मों के प्रदर्शन के माध्यम से भारतीय सेना की शौर्य गाथाओं से जनसामान्य को अवगत कराया जा रहा है।

इस वित्तीय वर्ष में (31 जनवरी, 2023 तक) लगभग एक लाख युवाओं, छात्र–छात्राओं, गणमान्य नागरिकों, पर्यटकों एवं जनसामान्य द्वारा शौर्य स्मारक का अवलोकन कर सराहना की गई।

स्वराज संस्थान संचालनालय एवं केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल इकाई भेल, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में 27 मई, 2022 को शौर्य स्मारक स्थित शौर्य स्तंभ परिसर में **"योग अमृत महोत्सव"** का

आयोजन किया गया। 14 अक्टूबर, 2022 को **शौर्य स्मारक 6वाँ वर्षगांठ समारोह** अवसर पर ज़ॉज, ब्रास एवं पाइप बैण्ड की संगीतमयी जुगलबंदी मिलिट्री बैण्ड की प्रस्तुति दी गई।

फिल्म डिवीजन एवं अन्य माध्यमों से प्राप्त सेना के शूरवीरों पर केन्द्रित दुर्लभ शौर्य फिल्मों के प्रतिदिन (अवकाश छोड़कर) प्रदर्शन के साथ ही मध्यप्रदेश के सैन्य शहीदों के बलिदान दिवस पर शौर्य स्तंभ पर पुण्य स्मरण स्वरूप पुष्पांजलि अर्पित की गई।

एकै राम रहीम...

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती अवसर पर 2 अक्टूबर, 2022 को **एकै राम रहीम... भजनांजलि** अंतर्गत प्रख्यात गायक ध्रुव शर्मा–स्वर्णश्री, वृंदावन द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई।

जनयोद्धा नाट्य समारोह

10 से 16 जनवरी, 2023 की तिथियों में शहीद भवन, भोपाल में आयोजित **"जनयोद्धा"** राष्ट्रीय नाट्य समारोह अंतर्गत रांची, वाराणसी, नई दिल्ली, पुणे, कटनी एवं भोपाल के प्रतिष्ठित रंग–निर्देशकों के निर्देशन में सात नाटक प्रदर्शित हुए।

पीर पराई जाणे रे...

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि अवसर पर **पीर पराई जाणे रे...** भक्ति संगीत सभा अंतर्गत 30 जनवरी, 2023 को भोपाल में प्रख्यात गायक **पद्मश्री भारती बंधु** द्वारा गांधीजी के प्रिय भजनों, कबीर एवं सूफी गायन की प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम/प्रदर्शनी

"आजादी का अमृत महोत्सव" अंतर्गत **विश्व धरोहर दिवस** अवसर पर 18 अप्रैल, 2022 को भोपाल में केन्द्रीय राज्यमंत्री विदेश मामले एवं संस्कृति सुश्री मीनाक्षी लेखी के मुख्य आतिथ्य में परिसंवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। **अमर शहीद तात्या टोपे के बलिदान दिवस** पर 18–19 अप्रैल को शिवपुरी में **तात्या टोपे शहीद मेला** अंतर्गत देशभक्ति गीत, आज़ादी के तराने एवं मध्यप्रदेश के क्रांतिकारी चित्र प्रदर्शनी का प्रदर्शन किया गया। 21 अप्रैल, 2022 को डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, महू में **अम्बेडकर कथा** का आयोजन किया गया।

1857 मुक्ति संग्राम दिवस अवसर पर 10 से 12 मई, 2022 की तिथियों में भोपाल में **जनयोद्धा नाट्य समारोह** अंतर्गत तात्या टोपे, वीरांगना झलकारी एवं बुंदेलखण्ड विद्रोह 1842 आदि नाटकों का मंचन किया गया। इसी अवसर पर **1857 स्वातंत्र्य समर** तथा **क्रांतिकारी शहीदों के चित्र एवं दुर्लभ दस्तावेजों** पर केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी का प्रदर्शन भी किया गया।

भारतीय सैनिकों के सम्मान में 19 मई 2022 को प्रसिद्ध नृत्यांगना सुश्री लता मुंशी के निर्देशन में **"जयति जयति भारतमाता"** नृत्यनाटिका एवं 26 मई, 2022 को होराइजन श्रृंखला अंतर्गत बधाई लोकनृत्य एवं गजल की प्रस्तुति दी गई।

वीरांगना रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर 24 जून, 2022 को रानी दुर्गावती के समाधि स्थल, जबलपुर में वीरांगना रानी दुर्गावती के जीवनवृत्त पर आधारित "रानी दुर्गावती" चित्र प्रदर्शनी, **अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के बलिदान दिवस** पर 23 जुलाई, 2022 को चन्द्रशेखर आजाद

नगर जिला अलीराजपुर में **आजाद मेला** अंतर्गत देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति एवं "आजाद चित्रकथा" चित्र प्रदर्शनी आयोजित। इसी अवसर पर शहीद भवन, भोपाल में देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति भी दी गई।

भारत छोड़ो आंदोलन दिवस अवसर पर 9 अगस्त, 2022 को भोपाल में देशभक्ति से ओतप्रोत लोकगायन की सांगीतिक प्रस्तुति, **आजादी की 75वीं वर्षगांठ** अवसर पर 15 अगस्त, 2022 को रवीन्द्र सभागम, भोपाल में **आजादी का महापर्व** में शान एवं साथी कलाकार मुम्बई द्वारा देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी गई। इसी अवसर पर **जरा याद करो कुर्बानी** एवं **भारतीय ऋषि वैज्ञानिक** चित्र प्रदर्शनी के साथ ही महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, भोपाल द्वारा भारतवर्ष की अक्षय कीर्ति गाथा पर केन्द्रित लघु फिल्म **भारत विक्रम** का लोकार्पण तथा धर्मपाल शोधपीठ, भोपाल द्वारा श्री धर्मपालजी की पुस्तक **Rediscovering India** का विमोचन किया गया।

अमर शहीद राजा शंकर शाह–कुंवर रघुनाथ शाह के बलिदान दिवस पर 18 सितम्बर, 2022 को शहीद स्मारक परिसर, जबलपुर में शहीद मेला आयोजित किया गया। इसी अवसर पर **मध्यप्रदेश के क्रांतिकारियों** पर केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी **जरा याद करो कुर्बानी** का प्रदर्शन भी किया गया। 9 अक्टूबर, 2022 को शहीदों की स्मृति में ग्राम टुरिया तहसील कुरई जिला सिवनी में जिला प्रशासन के सहयोग से शहीद मेले का आयोजन किया गया।

जनजातीय नायक बिरसा मुण्डा जयंती अवसर पर 15 नवम्बर, 2022 को शहीद भवन, भोपाल में **बिरसा मुण्डा नाटक** का मंचन एवं ग्राम डगडौआ (जिला–उमरिया) में जिला प्रशासन के सहयोग से **शहीद मेले** का आयोजन किया गया।

जननायक टंट्या भील की स्मृति में 4 दिसम्बर, 2022 को पातालपानी (जिला–इंदौर) तथा ग्राम बड़ौदा अहीर तहसील पंधाना (जिला–खण्डवा) में जिला प्रशासन के सहयोग से **शहीद मेला** अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम, 21 से 23 दिसम्बर, 2022 की तिथियों में रवीन्द्र भवन, सागर में **जनयोद्धा नाट्य समारोह** आयोजित किया गया।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती अवसर पर 23 जनवरी, 2023 को "आई एम सुभाष" नाटक का भोपाल में मंचन किया गया।

राष्ट्रीय सम्मान

मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्वाधीनता संग्राम के आदर्शों, राष्ट्रभक्ति और समाजसेवा के क्षेत्र में रचनात्मक अवदान, सृजनात्मकता एवं विशिष्ट उपलब्धियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से **अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद राष्ट्रीय सम्मान** (राशि रुपये 2.00 लाख), सामाजिक सद्भाव एवं सामाजिक समरसता के लिए श्रेष्ठतम उपलब्धियों व योगदान के लिए सम्मानित करने के उद्देश्य से **महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय सम्मान** (राशि रुपये 2.00 लाख), शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठतम उपलब्धियों व योगदान के लिए शिक्षकों को सम्मानित करने के उद्देश्य से **महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय सम्मान** (राशि रुपये 2.00 लाख), देश की सुरक्षा, कर्तव्य हेतु बलिदान, अदम्य साहस, वीरता, नारी उत्थान, सामाजिक पुनर्जागरण एवं श्रेष्ठतम उपलब्धियों व योगदान के लिए महिला को सम्मानित करने के उद्देश्य से **वीरांगना लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय सम्मान** (राशि रुपये 2.00 लाख) स्थापित किये गये हैं।

राष्ट्रीय सम्मान के लिए प्राप्त प्रस्तावों पर विचार के लिए बैठक की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

स्वाधीनता फेलोशिप

प्रदेश के जिला मुख्यालयों में हुए स्वतंत्रता संग्राम के विविध, घटनाओं, व्यक्तियों और प्रवृत्तियों पर तथ्यपूर्ण प्रामाणिक शोधकार्य हेतु स्थापित **स्वाधीनता फेलोशिप** अंतर्गत शोधकार्यों के संपादित अंशों को पुस्तक रूप में तथा डिजिटल रूप में प्रकाशित करने के अनुक्रम में अब तक 30 शोधग्रंथों का संपादन किया जा चुका है। 12 जिलों का शोधकार्य संपादन हेतु प्रचलित है एवं 10 जिलों के शोधकार्य परीक्षणाधीन हैं।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, भोपाल/उज्जैन

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा 25 मार्च से 2 अप्रैल, 2022 की तिथियों में उज्जैन में आयोजित भारत उत्कर्ष एवं नवजागरण पर एकाग्र समागम **विक्रमोत्सव 2022** (विक्रम सम्वत् 2078–79) में नाट्य प्रस्तुतियाँ, कवि सम्मेलन, मुंतशिरनामा, बहुलोकप्रिय सांगीतिक प्रस्तुति, कला प्रदर्शनियाँ तथा शोधपूर्ण पुस्तकें भी लोकार्पित हुईं।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ एवं एलएनसीटी यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म एण्ड मास कम्युनिकेशन के संयुक्त सहयोग से 22–23 अप्रैल, 2022 को भारतीय संचार–प्राचीन से अर्वाचीन विषय पर राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी की गई।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ एवं विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन तथा इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली (मालवापरांत), मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल के सहयोग से 19 से 21 जून 2022 की तिथियों में उज्जैन तथा डोंगला वेधशाला केन्द्र पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ एवं महर्षि पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग द्वारा महान वास्तुशास्त्री राजा भोज की स्मृति में 8 से 10 अक्टूबर, 2022 की तिथियों में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी।

आजादी के अमृत महोत्सव अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा 28 से 30 नवम्बर 2022 की तिथियों में विक्रम कीर्ति मंदिर, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में वास्तु शास्त्रीय नगर नियोजन एवं राजा भोज विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें अमेरिका, नेपाल, म्यांमार समेत देश–प्रदेश (महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, जम्मू–कश्मीर, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश के भोपाल, इंदौर, उज्जैन, दतिया, रायसेन) के सुपरिचित विद्वानों ने अपना शोधपत्र वाचन किया।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ एवं सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी के सहयोग से 19 से 21 दिसम्बर 2022 को भारतीय ज्ञान परम्परा का वैश्विक योगदान विषय पर रवीन्द्र भवन, भोपाल में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। मनोज मुंतशिर की प्रस्तुति एवं संगोष्ठी में विविध क्षेत्रों से पधारे हुए विद्वानों द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा का वैश्विक योगदान विषय पर ज्ञात–अज्ञात जानकारी पर विशेष चर्चा की गयी।

शोधपीठ द्वारा शोधपरक पुस्तक प्रकाशन अंतर्गत संवत् प्रवर्तक–विक्रमादित्य, वेताल पच्चीसी, मालवा की जनपदीय मुद्राएँ, वैदिक साइंस : हिस्टोरिक ग्लोरी ऑफ इंडिया, विश्व के प्रथम ज्ञात गणितज्ञ महात्मा लगध एवं विक्रम संवत ग्रंथ, हिन्दी/अंग्रेजी/मराठी Einstein's Unification Theory Akin to Phonon, Vedic Scientific Heritage of India, मालवा के महानायक, विक्रमकालीन वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, (वराहमिहिर के विशेष संदर्भ में) इत्यादि पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।

इसके अलावा उज्जयिनी कॉफी टेबल बुक, विद्योत्तमा, वराहमिहिर, विक्रमादित्य और नवरत्न की परम्परा, कालकाचार्य की परम्परा, जनश्रुतियों के आधार पर तत्कालीन समाज का स्वरूप, विक्रमादित्य महानाट्य, हरसिद्धि नाटक, विक्रमादित्य और अयोध्या, संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य आदि पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा भारतीय ऋषि वैज्ञानिक, विक्रमादित्य के नवरत्न, विक्रमकालीन मुद्रा एवं मुद्रांक तथा विक्रमादित्य की प्रदर्शनी को समय–समय पर देश–प्रदेश में सांस्कृतिक, वैचारिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों में प्रदर्शित किया गया।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा सीनियर एवं जूनियर फेलोशिप वर्ष 2022–23 अंतर्गत शोधकार्य प्रक्रियाधीन है।

धर्मपाल शोधपीठ, भोपाल

राज्य शासन द्वारा आज़ादी के पूर्व तथा आज़ादी के बाद भारत की संस्कृति, परम्पराओं, जीवन पद्धतियों के संरक्षण संवर्धन, स्वाधीनता संग्राम के आदर्शों तथा स्वराज के जीवन एवं बहुआयामी इतिहास के अध्ययन, अनुशीलन, शोध, प्रशिक्षण, व्याख्यान, गोष्ठी, सेमिनार तथा विविध कार्यक्रमों के आयोजन, दुर्लभ, प्रामाणिक, ऐतिहासिक तथा अन्य पत्र–पत्रिकाओं–पुस्तकों का संग्रह एवं प्रकाशन, आडियो–वीडियो कार्यक्रमों, शोध एवं प्रशिक्षणों के लिए स्थापित **धर्मपाल शोधपीठ** द्वारा **आज़ादी का अमृत महोत्सव** अंतर्गत महान चिंतक, विचारक, **धर्मपालजी की जन्म शताब्दी वर्ष** के उपलक्ष्य में 19 एवं 20 अक्टूबर, 2022 को रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय **"धर्मपाल : स्वदेशी और स्वराज अवधारणा"** विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

श्री धर्मपालजी की पुस्तक **Rediscovering India** का पुनर्प्रकाशन एवं **गांधीजी के बाद विश्व में गांधीवाद** पुस्तक प्रकाशित। **मध्यप्रदेश में जल परम्परा : गौरवशाली इतिहास की झांकी**, **सामाजिक, आर्थिक विकास और कला–संस्कृति का पारस्परिक संबंध, भारत की सीमाएँ : प्राचीन संदर्भ, मध्यकाल में महाकौशल के शिलालेख, गौंड राजवंशों की स्थापत्य कला** एवं **गांधीजी का शिक्षा दर्शन : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता** आदि पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। साथ ही **धर्मपाल सीनियर एवं जूनियर फैलोशिप वर्ष 2022–23** का विज्ञापन प्रकाशित कर प्रस्ताव आमंत्रण प्रक्रियाधीन है।

शहीद भवन, भोपाल

स्वाधीनता संग्राम, स्वराज पर केन्द्रित विभिन्न आयोजनों को जनोन्मुखी बनाने के उद्देश्य से शहीद भवन सभागार को विभिन्न कार्यक्रम/गतिविधियों के लिए जनसामान्य को उपलब्ध कराया जा रहा है।

डॉ. शंकरदयाल शर्मा संग्रहालय एवं वाचनालय, भोपाल

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा अपने संग्रह में उपलब्ध दुर्लभ दस्तावेज/स्मृति चिन्ह और भेंट की गई सामग्री को डॉ. शंकरदयाल शर्मा स्वतंत्रता संग्राम राज्य संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है एवं पुस्तकों को लायब्रेरी में संग्रहीत कर विकासशील समाज के अध्ययन, अनुसंधान के लिए अवलोकित करायी जा रही हैं।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी डॉ. शंकरदयाल शर्माजी की जयंती अवसर पर 19 अगस्त को पुष्पांजलि एवं 26 दिसम्बर को पुण्यतिथि पर प्रतिमा स्थल, रेतघाट, भोपाल में स्थानीय जिला प्रशासन के सहयोग से भजनांजलि कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

रेडियो आज़ाद हिन्द 90.8 मेगा हर्ट्ज़, भोपाल

स्वाधीनता संग्राम–स्वराज को पूर्ण रूप से समर्पित देश के पहले सामुदायिक रेडियो केन्द्र **रेडियो आज़ाद हिन्द 90.8 मेगा हर्ट्ज** के माध्यम से स्वाधीनता संग्राम के विविध पहलुओं, ज्ञात–अज्ञात पक्षों, तथा जनजाति अनुसूचित जाति की भागीदारी एवं चेतना, परम्पराओं, बलिदान, विचार, साहित्य के साथ–साथ कला, संस्कृति, लोक परम्परा, पुरातत्व तथा राज्य शासन द्वारा प्रवर्तित जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लोक समाज को दी जा रही है।

रेडियो आज़ाद हिन्द के माध्यम से प्रतिदिन 15 घण्टे आन एयर तथा ऑनलाईन प्रसारण किया जा रहा है जिसमें अक्षयनिधि में ऋग्वेद से वाचन, जीवन सौरभ, भक्ति संगीत, सुनहरी यादें, रणबाँकुरों की आत्मकथाएँ, आदि विद्रोही, बाल सभा, आज़ाद हिन्द, परिक्रमा, वतन का राग, आज़ादी क्विज शो, विज्ञान चर्चा, आमने–सामने, वागर्थ, हिन्दोस्तां हमारा, वंदेमातरम्, देशभक्ति गीत, भारतीय सिनेमा का सफर, ऋषि वैज्ञानिक, मध्यप्रदेश की धरोहर, भक्ति संगीत, सुर–सागर, छू लो आसमां, शब्दों के शिल्पकार, जिज्ञासा आपकी समाधान विज्ञान के तथा रेडियो रिपोर्ट एवं देशभक्ति गीत आदि कार्यक्रमों का प्रसारण तथा पोडकास्टिंग की जा रही है।

"आजादी का अमृत महोत्सव" अंतर्गत रेडियो आजाद हिन्द के माध्यम से देश–प्रदेश के ज्ञात–अल्पज्ञात क्रांतिकारियों, शहीदों, रणबांकुरों, वीरांगनाओं, जननायकों की शौर्य गाथाओं, आजादी के दुर्लभ तरानों एवं लोकप्रिय जनहितैषी कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश के आकाशवाणी एवं दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ, भोपाल, इंदौर एवं जबलपुर के विविध भारती केन्द्रों से प्रसारित **वतन का राग** रेडियो कार्यक्रम अंतर्गत प्रति सप्ताह स्वाधीनता संग्राम पर केन्द्रित आजादी का अमृत महोत्सव प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को ऑडियो एलबम एवं रणबॉकुरों के चित्र पुरस्कार स्वरूप भेंट किये जाते हैं।

भाग – चार

सामान्य प्रशासनिक विषय

राज्य शासन द्वारा समय–समय पर प्रसारित दिशा–निर्देशों के अंतर्गत समस्त प्रशासनिक कार्य संपादित किये जाते हैं। स्वराज संस्थान संचालनालय में किसी भी कर्मचारी के विरुद्ध विभागीय जांच, पेंशन एवं न्यायालयीन प्रकरण लंबित नहीं है। संचालनालय के अंतर्गत वर्तमान में कोई अधीनस्थ कार्यालय नहीं होने से स्थानांतरण से सम्बन्धित कोई प्रकरण नहीं है। न्यायालयीन प्रकरणों के अंतर्गत फिल्म निर्माण से सम्बन्धित एक प्रकरण उच्च न्यायालय में अपील के लिए विचाराधीन है। जनशिकायत के निपटारे सम्बन्धी कोई प्रकरण लंबित नहीं। प्रशासकीय विभाग द्वारा प्रेषित संसदीय कार्य/विधानसभा सम्बन्धी कार्यों एवं ध्यानाकर्षण इत्यादि की जानकारी यथा समय नियमित रूप से प्रेषित की गयी। संचालनालय से सम्बन्धित कोई संसद प्रश्न तथा ध्यानाकर्षण नहीं हैं।

भाग–पाँच

अभिनव योजना

आज़ादी का अमृत महोत्सव अंतर्गत सनातन भारत के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति एवं आधुनिक भारत के विकास से देश को परिचित कराने के उद्देश्य से प्रदेश के ज्ञात–अल्पज्ञात क्रांतिकारियों, शहीदों, रणबाँकुरों, वीरांगनाओं तथा जननायकों की स्मृति में विविध कार्यक्रम/गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं।

मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, रणबांकुरों की स्मृति को संजोये रखने के लिए **जननायक टंट्या भील** (पातालपानी–इंदौर एवं बड़ौदा अहीर–खण्डवा)**, बिरसा मुण्डा (डगडौआ–उमरिया), रानी दुर्गावती** एवं **राजा शंकरशाह–रघुनाथशाह** (मण्डला), **राजा सरयु प्रसाद** (विजयराघवगढ–कटनी), **अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद** (भाभरा–अलिराजपुर), **रानी अवंतिबाई** (बालपुर–डिण्डौरी) **एवं टुरिया जंगल सत्याग्रह** (सिवनी) मेलों के आयोजन के साथ **आज़ादी का अमृत महोत्सव** अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम, व्याख्यान, संगोष्ठी, फिल्म प्रदर्शन एवं चित्र प्रदर्शनी आयोजित किये जाने का लक्ष्य रखा गया है।

भाग – छः

विभागीय प्रकाशन

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा **स्वराज पुस्तक मालांतर्गत** स्वाधीनता संघर्ष एवं सम्बन्धित विषयों पर अब तक लगभग 70 पुस्तकें तथा **अक्षयनिधि प्रकाशन** योजनांतर्गत लगभग 8 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है।

भाग–सात

महिला नीति

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा महिलाओं की समस्या के निराकरण हेतु गठित समिति द्वारा समय–समय पर संचालनालय में कार्यरत महिला कर्मचारियों से उनकी समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर कार्यक्षेत्र में सक्रिय सहभागिता के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

महिलाओं के लिए किये गये कार्य :– स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी को रेखांकित करने के उद्देश्य से देवी चौधरानी, महारानी तपस्विनी, भीमाबाई होल्कर, रानी अवंतीबाई, अज़ीज़नबाई, बेगम ज़ीनत महल, हज़रत महल, झलकारीबाई, कुमारी मैना, एनी बेसेंट, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, भगिनी निवेदिता, विद्या देवी, मीरा बेन आदि पर केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी **वीरांगना** एवं महारानी लक्ष्मीबाई पर केन्द्रित चित्रकथा प्रदर्शनी **ज़रा याद करो कुर्बानी** तथा वीरांगना रानी दुर्गावती के जीवनवृत्त पर आधारित चित्र प्रदर्शनी समय–समय पर प्रदर्शन।

इसी प्रकार संचालनालय द्वारा विभिन्न आयोजनों, रेडियो कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, चित्रांकन कार्यशालाओं इत्यादि में महिलाओं की विशेष रूप से भागीदारी सुनिश्चित कर महिला सशक्तिकरण पर केन्द्रित विशेष साप्ताहिक रेडियो कार्यक्रम **"छू लो आसमाँ"** अंतर्गत राजनीति, विज्ञान, समाजसेवा, खेल, प्रबन्धन, चिकित्सा, शिक्षा आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली देश की प्रमुख महिलाओं के जीवन एवं उनकी सफलता पर आधारित रेडियो कार्यक्रम का निर्माण कर प्रसारण भी किया जा रहा है।

iokl h Hkkjrh; lEeyu] bnkj e ^^,dkRe /kke** iLrd ykdki.k

ek- e[;e=h Jkh f'kojkt flg pkgku] ek- dUnh; fon'k e=h Jkh ,l- t;'kdj]
ie[k lfpo lLdfr Jkh f'ko'k[kj 'kDyk ,o lpkyd lLdfr Jkh vfnfr dekj f=ikBh

Lok/khurk io

ek- e=h] lLdfr] i;Vu] /kkfed U;kl ,o /keLo lJkh m"kk Bkdj
i[;kr xk;d Jkh 'kkru e[kth ¼'kku½ dk lEekfur djr g,

JURRERATI

साहित्य अकादमी,
अर्द्धांग
स्त्री विमर्श का भारतीय प्रतिमान